अनुराग प्रकाशन
महरौली, नई दिल्ली-110030

भुट्टो की कानूनी हत्या

भूमिका : पीलू मोदी
हरिप्रकाश त्यागी

मूल्य : बारह रुपये
प्रथम संस्करण : 1979
आवरण : हरिप्रकाश त्यागी
प्रकाशक : अनुराग प्रकाशन
महरौली, नयी दिल्ली-110030
मुद्रक : शान प्रिन्टर्स, शाहदरा, दिल्ली-110032

BHUTTO KI KANOONI HATYA, By Hari Prakash Tyagi
Rs. 12/-

अनुक्रम

भूमिका

अपने बचपन के मित्र जुल्फीकार अली भुट्टो को लेकर मैं दो बार विकट स्थितियो से गुजरा हूँ जब मुझे पत्रकारों ने घेरा। पहली स्थिति भुट्टो के राष्ट्रपति पद पर आसीन होने के बाद और दूसरी स्थिति भुट्टो की मृत्यु के बाद पैदा हुई। दोनो ही बार स्थितियाँ इतनी नाजुक रही कि मैं पत्रकारों से कतराता रहा। वास्तव मे मैं राजनीति और मित्रता दोनो को अलग-अलग रखना चाहता था जबकि पत्रकार ऐसा मान कर नही चलते। दूसरी स्थिति मेरे सामने इतनी विकट रही कि मैं दो शब्द बोलने की या लिखने की स्थिति मे भी न रहा। यह असल एक साथ बहुत से दिन जो साथ गुजारे, वह आँखो मे कौंध गये।

पाकिस्तान के राष्ट्रपति पद प्राप्त करने के बाद भुट्टो के बारे मे जो भारतीय समाचारपत्रो मे छपता था, मैं उससे सहमत नही था। इसलिए मैंने भुट्टो के स्वभाव और उसके राजनीतिक दृष्टिकोण को साफ-साफ बताने के लिए पुस्तक लिखी। पत्रकार व मेरे साथी मुझसे पूछते रहे कि राष्ट्रपति पद प्राप्त करने के बाद भुट्टो को बधाई पत्र लिखा? वास्तव में मैंने बधाई पत्र नही भेजा था। मैं मानता रहा हूँ कि भुट्टो मेरी मनोभावनाओं को बहुत अच्छी तरह समझता था। मुझे ऐसा विश्वास भी था। दोस्ती का अर्थ वह पूर्ण समर्पण मानता था। फिर बधाई संदेश जैसी औपचारिकता का कोई औचित्य ही नही।

भुट्टो का पत्र मुझे मिला। भुट्टो ने लिखा, "मुझे बतलाने की आवश्यकता नही कि हमारी मित्रता बनी हुई है। चाहे कितना भी समय बीत जाये, उस समय के साथ चाहे कुछ भी क्यो न हो जाये, हमारे सम्बन्ध इतने गहरे हैं कि चाहे हम परस्पर कोई सम्पर्क रखें या न रखें मित्रता

पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। कई अवसरों पर मुझे स्कूल व विश्वविद्यालय के हँसी-खुशी के दिन याद आते हैं। अभी पिछले दिनों जब मैंने अपने राष्ट्र का शासन राष्ट्र की सबसे संकट पूर्ण परिस्थितियों में सम्भाला तो मेरी इच्छा थी कि मैं तुम्हे फोन करूं, लेकिन मैंने इस इच्छा को कठोरता से दबाया, क्योंकि मैं सोचता था कि, दोनों ही राष्ट्रों में संकीर्ण दिमाग वाले लोगों की कमी नहीं है। मुझे पूरी आशा है, हम लोग जल्दी ही मिलेंगे। मेरा विचार है कि घटनाएँ इस तरह से घट रही हैं कि हमारी भेंट सम्भव हो सकेगी। मैं समझता हूँ कि दोनो देशों के लोग नफरत और संदेह के रास्ते से लौटना चाहते हैं, और वे सहयोग व शान्ति के इच्छुक हैं। यह सोचकर तरस आता है, तरस ही नही, बल्कि दु:ख होता है कि हम लोगो ने कितने बहुमूल्य वर्ष यूँ ही गवां दिये और इस बीच पाकिस्तान और भारत के असहाय लोग दु:खों की चक्की मे लगातार पिसते रहे, उसी पत्र मे आगे लिखा—"व्यक्तिगत स्तर पर मेरे दोस्त, मैं तुम्हे आश्वासन देना चाहता हूँ, अपनी तरफ से बहुत दिनों मे जो गतिरोध है, उसे दूर करने मे कोई भी प्रयास उठाकर नहीं रखूंगा, स्वाभाविक है कि मैं तुमसे बातचीत करने के लिए जितना भी समय सम्भव होगा, निकालूंगा। लेकिन भारत-पाक सम्मेलन की विषय-सूची और काम इतना अधिक है कि मुझे सन्देह है कि बातचीत के लिए शान्त वातावरण मिल सकेगा, जिसमे हम लोग मिल-जुलकर बातें कर सकें, जो मेरे दिल और दिमाग मे हैं। क्या मैं एक विकल्प का सुझाव दे सकता हूँ? दिल्ली की बैठक के बाद तुम अपनी सुविधा के अनुसार बेगम बायना के साथ पाकिस्तान आओ और हम लोगों के साथ कुछ दिन रहो। इस तरह हम लोगो के परिवार एक बार फिर एक-दूसरे से मिल सकेंगे। मैं चाहता हूँ तुम मेरे बच्चो से मिलो। मेरी सबसे बड़ी लड़की रेड क्लिफ में है, गर्मियों की छुट्टियों में वह हमारे पास आ जाएगी। हम लोग दो-तीन दिन के लिए कश्मीर में किसी ऐसे हिल स्टेशन पर जा सकते हैं जहाँ पर तुम्हारी सेना ने कब्जा ना कर रखा हो हमारे यहाँ अब भी कुछ खूबसूरत स्थान हैं, लेकिन मैं इसकी चर्चा नही करूंगा क्योंकि इससे कहीं तुम्हारे विस्तारवाद की भूख और ना बढ़ जाये।

तुमसे मिलने की आशा में

शिमला पहुंचते ही भुट्टो ने मुझे याद किया शिखर सम्मेलन के दौरान भुट्टो की व्यस्तता के बावजूद हम लोग मिले।

सफलता और असफलता के बीच झूलते हुए अन्ततः शिमला शिखर सम्मेलन सफल रहा और जब लाहौर को समाचार दिया गया तो मैं भुट्टो की राजनैतिक दृष्टि से प्रभावित हुआ। वहाँ तीन अलग-अलग प्रबन्ध किये गये थे, चाहे शिखर सम्मेलन सफल हो या न हो। इसी आधार पर लाहौर से जो सीधी टेलीफोन लाइन शिमला दी गई थी, उसी पर सूचना दी गयी। प्लान 'बी' पर कार्य शुरू कर दिया जाये तथा प्लान 'बी' की तीसरी बात को अधिक महत्त्व दिया जाय। लाहौर में, जो व्यक्ति सुन रहा था, उसने राहत की साँस लेते हुए शायद कहा —"अल्लाह का शुक्र है, आखिर आपने फोन तो किया, हमने तो प्लान 'सी' पर कार्यवाही करने का प्रबन्ध कर लिया था।" इस तरह की कार्य-दक्षता हर प्रकार से प्रशंसा के योग्य है क्योंकि इससे दूरदर्शिता का परिचय मिलता है क्योंकि असफलता और सफलता की तीनों योजनाएँ भुट्टो ने पहले बना ली थी।

मैं उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व को समझता था। एक अड़ियल गुस्सैल व्यक्तित्व के तौर पर उसका सदैव भारत में प्रचार होता रहा, जो मुझे सदैव ही जरूरत से ज्यादा लगता रहा। पाकिस्तान के राष्ट्रीय हित उसके लिए सर्वोपरि थे। वह पड़ोसी राष्ट्रों से मित्रता तथा सहयोग का अभिलाषी रहा। राष्ट्र को आत्मनिर्भर बनाने की नीतियों पर दृढ़ रहा। भुट्टो के पाकिस्तान के शासन की बागडोर सम्भालने से पहले भारत और पाकिस्तान के सम्बन्ध एक-दूसरे के प्रति शत्रुतापूर्ण रवैये पर आधारित थे और यह विरोध दिन पर दिन कम होने के स्थान पर बढ़ते ही जाते थे। आज स्थिति बदल गयी है, यह सम्बन्ध आज फिर कोई भी रूप ले सकते हैं, क्योंकि स्थिति का अब भी बदतर होना सम्भव है, भुट्टो के समय में निश्चित रूप से कुछ सुधार हुआ था। चारों तरफ के तनाव को कम करने का श्रेय भुट्टो को ही जाता है।

जो भी हो, कम या अधिक भुट्टो ने लोकतान्त्रिक शासन पद्धति की ओर कदम बढ़ाया था। हो सकता था कि भुट्टो इस तरफ और भी कदम बढ़ाते, परन्तु पाकिस्तान के पिछले इतिहास को देखते हुए और आज

की स्थिति को देखते हुए लोकतन्त्र कई साल और पीछे ठेल दिया गया है। पाकिस्तान में विरोधी अभियान जब शिखर पर था तो भुट्टो दिन-रात विपक्षी नेताओं से मिलता रहता, ताकि कोई उपयुक्त हल निकाला जा सके और यह विवाद हमेशा के लिए खत्म हो जाये। भुट्टो को विपक्षी नेताओं से जब यह आश्वासन मिल गया कि वह नहीं चाहते कि भुट्टो राष्ट्रपति पद से हट जाये, वह तो इस बात में दिलचस्पी रखते हैं कि पाकिस्तान में एक मजबूत सरकार हो तथा जिसको जनता के प्रतिनिधियों का पूरा समर्थन मिलता हो। भुट्टो इस बात पर तत्काल सहमत हो गया। भुट्टो ने वचन दिया कि 23 मार्च, 1973 तक नया संविधान बनाया जायेगा और वह संसदीय कार्यव्यवस्था के अन्तर्गत सरकार स्थापित करेगा। भुट्टो ने अपना वचन निभाया और अगस्त 1973 में नया संविधान लागू कर दिया, उसके अन्तर्गत भुट्टो पाकिस्तान का प्रधानमन्त्री बन गया। एक ही कलम से उसने सारे विश्व को शांत कर दिया, शत्रुओं को अपना अनुयायी बना लिया तथा पाकिस्तान की अखंडता सुरक्षित कर दी। वह एक बहु आयामी व्यक्तित्व था, कुशल वक्ता, समझदार राजनीतिज्ञ—गरीबों का समर्थक और मेरा, मेरा दोस्त जुल्फी…

…जो अब नहीं है, जिसका कोई विकल्प भी नहीं है। कुछ यादें हैं विश्वविद्यालय के ऊँचे-ऊँचे पेड़ों के सायों में घूमना, कभी खत्म न होने वाली राजनैतिक चर्चाएँ, प्रत्येक प्रश्न को गम्भीरता से जानने की उसकी आँखों में चमकती ललक, मेरी नाराजगी और उसकी कर्त्तव्यनिष्ठा—हँसी-खुशी के मासूम दिन, छोटी-छोटी लड़ाइयाँ और छोटे-छोटे विरोधों से भरे दिन और…वे सुखमय दिन, समाप्त हो गये।…

बचपन में मेरे घर के फाटक पर आकर बुलाने के लिए सीटी बजाना …उन सीटियों की आवाज कभी-कभी मैं अपने कानों में आज भी सुन लेता हूँ।……

पीलू मोदी
11-5-79
नई दिल्ली।

कुछ प्रश्न

यह पुस्तक कोई राजनैतिक दस्तावेज या पाकिस्तान का राजनैतिक इतिहास नही है, ना ही वकालत के लिए प्रस्तुत किये गये कागजात है। यह एक सामान्य आदमी के मन मे तानाशाही के प्रति उठते हुए सन्देह और प्रगतिशील राष्ट्रो के विदेशी हस्तक्षेप पर एक सकेत मात्र है। प्रगतिशील राष्ट्रीय राजनीति मे अमरीकी धन का उपयोग उसके प्रभाव का लेखा-जोखा है। अमरीकी धन का उपयोग व अमरीकी स्वार्थों को पूरा करने के लिए कोई तानाशाही सरकार कितनी क्रूर, निर्दयी व न्यायपालिका को भी किस हद तक गिरा सकती है, उसकी रूपरेखा है।

वास्तव मे स्वयं अमेरिका तानाशाही शक्तियों के विरोध मे लड़ता-लड़ता आज तानाशाही को क्यो प्रश्रय देने लगा। तीसरी दुनिया मे, स्वतन्त्र अभिव्यक्ति, मानवाधिकार, स्वतन्त्रता और न्यायपालिका की मांग करते हुए, अमेरिका कैसे न्यायपालिका को एक नाटक मात्र बना देता है। राजनैतिक दलों व राष्ट्रीय नेताओं द्वारा जनता मे अपना विश्वास खो देने के बाद, अब न्यायपालिका को विश्वास का माध्यम क्यो बनाया जा रहा है, व भविष्य मे न्यायपालिका की स्थिति भी क्या विश्वसनीय रह पाएगी। मानवाधिकारो की बाहृ अमेरिका और एमिनेस्टो तीसरी दुनिया के राष्ट्रो मे ही क्यो नही करते हैं, अमेरिका मे, दमन, शोषण व हत्याओं को एमिनेस्टो क्यों नही देखता। अमेरिका का प्रयास यह क्यों बना रहता है कि लोग उसकी विदेश नीति के विषय मे न जाने व न सोचे। अमेरिका के लगभग 200 राजनैतिक बन्दी व 61 वर्षीय अध्यापक फ्रेंकगीज को मात्र इस आधार पर गिरफ्तार कर लेना कि उनके उँगलियों के निशान एक वामपंथी पुस्तक फ्राम दे मूवमेण्ट टु वार्ड दी रेवोल्यूशन पर पाए गये थे। अमरीकी पत्रों ने इसका जिक्र तक नही किया। अमेरिका ने यह समाचार भी क्यो नही प्रसारित किया कि मिशीगन प्रान्त मे सेन्ट लुई कस्बे के 4000 मजदूर कर्मचारियों को

को मिशीगन कैमिकल कम्पनी द्वारा विषैला रसायन देकर जीवन से बेजार बना दिया गया है।

वास्तव में एमिनेस्टी को प्रत्येक राष्ट्र में समान प्रयास करने चाहिए। वह चाहे तीसरी दुनिया के प्रगतिशील राष्ट्र हों चाहे शक्तिशाली राष्ट्र। विश्व के प्रत्येक राष्ट्र व प्रत्येक संविधान व प्रत्येक न्यायपालिका को जीवनाधिकार प्रदान करना चाहिए।

वास्तव में आज ऐसा महसूस होने लगा है, यह वर्ष, फाँसियों और गोली मारकर हत्या करने का वर्ष है, सुख शान्ति के नाम पर आतंकवाद का सहारा लेना कहाँ तक न्यायिक है—वह चाहे ईरान हो या पाकिस्तान, उनके व्यवहार में कोई अन्तर नहीं आता। लेनिन ने, धर्म को समाज के लिए अफीम बताया था, जबकि खुमैनी धर्म के नाम पर धुआधार अपने पुराने प्रतिद्वन्द्वियों को गोली से उड़वा रहे हैं। अमेरिका अगर पाकिस्तान में भुट्टो को फांसी चढ़वा देता है तो सोवियत संघ दो दिन बाद ही ईरान में हुवेदा को गोली से उड़वा देता है। इन दोनों महाशक्तियों के आतंकवादी खूनी खेल में प्रगतिशील राष्ट्रों के शक्तिशाली नेता शिकार होते हैं। अमेरिका के चंगुल में होने के बाद भी जिया खुमैनी की तरह 1400 साल पुराना 'निज़ामे मुस्तफा' लागू करने का प्रयास कर रहे हैं ? जैसा कि महात्मा गांधी ने भगतसिंह की फांसी पर कहा था, उसको समझने की आवश्यकता फिर से है। भगतसिंह को फांसी लगने के बाद सारा देश, भगतसिंह जिन्दाबाद के नारों से काँप उठा था। बम्बई, मद्रास, कलकत्ता, शहरों में भारी जुलूस निकाले गए। कलकत्ता में पुलिस और जुलूस का सामना भी हुआ। जिसमें 141 मरे और 586 घायल हुए। 341 पकड़े गये। 25 मार्च को कानपुर में होने वाले हिन्दू-मुस्लिम झगड़ों में गणेशशंकर विद्यार्थी ने आत्मबलिदान कर दिया। कराची में होने वाले कांग्रेस अधिवेशन में जगह-जगह से प्रतिनिधि आने लगे। गांधी जी के कराची पहुँचते ही नवयुवक सभा के युवकों ने नारे लगाना शुरू कर दिया "गांधीवाद मुर्दाबाद, गांधीवाद का नाश हो। गांधी वापिस जाओ।" उस समय गांधी ने निवेदन किया—

"भगतसिंह की वीरता और त्याग को देखकर किसी का भी मस्तक आदर से झुके बिना नहीं रह सकता, पर मुझे इसमें भी अधिक वीरता दिखाने वाले नवयुवकों की आवश्यकता है। किसी का भी वध न करके

हुए, किसी को भी नुकसान न पहुँचाते हुए, अहिंसा धर्म का पालन करते हुए हँसकर फाँसी के तख्ते पर लटक जाने वाले वीरो की मुझे जरूरत है। यह कहकर तरुणों को फाँसी चढ़ाना मेरा उद्देश्य नहीं।"

26 मार्च को कांग्रेस अधिवेशन में दोबारा कहा—जो तरुण यह ईमानदारी से समझते हैं कि मैं हिन्दुस्तान का नुक्सान कर रहा हूँ। उन्हे अधिकार है कि वह यह बात संसार के सामने चिल्लाकर कहें। पर तलवार के तत्त्व ज्ञान को हमेशा तिलांजली दे देने के कारण अब मेरे पास प्रेम का ही प्याला बचा है। भगतसिंह की जान न बचे क्या मैं यह सोच भी सकता था। परन्तु यहाँ मैं एक बात दृढता से खुलेआम और साफ तौर पर बता देना चाहता हूँ कि तलवार का सहारा लेकर अपने दीन-दुखियों और कमजोर भाइयो की सहायता नही कर सकता। अत्याचारो का सहारा लेकर हम अपने देश की विपत्ति को और बढाने का उपाय जरूर कर बैठेंगे।

बुनियादी बात आज यही है, हत्या और फांसियो से क्या हम राष्ट्र और समाज को बर्बर, आदिम और जगली सभ्यता की ओर नही ले जा रहे है।

आज जो लगातार मोहनियान के बयान आ रहे हैं, वह भुट्टो की मृत्यु के तुरन्त बाद ही क्यों शुरू हुए, और इससे यह बात तो सिद्ध ही होती है, कि अमेरिका समाजवादी सरकारों को गिराने में धन देता है।

क्या हम इस स्थिति में पहुच चुके है कि पडोसी देश मे क्या हो रहा है ? हम नहीं जानना चाहते और आन्तरिक मामला कहकर टाल दें। तब फिर परस्पर डराकर जनमत तैयार करके, युद्ध की तैयारी क्यो की जाती है ? इसको अमेरिका अपने लाभ के लिए परमाणु संयंत्र लगाकर कैसे उपयोग मे लेता है ?

वह सब सवाल हैं, जिन्होने यह पुस्तक लिखने की प्रेरणा दी। इसके सहयोग में, मेरी पत्नी, मेरे वह सभी दोस्त हैं जिन्होंने मेरे विचारो और सन्देहो को आधार प्रदान किया। अन्त में मैं अपने भाई श्रीकिशन का आभारी हूँ, जिन्होने मुझे लिखने पर मजबूर किया।

—हरिप्रकाश त्यागी

10-5-79
नई दिल्ली

कुचक्र का घेरा

श्री जुल्फिकार अली भुट्टो बार-बार अपने बयानों में कहते रहे हैं कि "जिसने सी० आई० ए० के बारे में पुस्तकें पढ़ी हैं वह यह कहे बिना नहीं रह सकता कि यहाँ पाकिस्तान में चिली की घटनाओं और राजनैतिक षड्यन्त्र को ही दोहराया गया है।" या "मुझे हटाने में बड़ी शक्तियों का हाथ है, पाकिस्तानी जनता अभी भी मेरे साथ है।"

इस तरह के बयान श्री भुट्टो ने विश्व सहानुभूति प्राप्त करने के लिए नहीं दिये। न ही इसको कारावास के समय में कालकोठरी में पड़े, अकेले निहत्थे भुट्टो की दिमागी खुराफात ही कह सकते हैं। हम आज विश्व राजनीति की एक ऐसी उथल-पुथल से गुजर रहे हैं जहाँ तख्ता-पलट दांव-पेंच, हत्याएँ और सामूहिक हत्याएँ, झूठा प्रचार सत्ता प्राप्ति के प्रयास में साधारण-सी बात मानी जाती हैं।

विश्व-शान्ति, मानव-अधिकार, न्याय-स्वतन्त्रता व चरित्र-हनन, असमानता का विरोध मानवीय भावनाओं को उद्वेलित करने के लिए प्रचार का एकमात्र माध्यम। मानवीय अधिकारों का हनन, स्वतन्त्रता और लोकतन्त्र यह सभी बातें विश्व की महान शक्तियों की ओर से विश्व-भर में फैलाकर पीछे अपने-अपने स्वार्थ पूरे करती हैं। विश्व-शान्ति के लिए शक्ति-सन्तुलन बनाये रखना अपना कर्त्तव्य मानती हैं। शक्ति-सन्तुलन बनाये रखने के लिए अपनी शक्ति का प्रयोग कर अशान्ति,—अराजकता और उपद्रव, जुलूस और आगजनी, हत्याएँ और सामूहिक

कराती रहती हैं। वह अफ्रीका, कांगो युगाण्डा, नामिबिया, रोडेशिया या ईस्राइल, सऊदी अरब, ईरान, मिस्र, फिलस्तीन हो या चीन, वियतनाम और कम्बोडिया हो, सभी जगह महाशक्तियों का नेतृत्व जारी रहता है!

आज कोई झगड़ा, पाकिस्तान और भारत के बीच नहीं, चीन और वियतनाम के बीच नहीं है। हम महाशक्तियों के झगड़े अपने ऊपर लादे हुए झगड़ रहे हैं और मूल प्रश्न बनाये हुए हैं। इस तरह हमारी इच्छाएँ, हमारी इच्छाएँ ही रहती हैं और राष्ट्र को तथा राष्ट्र की जनता को किसी ऐसे झगड़े के बीच लाकर खड़ा कर दिया जाता है, जहाँ रोटी, कपड़ा और मकान अन्धराष्ट्रवाद के कारण नगण्य हो जाता है और हम उस झगड़े को अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानकर, अपना झगड़ा समझने लगते हैं। अगर हम उससे हटने का प्रयास करते हैं या अपने अन्य किसी मामले पर दृढ़ होने की कोशिश करते हैं तो महाशक्तियों के पास अन्य दाँव-पेंच होते हैं, जिनको वह उपयोग में लाते हैं, उनमें हत्याएँ एक माध्यम होती हैं, वह चे ग्वे वारा लुमुम्बा, अलेन्दे, अल्बर्टो नेता व अन्य नेता, ये सब एक ही क्रम में आते हैं। चरित्र-हनन की चपेट में अगर भुट्टो आ गये तो कोई आश्चर्य की बात नहीं मानी जानी चाहिए क्योंकि चरित्र-हनन की राजनीति महाशक्तियों की राजनीति का अभिन्न अंग है, इस तरह से चरित्र-हनन के घेरे में भुट्टो स्वयं फँसे थे जब उन्होंने पाकिस्तान में अमेरिका को जासूसी अड्डे बनाने की इजाज़त दी थी। इन जासूसी अड्डों का लक्ष्य मूलतः भारत और चीन पर नजर रखना था, साथ ही पश्चिमी एशिया की राजनीति पर भी। पाकिस्तान पर और भुट्टो पर इसका प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था, अन्ततः पाकिस्तान अमेरिका की गिरफ्त में पूरी तरह से आ गया।

दूसरे महायुद्ध के बाद महाशक्तियों ने विश्व को बाँट लिया। इसके बाद विश्व की राजनीति में महाशक्तियाँ जो कुछ कारगुजारी निर्णायक अन्दाज से करती रहीं, उसमें चरित्र-हनन और हत्याओं को भी प्रोत्साहित करती रहीं। भारत ने कभी इस ओर ध्यान नहीं दिया कि महाशक्तियाँ चरित्र-हनन राजनीति को बढ़ावा क्यों देती हैं जबकि इस बात को जाने बगैर अपने देश की राजनीति को न समझा जा सकता है और न ही

राजनीति की वास्तविक विचारधारा को ही। यह बात भारत पर जिस तरह लागू होती है उसी तरह से अन्य प्रगतिशील राष्ट्रों पर भी, जहाँ महाशक्तियाँ या तो अपने पंजे जमाये या नजरें गडाये बैठी है। और राष्ट्रों के नेता महाशक्तियों के स्वरूप को उद्घाटित करने से कतराते है। निष्पक्ष वास्तविक विवेचन के अभाव मे यह समझना कठिन हो जाता है कि अमेरिका और सोवियत संघ अचानक ऐसा और अचानक वैसा वर्ताव क्यो करने लगता है। या नेता लोग किसी खास ढंग से अपना आसन क्यो बदलने लगते है। महाशक्तियों की सबसे बडी बात यह है कि ये अपने को सारी दुनिया का नियामक मानते हैं और नही चाहते कि उनके हित के विरुद्ध कोई भी राष्ट्र कोई महत्त्वपूर्ण कदम उठाये। अगर कोई राष्ट्र महाशक्तियो की शान मे इस तरह की गुस्ताखी करने की कोशिश करता है तो उस राष्ट्र को सबक सिखाकर अपने हित में लाना अपना नैतिक कर्त्तव्य मानती हैं! किसी भी राष्ट्रनायक को सत्ता से हटाना, हत्या कराना या तख्ता पलटवाकर सैन्य शासन लागू करना कुछ समय की ही बात होती है।

प्रथम महायुद्ध के पहले ब्रिटेन ही एक ऐसी शक्ति थी जिसका प्रभुत्व संसार-भर पर छाया हुआ था परन्तु दूसरे विश्व युद्ध के बाद दो महाशक्तियाँ विश्व मे उभरी, अमेरिका और रूस और आज तीसरा दावेदार है चीन। विश्व-भर में एकछत्र शासन की स्थापना के लिए अमेरिका और सोवियत सघ जुटे है, अपने हितो की रक्षा करते हुए और इन्ही दो महाशक्तियों ने अन्य महाशक्तियों को भी अपने ही अनुकूल बना रखा है, इसमे एकछत्र यूनियन जैक फैलाने वाला ब्रिटेन हो या चाहे वह फ्रांस हो। यह सब शक्तियाँ अमेरिका और सोवियत संघ को ही प्रश्रय देती हैं। अपने को निष्कंटक रखते हुए महाशक्तियों की गिनती में रहती हैं। तभी सोवियत संघ और अमेरिका बार-बार घोषित करते रहे हैं, उनका हित सर्वव्यापी है या विश्वव्यापी है। परन्तु हितों के स्वरूप को छिपाये रखने के लिए विचारधारात्मक बहाना ढूंढकर 'विचारधारा का संघर्ष' कहकर प्रगतिशील राष्ट्रों की जनता को अंधेरे मे रखते हैं।

महाशक्तियों की राजनीति उनके परस्पर विरोधी विश्वव्यापी हितों

की राजनीति है, इससे अधिक कुछ नहीं। सिद्धान्त सिर्फ एक मुखौटा मात्र है सिद्धान्त के पीछे वास्तविक सत्तासेवी स्वरूप छिपाया होता है। इसलिए यह बात हमेशा ध्यान मे रहनी चाहिए जब अपने हित की बात आती है तो ये शक्तियाँ सिद्धान्त का मुखौटा उतारकर शुद्ध सत्ता का खेल खेलने लगती हैं। अत महाशक्तियो के लिए यह बात कोई अर्थ नही रखती कि किसी देश मे किस प्रकार का शासन है लोकतान्त्रिक व्यवस्था हो या सैन्य शासित। वे राष्ट्र महाशक्तियों का मूलतः अनुसरण करके उसके हितों को समर्थन देती हैं या नही! चीन में पूँजीवाद हो या साम्यवाद अगर वह अमेरिका का समर्थन न करे तो उसको राष्ट्रसंघ मे स्थान नही मिलता। चीन साम्यवादी भले ही हो यदि उसकी सोवियत संघ से अनबन हो जाती है तो तुरन्त उसको संशोधनवादी और साम्राज्यवादियों का पिछलग्गू कहकर दुत्कारा जाता है। इसी कारण से अमेरिका पाकिस्तान की तानाशाही सरकार के निकट अपने आपको पाता है और भारतीय जनतन्त्र मे दुराव की भावना रखता है। इसका एक और आन्तरिक कारण है जनतन्त्र मे कई राष्ट्रनायकों की विचारधारा को परिवर्तित करके अपने हित में लाना होता है जिसके लिए समय, नये नारे और परिश्रम के साथ ही साथ समर्थन देने वाले लोगों की भीड पैदा करनी होती है परन्तु तानाशाही में एकमात्र मार्शल-ला प्रशासक को अपने हित में करना होता है। तभी पाकिस्तान अपने यहाँ पर जासूसी अड्डे स्थापित करने देता है, जबकि भारत न अमेरिका को ऐसा करने देता है और न सोवियत संघ को।

इन महाशक्तियों की जीत जब दूसरे विश्व युद्ध के बाद निश्चित होने लगी तब ईरान मित्र राष्ट्रों के साथ था। उन्हीं दिनों एक गुप्त और महत्त्वपूर्ण बैठक तेहरान में हुई जिसमे श्री रूजवेल्ट, चर्चिल और स्टालिन ने हिस्सा लिया। इस बैठक में यह तय किया गया, महायुद्ध के बाद का लाभ किस अंश तक किस राष्ट्र को मिलना है और महायुद्ध के बाद विश्व की राजनीति किस प्रकार रखनी है तथा युद्ध के बाद अपने-अपने प्रभाव-क्षेत्र को लेकर एक आम सहमति हुई थी। महायुद्ध के पहले ईरान ब्रिटेन के प्रभाव-क्षेत्र मे था परन्तु महायुद्ध के बाद ब्रिटेन आर्थिक रूप मे इतना

कमजोर हो चुका था कि ईरान या भारत को अपने प्रभाव-क्षेत्र में नहीं रख सकता था। आर्थिक स्थिति का विवरण 'फ्रीडम फार मिड नाइट' में मिलता है। भारत को तो ब्रिटेन ने अपना संविधान दिया आगे तक अपनी कालोनी बनाये रखने के लिए। परन्तु ईरान ब्रिटेन के प्रभाव से मुक्त होकर अमेरिका के प्रभाव मे आ गया। 1953 मे जब ईरान के प्रधान मन्त्री डा० मोहम्मद मोसादिक ने ऐंग्लो-ईरानियन तेल कम्पनी का राष्ट्रीयकरण करने की पेशकश की जिसके विरुद्ध शाह पहलवी थे। शाह नही चाहते थे कि ऐसा हो परन्तु डा० मोसादिक ने शाह की परवाह न करते हुए, राष्ट्रहित मे कम्पनियों का राष्ट्रीयकरण कर दिया क्योंकि डा० मोसादिक जानते थे कि उनके साथ जनता है और जनता यही चाहती है। डा० मोसादिक को गिरफ्तार करने के लिए जनरल निजामी को शाह ने भेजा परन्तु जनरल निजामी डा० मोसादिक को गिरफ्तार न कर सके उल्टे डा० मोसादिक ने उन्हें गिरफ्तार कर जेल मे डाल दिया और शाह डरकर ईरान छोड़कर रोम भाग गये। परन्तु यह कार्य अमेरिका और ब्रिटेन दोनो को पसन्द नहीं। डा० मोसादिक को सबक सिखाने और बदला लेने के प्रस्ताव पर ब्रिटेन और अमेरिका मे सहमति हो गयी।

डा० मोसादिक का तख्ता उलटने का काम अमेरिका की जासूसी सस्था सी० आई० ए० को सौपा गया जिसका नेतृत्व अमेरिका के भू० पू० राष्ट्रपति श्री रूजवेल्ट के पोते करमिट रूजवेल्ट ने किया। करमिट रूजवेल्ट सी० आई० ए० के 60 चुनीदा कार्यकर्ताओ को लेकर ईरान पहुँचे और गाँव-गाँव घूमकर असीमित पैसा खर्च करने के बाद डा० मोसादिक के विरुद्ध एक जन आन्दोलन खड़ा कर दिया। इस आन्दोलन में अधिकतर ईरान के आदिवासी और दलित वर्ग के लोग थे। डा० मोसादिक इस षड्यन्त्र को बिलकुल भी भांप न पाये और षड्यन्त्र का शिकार होकर जेल में डाले गये। शाह रोम से वापिस आकर फिर मयूर सिंहासन पर आसीन हो गये। इस घटना को स्वयं करमिट रूजवेल्ट ने बनाया जो बाद में अमेरिका भर मे मित्र ईरान के नाम से पुकारे जाते हैं।

सी० आई० ए० से प्रत्येक अमेरिकी राष्ट्रपति का गहरा सम्बन्ध रहा। वह रूजवेल्ट हो या विश्व शान्ति के आधार स्तम्भ समझे जाने

वाले जान एफ० कनैडी हो या जिम्मी कार्टर।

2 दिसम्बर, 1823 अमेरिका के राष्ट्रपति मनरो ने यूरोप को चेतावनी दी थी कि यूरोप अमेरिका के आन्तरिक मामलों में दखलन्दाजी न करे। उन्होंने ही इस सिद्धान्त की आधारशिला रखी थी कि अमेरिका की यह नीति है कि किसी भी विवाद पर सम्बन्धित पक्ष स्वयं फैसला करें उनके निजी मामलों में तीसरा देश हस्तक्षेप न करे। 1974 में राष्ट्रपति फोर्ड ने एक पत्रकार के प्रश्न का उत्तर दिया। दूसरे देश की सवैधानिक सरकार को उखाड़ने की कोशिश करने का हमें किस अन्तर्राष्ट्रीय कानून के अन्तर्गत अधिकार ? मैं यह निर्णय नहीं देने जा रहा हूँ कि अन्तर्राष्ट्रीय कानून के तहत यह अधिकार या अनुमति है, किन्तु इतिहास और आज के हालात की दृष्टि से यह एक स्थापित सत्य कि ऐसे कदम सम्बन्धित राष्ट्रों के सर्वोच्च हितों को ध्यान में रखकर उठाये जाते हैं।

मनरो से फोर्ड तक आये इस भयानक परिवर्तन के पीछे कौन-सी शक्ति काम कर रही थी। एक ओर अपने राष्ट्र में दूसरों का हस्तक्षेप असहनीय हो उठता था दूसरी ओर आज राष्ट्रपति फोर्ड का मुँहफट जवाब इस ओर साफ-साफ संकेत है। अमरीकी सरकार अपनी नीति के अनुरूप यह फैसले के लिए स्वतन्त्र है किस राष्ट्र की सरकार का कब तख्ता पलट दिया जाये।

सी० आई० ए० का मुख्य काम अमेरिका की विदेश नीति को गुप्त एवं गैर-कानूनी तरीकों से सही सिद्ध करना है। हालांकि इसका मुख्य कार्य और प्रारम्भिक ध्येय साम्यवादी प्रचार में टक्कर लेना था। परन्तु आज इसका काम प्रगतिशील राष्ट्रों पर अमेरिका का दबदबा बनाये रखने के साथ-साथ आर्थिक रूप से शस्त्रों की बिक्री के लिए मंडी तैयार करना है। सी० आई० ए० किसी भी सरकार के अनुकूल और प्रतिकूल दोनों तरह से उस राष्ट्र में सक्रिय हो सकता है वह जनमत तैयार कर सकता है और उस जनमत का प्रयोग समयानुकूल समय पर अमेरिका के हित में करता है। हर देश में उसका यही काम होना है, प्रत्येक देश की सरकार बदलने का जैसे अमेरिका ने ठेका लिया हुआ है। हर देश में तोड़-फोड़, दंगे, साम्प्रदायिकता को बढ़ावा देना होता है।

इन्हीं कारणों से किसी राष्ट्र की सरकार को स्थायित्व नहीं मिल पाता जिसके कारण राष्ट्रीय सरकार अपनी नीतियाँ अपने नागरिकों के हित में प्रयोग करके सशक्त और सरल नहीं बन पाती। और अन्त में अमेरिका के सामने झुक जाती है।

इस काले कारनामे वाली संस्था सी० आई० ए० को स्थापित करने का विचार 7 दिसम्बर, 1941 को आया। पर्ल हार्बर पर जापानी हमले के बाद अमेरिकी सरकार को यह महसूस होने लगा कि इसे एक महत्त्वपूर्ण जासूसी संस्था की आवश्यकता है। परन्तु संगठित गुप्तचर विभाग अनुपस्थिति संकेतों में तालमेल नहीं हो पाया। इससे पहले 1940 में राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने ब्रिटेन के बारे में कुछ महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ प्राप्त करनी चाहीं। इन सूचनाओं को प्राप्त करने का काम विलियम जे० डोनोवेन को सौंपा गया। डोनोवेन ने यह काम तो कर दिखाया। परन्तु अमरीकी सरकार को एक सुझाव भी दिया कि ऐसे महत्त्वपूर्ण कार्य अन्तर्राष्ट्रीय सूचनाएं प्राप्त करने के कार्य के लिए एक ताकतवर और चुस्त जासूसी संगठन की आवश्यकता है जो अन्तर्राष्ट्रीय जासूसी का कार्य करे। उस वक्त ऐसे संगठन की स्थापना नहीं हुई परन्तु एक सूचना कार्यालय खोला गया जिसको 13 जून, 1942 में दो भागों में बांट दिया गया, एक था आफिस आफ स्ट्रेटेजिक सर्विसेस तथा आफिस आफ इन्फारमेशन जिसका मुख्य काम विभिन्न देशों में गुप्तचरी जाल फैलाकर महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ इकट्ठी करना था। यहीं आगे चलकर सी० आई० ए० का प्रेरणास्रोत रहा। 1944 तक जे० डोनोवेन ने राष्ट्रपति श्री रूजवेल्ट को राष्ट्रीय गुप्तचर संगठन का प्रारूप तैयार करके दे दिया। परन्तु इस योजना का क्रियान्वन किया राष्ट्रपति ट्रूमैन ने, उन्होंने 1945 में ओ० एस० एस० का विघटन किया इसके मुख्य गुप्तचरों को सैनिक विभाग में भेज दिया और 18 सितम्बर, 1947 को, 46 में जन्मे राष्ट्रीय गुप्तचर दल ने सी० आई० ए० का रूप ले लिया।

और इसको पाँच कार्य सौंपे गये। राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दों पर राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद् को विभिन्न सरकारी विभागों की गुप्त कार्यवाहियों की जानकारी देना। इन कार्यवाहियों में तालमेल बैठाये रखने के लिए

विभिन्न सुझाव देना, गुप्त गतिविधियों की जानकारी एकत्र करके उनका मूल्यांकन करना, सरकारी गुप्तचर संगठनों को रक्षा परिषद् के निर्णयानुसार आवश्यक सहायता देना तथा समयानुसार अन्य कार्यवाहियाँ करना।

दरअसल ये 'अन्य कार्यवाहियाँ' ही सी० आई० ए० की मुख्य गतिविधियाँ थीं। एक साल पूरा भी न हो पाया कि राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद ने इसे पाँचवें कार्य के ही अन्तर्गत विशेष अभियानों का भी अधिकार भी दे दिया। यहाँ पर एक विस्मयकारी शर्त थी कि सी० आई० ए० विशेष अभियान शुरू कर सकती थी जबकि वे अभियान गुप्त हों और ऐसे हों कि अमरीकी सरकार उनके दायित्व से इंकार कर सके। दि इनविजिबिल गवर्नमेंट लेखक : डेविडवाइज़, टामस० एस।

और अब वह समय है कि अमेरिकी सरकार सी० आई० ए० की समस्त गतिविधियों के अस्तित्व को भी नकार देती है बाद में सी० आई० ए० ने और भी पैर पसारे जब गुप्त राजनीतिक षड्यन्त्रों की कार्यवाहियों के लिए एक नया विभाग खोला—नीति समन्वय विभाग।

इस नीति समन्वय विभाग की नयी भूमिका से सम्बन्धित भयभीत इसके संस्थापक भूतपूर्व राष्ट्रपति ट्रूमैन ही हो गये। 1963 में उन्होंने लिखा, "पिछले कुछ समय से मैं चिन्तित हूँ कि सी० आई० ए० अपने मूल उद्देश्यों व कार्यों से हट गयी है अब तो वह सरकारी नीति बनाने का कार्य भी करने लगी है। जब मैंने इसका गठन किया था तो मुझे गुमान भी न था कि यह सैनिक कार्यवाहियाँ भी करने लगेगी। राष्ट्रपति को गुप्त सूचनाएँ देने के लिए बने संगठन को अब कुटिल विदेश नीति का पर्याय माना जाने लगा है।"

परन्तु श्री ट्रूमैन यह सब भूल गये कि उन्हीं के कार्यकाल में सी० आई०ए० ने विशेष अभियान शुरू किये थे। 1947 में अमरीकी कांग्रेस ने एक प्रस्ताव पारित करके 1949 में एक और कानून बनाया सेंट्रल इंटैलीजेंस कानून, इसके अन्तर्गत सी० आई० ए० अपने कर्मचारियों की संख्या, उनके नाम, पद व वेतन बताने के लिए बाध्य नहीं। इस नये कानून से सी० आई० ए० के निदेशक को असीमित अधिकार दे दिये गये। वह मनमाने ढंग से पैसा खर्च कर सकते हैं। कोई आदेश या नियम उस पर

लागू नहीं होता और वह अपने दस्तखत से सरकारी खजाने से लाखों-करोड़ों डालर निकाल सकता है व किसी भी तरह के हिसाब-किताब के लिए जवाबदेह नहीं है।

जिस समय अमरीकी राजनीति पर जान फास्टर डलेस छाये हुए थे, उस समय उनके भाई ऐलन डलेस सी० आई० ए० को पूर्णतः मजबूत करने पर लगे हुए थे। 1947 में सी० आई० ए० की स्थापना में ऐलन डलेस का महत्वपूर्ण हाथ था। 1953 में राष्ट्रपति आइजनहॉवर ने ऐलन डलेस को सी० आई० ए० का निदेशक नियुक्त करके अमरीकी विदेश नीति की बागडोर पूरी तरह से डलेस बन्धुओं को थमा दी थी। एक जान डलेस पूरी दुनिया को समझा रहे थे कि अमेरिका अन्य राष्ट्रों के मामले में हस्तक्षेप नहीं करेगा तो दूसरा भाई ऐलन डलेस दुनिया भर में राजनीतिक षड्यन्त्रों का जाल फैलाने की कोशिश में लगा था। और ऐलन डलेस के कार्यकाल में ही सी० आई० ए० ने राष्ट्रों का तख्ता पलटने में महारथ प्राप्त की थी।

यहाँ एक बात और ध्यान देने की है कि सी० आई० ए० ही अमेरिका की वास्तविक सरकार है आज सी० आई० ए० की शक्ति इतनी अधिक हो गयी है कि अमरीकी राष्ट्रपति भी उससे डरते हैं ट्रूमैन के शब्दों में तथा सैद्धान्तिक सरकार ऊपर से दिखाने-भर के लिए एक मुखौटा है जो सिद्धान्तों को बार-बार जब-तब दोहराता रहता है यहाँ दो चेहरों-वाली राजनीति की झलक साफ-साफ ही नहीं बल्कि—कथनी और करनी का अन्तर देखा जा सकता है।

तख्ता पलट राजनीति

अमरीकी सरकार की कथनी और करनी के फर्क को जान लेना ही काफी नहीं है, बल्कि ऐसी अनेक अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं और षड्यन्त्रों को विश्व-भर मे चर्चा का विषय रहा है जहाँ अमेरिका की वास्तविक सरकार यानी सी० आई० ए० के पंजे जमे रहे और सी० आई० ए० अपने प्रभाव व साजिश मे राष्ट्र की सरकारों के तख्ते पलटती रही। परन्तु सबसे पहले सी० आई० ए० को नीचा देखना पड़ा था सन् 1950 में कोरिया के मोर्चे पर, जब सी० आई० ए० कोरिया के मोर्चे की सही-सही सूचनाएँ नही इकट्ठी कर पाया था कि चीन ने हमला बोलकर अमरीकी सैनिकों के पैर कोरिया की जमीन से उखाड फेंके। वहाँ पर उखड़ने का परिणाम यह बिल्कुल नही था कि संसार मे साम्यवादियों से अमेरिका पिछड गया था। बल्कि हुआ उल्टा इस घटना के बाद सी० आई० ए० और अधिक चुस्ती और मुस्तैदी से अन्तर्राष्ट्रीय मोर्चे पर गतिशील हो गया। 1952 मे सी० आई० ए० बर्मा में विद्रोही छापामारों को मदद पहुँचा रही थी। लेकिन अमरीकी राजदूत को इसकी खबर भी न थी। इसी कारण उनको काफी अपमानित होना पड़ा था। उसको सबसे पहली और महत्वपूर्ण सफलता ईरान में मिली जबकि हर देश में छिट-पुट तोड़-फोड़ और सरकार विरोधी आन्दोलन का सूत्रपात सी० आई० ए० कर चुका था। 1953 मे ईरान के प्रधान मन्त्री डा० मोहम्मद मोसादिक को गद्दी से हटाकर शाह रजा पहलवी को पुन. तख्त पर बैठाने की घटना

एक जासूसी उपन्यास की तरह लगती है जो सी० आई० ए० ने मुस्तैदी और चालाकी से किया। अप्रैल, 1951 में डा० मोसादिक ने ऐंग्लो-ईरानी तेल कम्पनी का राष्ट्रीयकरण किया और फारस की खाड़ी में स्थित तेल-शोधक कारखाने को सरकार ने अपने हाथों में ले लिया! इससे हजारों मजदूर बेकार हो गये। ईरान की आर्थिक स्थिति बिगड़ने लगी। इन स्थितियों में डा० मोसादिक ने ईरानी साम्यवादी राष्ट्र दल की ओर दोस्ती का हाथ बढ़ाया। पश्चिमी राष्ट्र इस नये गठबन्धन के कारण चिन्तित हो उठे। दूसरी ओर मोसादिक रूसियों के प्रभाव में आते साफ-साफ दीखने लगे। इस गठबन्धन को लेकर जनरल जहेदी जो मोसादिक मन्त्रिमण्डल में गृहमन्त्री के पद पर थे। झगड़ा हो गया। जनरल जहेदी भी एक काल्पनिक चरित्र की तरह से लगता है जो बोल-शेविकों से लड़ा था और कुर्दों ने उसे गिरफ्तार किया था। जहेदी का अपहरण 1942 में अंग्रेजों ने इस आधार पर कर लिया था कि वह जर्मन जासूस है। द्वितीय महायुद्ध के बाद जहेदी पुनः राजनीति में भाग लेकर 1951 में मोसादिक मन्त्रिमण्डल में आ गया था। इसी जनरल जहेदी का सी० आई० ए० ने चरित्र-हनन किया था। जहेदी की कनपटी पर रिवाल्वर रखकर तथा सत्ता सौंपने का निश्चय किया।

तभी 37 वर्षीय किम रूजवेल्ट ने अमरीकी हितों के लिए ईरान में प्रवेश किया। रूजवेल्ट अभी तक पश्चिम एशिया में जासूसी करता था। और किम जानता था कि अन्तिम निर्णय में ईरानी जनता शाह का साथ देगी। अतः किम रूजवेल्ट ने ईरान आते ही ईरान के महत्वपूर्ण जासूसों को अपने हित में लेकर काम शुरू कर दिया।

योजना के अनुरूप ब्रिगेडियर जनरल नार्मन श्वार्ज्कॉफ तेहरान आ गया जिसने 1940 में शाह रजा पहलवी के पुलिस दल के पुनर्गठन में सहायता दी थी। न्यू जर्सी के इस पुलिस अधिकारी से जनरल जहेदी की पुरानी जान-पहचान ही नहीं थी बल्कि वह जहेदी के घनिष्टतम मित्रों में से था। श्वार्ज्कॉफ के ही अनुसार वह अपने पुराने मित्रों और सम्बन्धियों से मिलने तेहरान आया था। श्वार्ज्कॉफ के जिम्मे संगठन का काम था।

प्रधान मन्त्री बनाया गया और डा० मोहम्मद मोसादिक को अपदस्थ कर दिया गया। परन्तु स्वयं शाह् को मोसादिक की शक्ति के सामने रोम की ओर कूच करना पड़ा परन्तु किम की योजना सही रास्ते की ओर काम कर रही थी।

रोम मे शाह् रजा पहलवी और सी० आई० ए० के निदेशक ऐलन डलेस बातचीत कर रहे थे। और तेहरान की सड़कों पर दंगा और झगड़े हो रहे थे। गलियों में और सड़कों पर मोसादिक का नहीं बल्कि उनके समर्थक साम्यवादियों का बोलबाला था, परन्तु धीरे-धीरे मोसादिक विरोधी शक्तियाँ संगठित होकर एकत्र होने लगीं। सेना ने प्रदर्शनकारियों को गिरफ्तार करना शुरू कर दिया। तभी किम रूजवेल्ट 19 अगस्त को खुले मैदान मे आ गया। उसने अपने एजेन्टों से कहा कि जितने भी व्यक्ति एकत्र हो सकें एकत्र किये जाएँ। जासूस तेहरान के एक एथोलेटिक क्लब पहुँचे वहाँ से कुछ पहलवान और कुछ भारोत्तोलक इकट्ठा कर लाए। एक छोटा-सा जुलूस शाह् के समर्थन मे नारे लगाता तेहरान की सड़कों पर घूमने लगा। साम्यवादियों के उपद्रवों से परेशान जनता इस जुलूस के साथ आने लगी और कुछ ही घण्टों में जुलूस ने एक विराट रूप ले लिया। किम ने जनमानस की ऊब को पहचान कर पाँसा पलट दिया। निवासित जहेदी ने पुनः आकर सत्ता सम्हाल ली तथा शाह् की गद्दी बच गयी। शाह् वापिस तेहरान पहुँच कर अमेरिकी सरकार की कठपुतली बन गये।

सी० आई० ए० के क्रिया-कलाप साम्यवादी राष्ट्रों तक ही सीमित नहीं रहे। छठे दशक के मध्य में सी० आई० ए० के जासूसों ने कॉस्टारिका के आन्तरिक मामलो में बहुत ही चालाकी से घुसपैठ की। कॉस्टारिका मे लातिनी अमेरिका की लोकतान्त्रिक पद्धति पर आधारित सर्वाधिक स्थायी सरकार थी। किसी भी राष्ट्र की सरकार स्थायी सरकार के तौर पर काम करती रहे—यह अमेरिका की 'विदेश नीति' पर एक तमाचा था। सो यहाँ पर सी० आई० ए० का मुख्य उद्देश्य 1953 मे बहुमत से राष्ट्रपति चुने गये, उदार और समाजवादी जोस फिगरेस को सत्ता से हटाना था।

में थी। कई महीने तक इसके शब्द-शब्द की जाँच होती रही फिर औचित्य पर प्रकाश डाला गया। जब यह तय हो गया कि सही प्रति ही हाथ में है तो यह प्रकाशित कर दी गयी। इसी भाषण से रूस और चीन के विवाद प्रथम संकेत प्राप्त होते है। सी० आई० ए० के लिए यह आवश्यक नही है कि वह हर देश में सफलता ही प्राप्त करे परन्तु अपनी गतिविधियों से राष्ट्र की अर्थव्यवस्था को तहस-नहस करने की पूरी कोशिश होती है, 18 जून 1954 मे ग्वेटामाला मे स्थित अमेरिकी राजदूत जान ई० प्यूरीफॉय अपने मित्रों से कह रहे थे, 'दोस्तो कल इमी समय हम यहाँ एक शानदार दावत करेंगे।' राजदूत का विचार सही था क्योंकि राष्ट्रपति जेकाबो गुजमान के विरुद्ध सी० आई० ए० के नेतृत्व में तख्ता पलटने का काम शुरू हो चुका था। उसी दिन अमेरिका में प्रशिक्षण प्राप्त तथा ग्वेटामाला मे निर्वासित कर्नल कार्लो केस्तीलो आर्मस हाडरस की सीमा मे घुस चुका था तथा आक्रमण शुरू हो गया था। इसकी जानकारी राष्ट्रपति आइजनहावर को थी। लेकिन प्यूरीफॉय का हिसाब गलत बैठ गया। लड़ाई एक दिन मे खत्म होने की बजाय ठीक 12 दिन चली और राष्ट्रपति को स्टेट डिपार्टमेन्ट की इच्छा के विरुद्ध और बमवर्षक विमान इन कथित क्रान्तिकारी की सहायता के लिए भेजने पड़े जिस समय अमेरिकी बमवर्षक पी-47 थंडरबोल्ट विमान ग्वेटामाला नगर पर बम बरसा रहे थे। अमेरिकी विदेश मन्त्री जान फास्टर डलेस सफाई दे रहे थे कि ग्वेटामाला की जनता अपना सघर्ष आप ही लड़ रही है।

गुजमान सरकार को गिराने के लिए सी० आई० ए० ने अपने जासूसों की नियुक्ति राजदूत के रूप मे लातिनी अमरीकी देशों मे करवायी थी। प्यूरीफॉय के अतिरिक्त इस साजिश के प्रमुख भागीदार थे हाडूरस मे राजदूत व्हिटिंग व्हिलॉइर कॉस्टोरिका मे स्थित अमेरिकी राजदूत राबर्ट हिल, निकारागुआ में स्थित अमेरिकी राजदूत टॉमव्हिलम। उस समय सी० आई० ए० की गतिविधियाँ साम्यवादियों को देखते हुए अमरीकी हित मे होती थीं। 'बोलो कुछ करो कुछ' के आधार पर क्रियाशील अमेरिकी सरकार का झूठ 10 मई, 1960 को बड़े स्तर पर सामने आया। 16 मई को श्री आइजनहॉवर मैकमिलन फ्रान्स मे दिगाल और ख्रुश्चोव

शिखर सम्मेलन में भाग लेने वाले थे। और अमेरिकी प्रवक्ता लिंकन व्हाइट ने अत्यन्त गम्भीरता से कहा, अमेरिका का रूस वायु सीमा का उल्लंघन करने का कोई इरादा नहीं। मगर कुछ दिनों बाद 1 मई को एक अमेरिकी विमान यू-2 रूस ने मार गिराया जिस पर रूसी जासूस नजर रखे हुए थे। यू-2 विमान 80,000 फीट की ऊँचाई से उड़ते हुए सूचनाएँ व फोटो एकत्र कर सकते थे। यू-2 विमान का निर्माण रिचर्ड बिसेल, टूवर गार्डनर और क्लेरेंस केली ने जासूसी के लिए किया था। प्रारम्भिक आनाकानी के बाद सुरक्षा विभाग ने उड़ान की अनुमति दे दी थी। चार वर्ष तक ये विमान रूसी क्षेत्रों में उड़ते रहे थे, तथा रूसी सीमाओं में महत्वपूर्ण सूचनाएँ व महत्वपूर्ण फोटो लाते रहे थे। 1 मई को रूसियों द्वारा यू-2 को मार गिराने के बाद 16 मई को होने वाला शिखर सम्मेलन विफल हो गया।

सी० आई० ए० का सबसे घृणित कार्य कांगो में लुमुम्बा की हत्या है। अमेरिकी राष्ट्रपतियों ने सी० आई० ए० की सहायता से अपने रास्ते के जो रोड़े हटाये उसका ज्वलन्त उदाहरण। कांगो के राष्ट्रवादी नेता प्रधानमन्त्री लुमुम्बा का रुझान रूस समर्थक था। इस बात ने अमेरिका के कान खड़े कर दिये। 30 जून 1960 को कांगो स्वतन्त्र हो चुका था। उसी दिन से प्रधानमंत्री पैट्रिस लुमुम्बा की हत्या के प्रयास जारी हो गये। लुमुम्बा सी० आई० ए० की दृष्टि में तथा अमेरिका के उपविदेश मन्त्री डगलस डिल्लन की नजर में फिदेल कास्त्रो या उससे भी बुरे थे। क्योंकि वह कट्टर राष्ट्रवादी और दृढ़ विचारोंवाले नेता थे। अमेरिकी सेना के मुख्यालय पेंटागन के अनुसार विक्षिप्त व्यक्ति थे। लुमुम्बा को चरित्र-हनन के दायरे में लाना टेढ़ी खीर थी, अतः लुमुम्बा को हत्या द्वारा ही हटाना एक मात्र रास्ता था।

18 अगस्त, 1960 को अमेरिका की राष्ट्रीय सुरक्षा समिति की एक बैठक हुई, अध्यक्ष राष्ट्रपति थी आइजनहॉवर थे। चर्च समिति रिपोर्ट के अनुसार राष्ट्रपति ने कुछ कहा था और इसके बाद ही लुमुम्बा की हत्या के प्रयास किये जाने लगे थे। राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के ... रावर्ट जानसन ने चर्च समिति के सामने अपनी गवाही में कहा, '...

की गतिविधियो पर हो रही बातचीत के दौरान राष्ट्रपति आइजनहॉवर ने ऐसा कुछ कहा था जो शब्दशः तो मुझे याद नही, परन्तु उन शब्दों से जो मुझे व्यक्त लगा वह लुगुम्बा की हत्या जैसा आदेश था। क्योकि राष्ट्रपति के वक्तव्य से मैं आश्चर्यचकित रहा गया था।" अमेरिका के उपविदेश मन्त्री डगलस डिल्लन का कहना है कि बैठक मे दिये गये स्पष्ट निर्देश तो मुझे याद नही परन्तु यह सम्भव है कि राष्ट्रपति के कठोर आदेश 'लुगुम्बा से पीछा छुडाने' की नीति को तत्कालीन सी० आई० ए० निदेशक ऐलन डलेस ने हत्या का आदेश समझा हो। राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद की इस बैठक के बाद हत्या की तैयारियाँ जोर शोर शुरू हो गयीं। सी० आई० ए० की गुप्त कार्यवाहियो के मुखिया रिचर्ड विसेल ने वैज्ञानिक मामलों के विशेष सहयोगी जोसेफ शीडर को किसी अज्ञात अफ्रीकी नेता की हत्या के लिए तेज जहर तैयार रखने के आदेश दिये। ऐलन डलेस ने कांगो की राजधानी लियोपोल्डविल (किन्शासा) स्थित अमेरिकी अधिकारी हैजवान को केबल भेजकर सूचना दी। "यहाँ उच्च स्तरो पर निर्णय लिया जा चुका है कि यदि लुगुम्बा उच्च पद पर बना रहता है तो इसका निश्चित परिणाम होगा अराजकता अथवा कांगो पर कम्युनिस्टों का कब्जा···हमारा निश्चित मत है कि उसे हटाने की प्रक्रिया को प्राथमिकता दी जाये।" सम्बन्धित अधिकारियों ने बताया कि यह केबल उनके लिए इस बात का सकेत था कि आइजनहावर लुगुम्बा की हत्या के पक्ष मे है। इसके फौरन बाद ही लुगुम्बा को प्रधानमन्त्री पद छोड़ना पड़ा। परन्तु अमेरिका फिर भी लुगुम्बा को खतरनाक समझता रहा और हत्या के प्रयास जारी रहे। इसी उद्देश्य से जोसेफ शीडर का जहर भी कांगो भेजा गया, परन्तु सी० आई० ए० ऐजेन्ट लुगुम्बा के पास नहीं फटक सके। नवम्बर मे सी० आई० ए० का एक विशेष अधिकारी कांगो पहुँचा। उसकी योजना थोडी भिन्न थी। वह विष द्वारा हत्या न करके लुगुम्बा को उनके विरोधियों को सौंप देने के पक्ष मे था। यह विरोधी दल सी० आई० ए० द्वारा ही तैयार किया गया था, निस्सन्देह यह निश्चित था कि ये विरोधी लुगुम्बा को मृत्युदंड देते या गोली से उडा देते। यह योजना तो सफल नहीं हो पायी क्योंकि इससे पहले ही लुगुम्बा की हत्या

करने में अन्य एजेन्ट सफल हो गये।

विरोधियों को सौंपने की योजना और चिली की सरकार का तख्ता पलटने की योजना। दोनों योजनाएँ पाकिस्तान में सफल हुई, न्याय के नाटक को अमेरिका के संकेतों पर नचाया गया है और भुट्टो को वहाँ सेना द्वारा तख्ता पलटवा गिरफ्तार करवा लिया गया तथा आरोप लगाया गया। 'कसूरी केस' का जो झूठा और शरारतपूर्ण था। अगर सच भी मान लिया जाये तो भुट्टो उतने दोषी नहीं माने जा सकते जितने कि आइजनहावर परन्तु आइजनहावर पर न तो महाभियोग ही चलाया गया और न ही कुछ सजा दी गयी। प्रगतिशील राष्ट्र चूंकि कभी भी महाशक्तियों के चंगुल से नहीं निकल पाते चाहे वह गुट निरपेक्ष राष्ट्र की योजना में सहयोगी ही क्यों न हों।

अचानक चिली में गोश्त की कमी बड़े जोर-शोर से महसूस की जाने लगी तो आयंदे सरकार ने एक वायुयान कम्पनी से अनुबन्ध स्थापित करके अर्जेनटाइना से दिन में दो बार गोश्त आयात करने का निश्चय किया। इस वायुयान कम्पनी को जब भुगतान किया गया तो यह धन सी० आई० ए० की जेब में गया। सी० आई० ए० इस धन का प्रयोग आयंदे विरोधी तत्वों को बढ़ावा देने में कर रही थी। वास्तव में चिली सरकार ने 'सर्दन एयर ट्रांसपोर्ट' का सी-130 मालवाही विमान गोश्त लाने के लिए किराये पर लिया था। आयंदे इस वास्तविकता से अनभिज्ञ थे। एस० ए० टी० सी० आई० ए० द्वारा संचालित विभिन्न वायु सेवाओं में से एक थी, जो विशेष सी० आई० ए० मिशन न होने पर व्यावसायिक उड़ानें भरती थी।

चिली की राजनीति में सी० आई० ए० का धन सी० आई० ए० के अन्य संगठनों के द्वारा 1960 के बाद लगना शुरु हुआ। चिली सी० आई० ए० की गतिविधियों की सबसे महत्त्वपूर्ण प्रयोगशाला के रूप में मानी जाती है। राष्ट्रपति कनेडी की नजर में चिली की क्रिश्चियन डेमोक्रेटिक पार्टी के नेता एडोआर्डो फ्राई ही लातिनी अमेरिका के एकमात्र आशा थे। फ्राई वामपंथी अवश्य थे, परन्तु अमेरिकी हितों के विरोधी बिल्कुल नहीं थे। 1964 में जब फ्राई का मुकाबला चुनाव में आयंदे से

साथ था तब अमेरिकी एजेन्टों ने खुलकर फाई का साथ दिया। और वे राष्ट्रपति चुन लिये गये। आयंदे विरोधी प्रचार की बागडोर सी० आई० ए० के चालाक एजेन्ट फिलिप एगी ने सँभाली थी। चिली की राजनीति में फाई के पैर जमाने के लिए 1962-65 के बीच अमेरिका ने चिली को 618 मिलियन डॉलर की सहायता भी दी। परन्तु उनके शासन की शुरुआत ही डावांडोल हो गई। दक्षिणपंथी उन पर प्रतिवादी होने का आरोप लगा रहे थे। वामपंथी नये सुधार नियम लागू होने में देरी के कारण अप्रसन्न थे। समाजवादी प्रतिपक्ष आयंदे के नेतृत्व में मजबूत होता जा रहा था। सत्ताधारी दल के सच्चे समाजवादी टूट-टूटकर आयंदे के खेमे में शामिल हो रहे थे और इस परिवर्तन ने अमेरिकी सरकार के कान एक बार फिर खड़े कर दिये। सैंटियागो में सी० आई० ए० के 'स्टेशन चीफ' को भेजा गया और 1970 के चुनावों की तैयारी होने लगी।

हेनरी किसीजर ने 1970 में '40 समिति' जो सी० आई० ए० की राजनैतिक कार्यवाहियों को निर्देश देती थी, की बैठक में कहा, "हम यह चुपचाप कैसे देख सकते हैं कि हमारी आँखों के सामने एक राष्ट्र साम्यवादी देश बन जाये। हो सकता है वहाँ की जनता कुछ गैर-जिम्मेदाराना हरकतें कर रही हो। लेकिन हम इसे बर्दाश्त नहीं कर सकते।"

राष्ट्रपति निक्सन और उनके सुरक्षा सलाहकार हेनरी किसीजर दोनों ने यह फैसला ले लिया कि जैसे भी हो आयंदे को हटाया जाये क्योंकि चिली में अमेरिकी स्वार्थ अटके हुए हैं। चर्च समिति की रिपोर्ट के अनुसार यह फैसला 15 सितम्बर 1970 को लिया गया। एक उच्च स्तरीय बैठक में जिसमें तत्कालीन सी० आई० ए० निदेशक हैल्मस ने जो नोट लिए थे, उनमें राष्ट्रपति निक्सन के निर्देश का संकेत मिलता है—

"सफलता का आसिक अनुपात 10 और 1 है फिर भी चिली को बचाना है।"

"खतरों की चिन्ता नहीं।"

"दूतावास को इससे न जोड़ा जाए।"

"आर्थिक स्थिति बिगाड़ दो।"

"योजना के लिए 48 घंटे।"

हैल्मस के अनुसार राष्ट्रपति का कोई स्पष्ट आदेश हत्या के विषय में नहीं था परन्तु यह बात स्पष्ट कर दी थी कि वे चाहते हैं कि 'कुछ जरूर हो' वह कैसे होता है इसकी उनको कोई चिन्ता नहीं।

फिर कुछ होकर ही रहा···

चिली स्थित अमेरिकी राजदूत ने सूचना दी कि चिली की सेना के साथ मिलकर कार्यवाही करने का समुचित समय अभी नहीं है। तब तय हुआ कि चिली की संसद में आयन्दे के खिलाफ वोट देने के लिए सदस्यों को ढाई लाख डालर तक की रिश्वत दी जा सकती है परन्तु यह अव्यावहारिक माना गया जबकि राष्ट्रपति निक्सन ने यह राशि बढ़ाकर दस लाख डालर कर दी थी। सैनिक विद्रोह तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक चिली की सेना के कमांडर जनरल रेने श्नीडर को न हटाया जाये। हैल्मस ने अपनी गवाही में बताया—ऐसे सैनिक अधिकारियों की सूची तैयार की जाए जो विद्रोह कर सकते हैं। 12 आतंकवादी कार्यवाही आदि द्वारा सैनिक विद्रोह की स्थिति पैदा की जाये। जिन सैनिक अधिकारियों से सैनिक विद्रोह की उम्मीद हो उनको बताया जाए कि अमेरिका सीधी सैनिक कार्यवाही के अतिरिक्त उन्हें हर आवश्यक सहायता देगा। परन्तु 7 अक्तूबर, 1970 तक किसींजर इस फैसले पर पहुँच चुके थे कि सैनिक विद्रोह करने का उचित समय अभी नहीं है। सो कार्यवाही टाल दी गयी। सैनेट की रिपोर्ट में कहा गया है कि टालने का निर्णय भी सन्देह से परे नहीं है। किसींजर ने अपनी गवाही में तो यही कहा है कि उन्हें योजना स्थगित किये जाने के निर्णय की याद है। जबकि सी० आई० ए० के उच्च अधिकारियों ने एक सन्देश चिली भेजा जो अन्त में जनरल रेने श्नीडर की हत्या का कारण बना। परन्तु यह आदेश किसके आदेश से भेजा गया था यह स्पष्ट नहीं।

सी० आई० ए० के दस्तावेजों से प्रकट है कि योजना स्थगित करने का निर्णय जिस बैठक में लिया गया उस बैठक की समाप्ति डॉ० किसींजर ने यह कहकर की कि आयन्दे के प्रत्येक मर्मस्थल पर चोट करना सी० आई० ए० को जारी रखना चाहिए। अगले ही दिन सी० आई० ए०

एजेन्ट को सांतियागो में सन्देश भेजा गया। "यह हमारी दृढ नीति है और जारी रहेगी कि आयदे को सैनिक विद्रोह द्वारा हटा दिया जाए।" इसके बाद जनरल श्नीडर के अपहरण के लिए पैसे और हथियार दिये। अत सातियागो में स्थित सी० आई० ए० एजेन्ट सोचते थे कि श्नीडर की हत्या-योजना में सहायता देना उनका कर्त्तव्य है। इसलिए जब श्नीडर पर गोली चलायी गयी इसको उन्होंने अपनी सफलता माना। इसके बाद चिली में जो कुछ हुआ वह प्रत्यक्ष प्रमाण है।

1970 में ही अमेरिकी राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद ने निर्देश दिये कि चुनावों को साफ रखो। जासूसी भाषा में इसका अर्थ था आयदे को चुनाव मत जीतने दो। उनके विरोधियों में 10 लाख डालर बाँटे गये। वोटों की इस भारी खरीदफरोख्त के बावजूद आयंदे को 36 प्रतिशत वोट मिले। इसके बाद सी० आई० ए० ने चिली कांग्रेस के सदस्यों की जेबें गर्म कीं जिससे वह आयदे के चुनाव को वैध मानने से इंकार कर दे। यहाँ भी असफल होने के बाद चिली में आयदे विरोधी वातावरण तैयार करने के लिए और 50 लाख डालर का प्रबन्ध किया गया। यह धन अधिकतर चिली के समाचारपत्रों व राजनीतिज्ञों में बाँटा गया। अतिरिक्त धन मजदूर नेताओं और उद्योगपतियों में, बच्चों के मन में आयंदे के प्रति घृणा पैदा करने के लिए आयंदे विरोधी 'कॉमिक स्ट्रिप' मुफ्त बाँटी गयी। सी० आई० ए० ने अपने बीसियों एजेन्ट आयदे सरकार में घुसा दिये जिसमें उनकी सरकार डावांडोल अर्थव्यवस्था को सँभालने के चक्कर में गलतियों पर गलतियां करती रही। बिगड़ती हुई अर्थव्यवस्था के साथ-साथ सी० आई० ए० का शिकंजा मजबूत-से-मजबूत होता गया। इसकी घुसपैठ छोटे-छोटे दुकानदारों और टैक्सी ड्राइवरों तक हो गयी। 45 दिन की ट्रक-ड्राइवरों की हड़ताल सी० आई० ए० की सबसे बड़ी सफलता थी। इस हड़ताल में ही आयंदे सरकार के पैर उखड़ गये।

आज चिली में सैनिक शासन है अमेरिका समर्थक सरकार होते हुए भी सी० आई० ए० के प्रति अजीब घृणा, भय और आतंक छाया हुआ है। चिली के अनेक कोनों से अब माँग आ रही है कि वास्तविक साम्यवादी और खरीदे हुए साम्यवादी का अन्तर साफ-साफ दर्शाया जाये।

इतने ही घृणित और काले कारनामे युवा खूबसूरत शान्तिप्रिय व आदर्शवादी समझे जाने वाले राष्ट्रपति कनैडी के कार्यकाल में भी हुए। वास्तव में अमेरिकी-वियतनामी युद्ध के अंकुर कनैडी शासन में ही फूटे। डोमिनिकन रिपब्लिक के बदनाम तानाशाह राफेल त्रुजिलो और द० वियतनाम के तानाशाह दिन्ह दियेम का खात्मा करने के निर्देश कनैडी-काल में दिये गये थे। राष्ट्रपति कनैडी को केवल एक चिन्ता थी कि त्रुजिलो विरोधियों को अमेरिका से मिलने वाली सहायता गुप्त रहनी चाहिए। मगर दियेम और उनके परिवार की रक्षा का तो अमेरिका ने बाकायदा वचन दिया था।

डोमिनिकन रिपब्लिक स्थित सी० आई० ए० एजेन्ट ने सन्देश भेजा था कि विद्रोहियों को पिकनिक पार्टी के लिए कुछ 'अनन्नास' चाहिए, और 'अनन्नासों' यानी हथियारों की टोकरियाँ अमेरिका से यहाँ पहुँच गयीं। दूसरी ओर दियेम ने द० वियतनाम से भागने की तैयारी की और अमेरिका से विमान माँगा। अमेरिका ने विमान नहीं दिया। जबकि दियेम की सुरक्षा का वचन दे चुका था। चर्च समिति की रिपोर्ट में कहा गया है कि त्रुजिलो और दियेम दोनों तानाशाहों को हटाने के प्रयासों की जानकारी राष्ट्रपति कनैडी को थी। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है। 30 अक्तूबर, 1963 को सैगोन स्थित अमेरिकी राजदूत ने वाशिंगटन को सूचना दी थी कि द० वियतनाम के प्रमुख नेता भागने के लिए विमान माँगने की प्रार्थना कर सकते हैं। 1 नवम्बर को दियेम ने विमान की प्रार्थना की, परन्तु सी० आई० ए० ने 24 घण्टों में पहले विमान न दे पाने की असमर्थता दिखायी। उसके एक घण्टे बाद ही दियेम की हत्या विरोधियों द्वारा कर दी गयी। क्या सचमुच सी० आई० ए० विमान देने में असमर्थ था, और अगर 24 घण्टे वाली बात मान लें तो राजदूत स्वयं पहले सूचित कर चुके थे।

सन् 1960 से 1965 तक क्यूबा के प्रधानमन्त्री फिदेल कास्त्रो की हत्या के आठ प्रयास किये गये। यह बात और है कि कोई भी प्रयास सफल नहीं हो पाया। मगर सी० आई० ए० के तत्कालीन निदेशक के शब्दों में स्पष्ट संकेत है। मेरा विश्वास है कि उस समय हमारी नीति कास्त्रो

से पीछा छुडाने की थी। "समिति के समक्ष उन्होने कहा कि कनैडी प्रशासन जितना दबाव डाल रहा था, उससे हम लोग इस नतीजे पर पहुँचे कि कास्त्रो की हत्या निषिद्ध नहीं है।" अन्य लोगों ने अपनी गवाही में कहा कि कास्त्रो से जल्दी पीछा न छुडा पाने के कारण कनैडी बन्धु सी० आई० ए० निदेशक रिचर्ड हैल्म्स से नाराज थे। जबकि उनका एकमात्र दोष प्रयासो मे सफल न हो पाना था।

1960 मे कास्त्रो के मनपसन्द ब्राण्ड सिगारो के पैकेट भेजे गये। सिगार जहरीले थे। परन्तु सी० आई० ए० एजेन्ट कास्त्रो के होंठो तक पहुंचाने की व्यवस्था न कर पाए। इसके बाद सी० आई० ए० ने बदनाम और विश्वविख्यात अपराधी सस्था माफिया के दो सरदारो को कास्त्रो की हत्या का काम सौंपा। एटार्नी जनरल एबर्ट कनैडी के पास अमेरिका के सबसे खतरनाक 10 अपराधियों के नाम भी थे जिनमें उन दोनो के नाम भी थे। परन्तु वे भी असफल रहे। कास्त्रो को जहर मे डूबी पोशाक भेंट करने की योजना भी असफल रही। जिस दिन राष्ट्रपति कनैडी की हत्या हुई, उस दिन भी रावर्ट कनैडी का प्रतिनिधि क्यूबा स्थित एक एजेन्ट से कास्त्रो की हत्या के उपायों पर बातचीत कर रहा था।

यह आवश्यक नहीं है कि सी० आई० ए० स्वय ही सब कामो मे दिलचस्पी ले, वह अन्य महाशक्तियो के माध्यम से भी अपने षड्यन्त्रो को कार्यान्वित करता रहता है।

16 अगस्त दोपहर को मोरक्को के शाह हसन द्वितीय वर्सीलोना मे स्पेन के विदेश मन्त्री से राजनैतिक विचार-विमर्श और खाने के बाद अपने निजी विमान बोइंग 727 अपनी राजधानी राबात के लिए रवाना हुए और 4 बजते-बजते वह मोरक्को के उत्तरी तट पर स्थित तैतुआना से गुजरा।

तभी मोरक्को की शाही सेना के चार नार्थोप एफ-4 विमान आगे बढे। शाही बोइंग के यात्रियों को लगा कि अगवानी करने के लिए आए है। परन्तु उन चारों विमानों ने धुआंधार गोलियां बरसानी शुरू कर दीं। तथा बोइंग को नष्ट करने के लिए आगे झपटे।

नार्थोप एफ-4 विमानों से तोप के गोले छूट रहे थे। 20 मिलीमीटर

की तोप और हवा से हवा मे मार करने वाले प्रक्षेपास्त्र शाही विमान को तहस-नहस करने मे लगे हुए थे। बोइंग के तीन इंजिनो मे से दो ने काम करना बन्द कर दिया था। उसके कई हिस्सो मे गोलियों से सूराख हो गये। परन्तु वह जैसे-तैसे उडता रहा। डेढ सौ मील थी राजधानी रावात। शाही बोइंग उस हमले के घेरे से बचकर कभी भी रावात न पहुँच पाता अगर शाह हसन स्वय थोडा चालाकी से और समझ से काम न लेते। हमला शुरू होने के दो मिनट बाद ही शाह हसन अपनी जगह से उठे और बोइंग के रेडियो टेलीफोन से हमलावर विमानो को सन्देश देने लगे —हैलो-हैलो, मै बोइंग का मैकेनिक बोल रहा हूँ—हैलो, पायलट गोली से मर चुका है, और शाह बुरी तरह से जख्मी है, बचने की कोई उम्मीद नही है लेकिन विमान मे 100 यात्री और है आप अपना मकसद पूरा होने के बाद भी उनकी जान लेने पर क्यों तुले है। वे निरपराध है।" और शाह हसन की यह युक्ति काम कर गई। हमलावर नार्थोप-एफ-5 विमानो ने हमला रोक दिया तथा बोइंग रावात की ओर उड चला।

उधर रावात के हवाई अड्डे पर शाह के आगमन की पूरी तैयारियाँ। कई मन्त्री, शाही सेना के सेनाध्यक्ष, सलामी देने वाली सेना की टुकडियाँ राजनयिक प्रतिनिधि। इन्ही सबके साथ रक्षामन्त्री, जनरल ओफकीर खडे थे। शाही विमान के पहुँचने मे थोडी देर थी कि ओफकीर को वायुसेना कार्यालय से कोई सदेश मिला वे तुरन्त स्वागत कक्ष से निकल-कर वायुसेना के नियन्त्रण कक्ष की ओर चल पडे।

शाही विमान 4 बजकर 35 मिनट पर रावात हवाई अड्डे पर उतरा। कारो के काफिले के साथ कार में बैठकर शाह स्वागत कक्ष तक पहुँचे। सारी औपचारिकता के बाद वह बताने लगे कि शाही विमान पर क्या गुजरी। फिर अचानक एक बार पूछा—लेकिन जनरल ओफकीर कहाँ है?

डा० मोहम्मद बेन हीमा उठकर और मे बैठे और ओफकीर द्वारा दी गई सूचना के अनुसार वायुसेना के नियन्त्रण कक्ष की ओर चल पडे। कुछ देर बाद डा० हीमा वापिस लौटे सकेते और बोले ओफकीर वायुसेना कक्ष मे स्थल सेना के मुख्यालय चले गये है।"

प्रतिरक्षा मन्त्री के लिए यह उचित ही था कि मुख्यालय जाकर विद्रोहियों को कुचलने की पूरी व्यवस्था करते। लेकिन डा० हीमा की सूचना के बाद शाह स्वागत कक्ष में क्षण-भर को भी नहीं ठहरे। उनको लगने लगा कि वह चारों ओर से घिर चुके हैं। अपने अत्यन्त विश्वास-पात्रों के जत्थे के साथ वे हवाई अड्डे से कुछ दूर स्थित घने जंगल की ओर चल पड़े। शाह की शंका गलत नहीं थी। कुछ ही क्षणों में राबात हवाई अड्डे पर तीन एफ-5 विमान मंडराने लगे। वे धीरे-धीरे काफी नीचे आ गये और 20 मिलीमीटर की तोपों से स्वागत कक्ष पर गोले बरसाने लगे। गोलों ने स्वागत कक्ष की खिड़कियों के कांच चकनाचूर कर दिये जिसमें कुछ क्षण पहले शाह हसन खड़े हुए थे। हवाई अड्डे के बाहर खड़ी कारें व जीपें नष्ट हो गयीं और 45 आदमी जख्मी हुए। गोलाबारी का सिलसिला 1 घंटे तक चलता रहा। जब विमान लौट गये तब शाह तुरन्त कार में बैठकर 20 मील दूर सखीरात स्थित गर्मियों में रहने के महल की ओर भागे।

उधर शाह के विश्वासपात्र गृह मन्त्री डॉ० बेन हीमा, ओऊफकीर को खोजते हुए स्थल सेना के मुख्यालय पहुंचे, परन्तु वहां से सूचना मिली कि ओऊफकीर हवाई अड्डे के आसपास स्थित सैनिक प्रतिष्ठानों को देखने चले गये हैं। काफी दौड़-धूप करने के बाद ओऊफकीर मिल गये तो डॉ० हीमा ने सारा विवरण कह सुनाया और कहा—"हमें शाह को देखने के लिए तुरन्त हवाई अड्डे पर चलना चाहिए।" ओऊफकीर ने स्वीकृति में सिर हिलाया और डॉ० बेन हीमा के साथ हवाई अड्डे पर पहुंच गये। विमान गोलाबारी बन्द कर चुके थे और शाह सखीरात पहुंच चुके थे।

सखीरात जाने का फैसला शाह ने तुरन्त किया था। वैसे शाह विदेशों से लौटने पर तूमार्रा के महल जाना पसन्द करते थे क्योंकि वहां से शासन का कार्य भली-भांति चलाया जाता था। सखीरात तो 20 मील दूर था। तथा शाह का विलास भवन है। विद्रोहियों का अनुमान था कि शाह तूमार्रा ही पहुंचेंगे। सो तूमार्रा प्रासाद पर विद्रोही विमान दनादन गोलियां और रॉकेट बरसाने लगे।

जब यह गोलाबारी हो रही थी तब तक मोरक्को की सशस्त्र पुलिस सक्रिय हो चुकी थी और गृह मन्त्री डॉ० हीमा के पास सूचनाएँ आने लगी थी। डॉ० हीमा सारी सूचनाएँ ओऊफकीर को देते रहे। पहली सूचना यह आयी की गोलाबारी करने वाले एफ एफ-5 विमान से उतरता एक विमान चालक गिरफ्तार कर लिया गया है। गृह मन्त्री ने तुरन्त आदेश दिया फिर उसको प्रतिरक्षा मन्त्री ओऊफकीर के पास भेज दिया जाये। लेकिन तभी एक सूचना और आयी कि पाँच आदमी को लेकर एक हैलिकोप्टर सेना के हवाई अड्डे के निकट से उड़कर जिब्राल्टर गया है उन पाँच में से दो सैनिक अधिकारी हैं। उन्होंने जिब्राल्टर में ब्रिटिश अधिकारियों को बताया कि हम शाह का तख्ता पलटना चाहते थे लेकिन अब जिब्राल्टर में शरण चाहिए उन दो में से एक था लैफ्टिनेंट कर्नल आमक्रोन। केवल उसी ने अंग्रेजों को अपना नाम बताया था कहा था कि मैंने अपने वरिष्ठ जनरल के आदेश से शाह के विमान पर हमले का नेतृत्व किया।

जब डॉ० हीमा के आग्रह पर जिब्राल्टर के ब्रिटिश अधिकारियों ने दबाव डाला तब आमक्रोन ने बताया कि उनके नाम का पहला अक्षर 'ओ' से शुरू होता है तथा वह डॉ० बेन हीमा के गहरे दोस्त है।

बेन हीमा चकित रह गये ओऊफकीर प्रतिरक्षा मन्त्री शाह के अत्यन्त विश्वासपात्र ओऊफकीर विद्रोह के सूत्रधार। बेन हीमा ने तुरन्त जनरल से सम्पर्क किया और पूछा कि एक विमान चालक यह सब बक रहा है। और कह रहा है कि यह सब आपके आदेश से हुआ। ओऊफकीर ने कहा, यह यह सब अपनी जान बचाने के लिए बक रहा होगा परन्तु ओऊफकीर पर क्या बीती? कहीं जल्दी अमेरिका और ब्रिटेन की साजिश प्रकाश में न आ जाये। क्योंकि ओऊफकीर कामयाब नहीं हो पाये थे।

"रात 11 बजे। जनरल ओऊफकीर शाह हसन के भाई मौले अब्दुल्ला के भवन में घुसे। वहाँ जनरल मौले हाफिद और कर्नल दलीमी मौजूद थे। ओऊफकीर को स्थिति को भाँपते देर नहीं लगी। उन्होंने अपना रिवाल्वर निकाला और कहा, "मैं जानता हूँ कि मेरे साथ क्या होने वाला है, जनरल मौले हाफिद और दलीमी ने काफी कोशिश की कि

श्रोऊफकीर आत्महत्या न कर पाएँ परन्तु रिवाल्वर मे तीन गोलियाँ चली और श्रोऊफकीर वहीं ढेर हो गये। शाह की ओर से कहा गया है कि श्रोऊफकीर शाह के 9 साल के बेटे को गद्दी पर बैठा कर स्वयं सत्ता सँभालना चाहते थे। जबकि शाह हसन द्वितीय ने सामन्तवादियों, जमींदारों और रईसों को खुश रखकर शाह हसन ने मोरक्को के निर्वासित वामपन्थी नेता बेन बर्का की पेरिस मे हत्या करवा दी थी।

राजनैतिक उथल-पुथल करने के लिए सी० आई ए० एजेन्ट प्रत्येक राष्ट्र मे मौजूद रहते हैं और समय आने पर स्वयं भी मैदान में उतर पड़ते हैं। बोलिविया के राष्ट्रपति बेरेंतम ने 1969 मे स्वीकार किया था कि चे ग्वेरा के विरुद्ध सैनिक कार्यवाही मे सी० आई० ए० ने पूरी तरह से हिस्सा लिया था जबकि पत्रकारों ने 1967 मे ही इस बात की आशंका प्रकट की थी किन्तु राष्ट्रपति उस समय साफ इंकार कर गये जबकि दो साल बाद ही उन्होंने इस तथ्य को स्वीकारा कि सैनिक वर्दी मे सी० आई० ए० सक्रिय था।

चे ग्वेरा के विरुद्ध सैनिक कार्यवाही करने वाले जनरल जैतेनों ने बाद मे एक फौजी अदालत मे स्वीकार किया था कि अक्टूबर' 67 मे दो क्यूबन फेलिक्स रेमस और एडगार्डो सो जाल्गिम भी थे। दोनों पूरे अभियान मे इनके साथ साये की तरह रहे। क्योंकि ये सी० आई० ए० के खास आदमी रहे। इन्हे साथ रहने की अनुमति उच्च स्तर पर हुई बातचीत के बाद मिली थी। चे को गोली लगने के बाद इन्होंने चे की डायरी की फोटो कापी वाशिंगटन भेज दी थी, जबकि बोलीविया के अधिकारी ऐसी डायरी से बिलकुल अनभिज्ञ थे। जो बाद में काट-छाँट करने के बाद छापी भी गयी। वियतनाम और लाओस मे सी० आई० ए० की गतिविधियाँ तमाम मानव-मूल्यों को तोड़कर मूल्यहीन बना चुकी हैं। कम्बोडिया मे सिहानुक सरकार का पतन, जार्ज पापा-दो पोलास का यूनान मे शासन तथा यूनान मे बार-बार की उठा-पटक इसी संस्था का कमाल है। साइप्रस को लेकर सी० आई० ए० दो बार मुँह की खा चुका है जबकि इस क्षेत्र में तुर्की और यूनान दोनों ही अमेरिका के दोस्त राष्ट्र हैं। दोनों ही अपनी गिद्धदृष्टि साइप्रस पर जमाये हैं। अत. शक्ति-सन्तुलन बनाये रखने के लिए

सम्पादक-मंडल से इस्तीफा दे दिया था। अमेरिकी गुप्तचर अधिकारियों ने पाया कि शान्ति 'स्वतन्त्रता' और 'न्याय' जैसे शब्द वामपन्थी खेमे में नारे बन गये हैं तो एलन डलेस और टामस ब्रेडन चौकन्ने हो गये, क्योंकि बुद्धिजीवी शब्द पश्चिम यूरोप में खास महत्त्व रखता था। फ्रांस और इटली में वामपन्थी मजबूत होते जा रहे थे। इसलिए सांस्कृतिक मोर्चा खोलना आवश्यक था। इन मोर्चों का एकमात्र ध्येय बौद्धिक-भ्रमवाद का प्रचार व वामपन्थियों में घुसपैठ करके लेखकों, युवाओं एवं पत्रकारों में अपनी अदृश्य लॉबी तैयार करके 'बौद्धिक शब्द जाल' में फांसना था।

सो आज हम एक ऐसे भ्रमवादी अंधेरे से गुजर रहे हैं, जहां से सही निर्णय लेना एक अनहोनी बात लगने लगी। जिस देश के बुद्धिजीवियों और राजनेताओं को ही भ्रमवाद फैलाने का काम सौंप दिया जाये, तो उस देश की आने वाली पीढ़ी से क्या आशा की जा सकती है? इतना ही नहीं पूंजीवाद के सामने आज जो साम्यवाद फैल रहा है उसको रोकने के लिए पूंजीवादी देशों के पास अब केवल दो ही कारगर हथियार शेष हैं। एक बौद्धिक भ्रमवाद का शब्द जाल फैलाकर आने वाली पीढ़ी के मस्तिष्क को भ्रष्ट एवं दिवालिया बना देना या आतंक और लाभ में डालकर संघर्ष के रास्ते से हटाकर समझौतावादी और पिछलग्गू बना देना। दूसरा हथियार इससे कहीं अधिक कारगर सिद्ध हो रहा है, वह है पश्चिमी देशों के अनुरूप प्रगतिशील राष्ट्रों की युवा-पीढ़ी के समक्ष यौन आकर्षण पैदा करना, भले ही इससे अन्य झमेले खड़े हो जाएं। इसीलिए पूंजीवादी राष्ट्रों में सौन्दर्य प्रतियोगिता वेशभूषा प्रतियोगिता और यौन उन्मुक्तता प्रदान की जाती है जब कि साम्यवादी राष्ट्रों में नारी को स्वतन्त्रता और समानाधिकार प्राप्त होते हुए भी इस प्रकार के वातावरण से अछूता रखा जाता है! यौन उन्मुक्तता और इसी प्रकार के अन्य कार्यक्रमों की पूंजीवादी राष्ट्रों में प्रधानता होने के कारण युवा-पीढ़ी मानसिक रूप से भ्रष्ट हो चुकी होती है या इन सब आकर्षणों को प्राप्त करने के प्रयास में होती है। जीवन के इन वर्षों में कुछ कर गुजरने का उत्साह और इच्छा होती है जो इस तरह से गलत दिशा की ओर मोड़ दी जाती है।

वह यौन आकर्षणों को महयोग देने या फिर प्राप्त करने में गुजर जाते हैं। रोटी का संघर्ष उसके सामने सुविधावादी जीवन का संघर्ष बन जाता है। मार्क्सवाद के प्रचार और प्रसार को रोकने के लिए पूंजीवादी राष्ट्रों ने फ्रायड का प्रयोग ढाल की तरह किया है जिसका महत्त्वपूर्ण प्रभाव प्रगतिशील राष्ट्रों पर पड़ा तथा प्रगतिशील राष्ट्रों में चेतना के आधार पर एक प्रवृत्ति बन उभर रहा है।

भावुक राजनीतिज्ञ

नौ वर्ष की अवस्था तक भुट्टो घर पर ही रहे। यह समय किसी भी बच्चे के मन-मस्तिष्क पर पड़ने वाले प्रभावों का सबसे नाजुक समय होता है। परिवार में सभी प्रकार की सुविधाएँ होने के साथ ही साथ राजनैतिक वातावरण भी बना रहता था जिसका भुट्टो के मन पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। नौ वर्ष की आयु तक आते-आते वह भावनाओं और विचारों को भी समझने लगा। अभी तक उसकी शिक्षा घर के ही वातावरण में हो रही थी। घर का वातावरण प्यार और स्नेह का जो वातावरण बना होता है वह स्कूल के वातावरण से सर्वथा भिन्न होता है। प्यार और स्नेह के वातावरण में भुट्टो का मन अछूता नहीं रहा, और भुट्टो के मन पर भावुकता की एक पर्त चढ़ गयी। यूँ सभी बच्चे बचपन में भावुक और जिद्दी होते हैं—यह प्रभाव भुट्टो के जीवन पर सदैव बने रहे। सभी इच्छाएँ सम्पन्न परिवार होने के कारण आसानी से पूरी हो जाती थी ! जो पूरी हो जाती थे अनिगिनत इच्छाएं भुट्टो के मन में पैदा करती ! इस कारण भुट्टो में महत्वाकांक्षी होने की इच्छा घर कर गयी जो उसके जीवन में सदैव बनी रही ! सम्पन्न परिवार की आदतें व स्वभाव भुट्टो में स्वाभाविक ढंग से विकसित हुए।

नौ वर्ष की आयु में ही उसने अपने विचार प्रकट करने शुरू कर दिए। वह भी गुस्से और दबाव के साथ भुट्टो जब कैथेड्रल बुआज स्कूल में प्रवेश लेने आया तो प्रिंसिपल कर्नल हैमण्ड ने अपने विचार सुनाये

उनका विचार था कि भुट्टो का गर्ल्स स्कूल की फर्स्ट स्कूल में ले लिया जाए ! इसका अर्थ शायद यह था कि भुट्टो देखने में नाजुक, भावुक और काफी शर्मीला लगता था।

परन्तु भुट्टो यह सुनते ही गुस्से में भड़क उठा। भुट्टो को लाल-पीला देख कर्नल हैमण्ड ने कहा, "शाबास, लड़के ऐसा ही होना चाहिए।" हैमण्ड के वाक्य से लगता है—देखने में भुट्टो लड़कियों जैसा लगता था ! परन्तु आवाज और अभिव्यक्ति दृढ़ और अडिग बच्चे-सी थी वरना हैमण्ड अपने विचार इतनी जल्दी न बदलते।

भुट्टो सिन्ध के जिस परिवार का सदस्य था वह आज भी सामन्तवादी समाज बना हुआ है परन्तु भुट्टो के पिता इतने कठोर सामन्तवादी न होकर थोड़ा स्वतन्त्र विचार वाले व्यक्ति थे जिनका सहयोग भुट्टो को लगातार मिलता रहा। सर शाहनवाज भुट्टो ने उच्चशिक्षा प्राप्त करके और अपने परिवार की अर्जित प्रतिष्ठा का उपयोग करते हुए, उन्होंने ब्रिटिश-भारत समाज में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त करके रूढ़िवादी सामाजिक प्रतिबन्धनों से मुक्त कर लिया था।

भुट्टो के स्कूली दिन बहुत अच्छे नहीं गुजरे, उसका कारण था घर पर शिक्षा, जिसने उसके मन पर प्रभाव ना छोड़े, परन्तु स्कूल के बच्चों में पिछड़ गया। फलस्वरूप अन्य छात्रों के साथ बने रहने के लिए उसको अनिश्चित परिश्रम करना पड़ा। वह पिछड़ना नहीं चाहता था जो सामन्तवादी पैतृक स्वभाव था ! यह स्वभाव भी भुट्टो में विकसित हो गया था, परिश्रम करना उसने अपने पिता के द्वारा बार-बार दोहराये जाने वाले वाक्यों में सीखा। 16 वर्ष की उम्र तक आते-आते भुट्टो काफी अच्छी अंग्रेजी बोलने लगा। 'स्मार्ट' तथा हँसमुख रहने लगा, क्रिकेट, संगीत और नृत्य के प्रति भी रुचि पैदा हुई। बढ़िया कपड़े, बढ़िया खाना, बढ़िया किताबें, और बढ़िया फिल्मों का शौक भी विकसित होकर सामने आ गया। यह सब होने के बावजूद भुट्टो के छुई-मुई बने रहने के स्वभाव में अधिक अन्तर नहीं आया ! वह किसी भी बात पर जल्दी ही नाराज हो जाता। अपनी नाराजगी खूब तेज और ऊँची आवाज में चीख-चिल्लाकर प्रकट करता। रोने और सिसकने भी लगता ! भुट्टो का यह व्यवहार आगे चलकर

व्यक्तित्व का एक हिस्सा बन गया। वह जान गया कि राजनीति में कब चीखना चाहिए और कब चुप रहना।

कोई भी खेल हो, हँसी-मजाक हो, मुट्टो सब में सहयोग देता अपने दोस्तों के साथ घूमता। उन दिनों अनेक विषयों पर वह भर उत्साह से वाद-विवाद में हिस्सा लेता। बारी-बारी से दोस्तों को छेड़ता। अनेक प्रश्न पूछता छोटी-छोटी बातों का विवरण आत्मसात करता। उन दिनों वह विषय, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजनीति, संगीत, कला और अर्थ-शास्त्र होते। वह दोस्तों से अन्य देशों और देशवासियों के बारे में भी बात करता। प्रतिदिन होनेवाली घटनाओं और उनसे सम्बन्धित अनुभव भी वह बिना हिचक दोस्तों से सुनाता, उस समय के दोस्तों में राम ललवानी, पीलू मोदी, मुम्तान तैयब जी, धर्म जी, अरिफ करीम भाई और ऐंग्लो-फ्रेंच दम्पति के बच्चे एंजिलस, फैलीसित फिनिस्तर आर्मस्ट्राग भी होते।

मुट्टो दस आयु तक पहुँचते-पहुँचते कुशाग्रबुद्धि हो गया। अपने विचार प्रकट करना, सुनना और समझना उसकी आदत का एक अंग बन गया था। उसकी स्मरण शक्ति भी अच्छी हो गयी, ज्ञान-प्राप्ति की इच्छा ने भी असीम रूप ले लिया। इतना सब कुछ होने के बाद भी वह सीनियर कैम्ब्रिज परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो गया, जिसका उसके मन पर काफी बोझ रहा। उसका मन उचट गया। परन्तु इससे वह निराश बिल्कुल नहीं हुआ। इन्हीं दिनों मुट्टो के मन को एक धक्का और लगा। मुट्टो अपनी छोटी बहिन को बहुत स्नेह करता था। अचानक छोटी बहिन की मृत्यु हो गयी, मुट्टो को इसका अत्यन्त दुख हुआ और दुनिया नीरस व निस्तेज दीखने लगी। मुट्टो इस सबसे अत्यन्त दुखी तो हुआ परन्तु निराश नहीं। वह पढ़ाई में और भी अधिक एकाग्रता से जुट गया। यहाँ तक कि उसने 6 महीने तक प्रत्येक दोस्त से मिलना-जुलना बन्द कर दिया। उसके मन में यहीं से किसी भी पद एवं वस्तु को प्राप्त करने की असीम लालसा के भाव पैदा हो गये और परिश्रम को मुट्टो लक्ष्य-प्राप्ति का महत्त्वपूर्ण माध्यम मानने लगा। 1946 में उसने सीनियर कैम्ब्रिज उत्तीर्ण कर ली। इससे उसके मन में आशा और महत्त्वाकांक्षा का भाव

पुनः संचारित हुआ।

1946 के ही दिनों में मुट्टो का प्रेम भी एक लड़की से हो गया जो आध्यात्मिक और प्लेटोनिक था। फिर भी यह प्रेम मुट्टो के जीवन का परम लक्ष्य बन गया जो उस नाजुक संवेदनशील आयु का प्रभाव था। परन्तु इस प्रेम को वह उम्र-भर भूल नहीं पाया। मुट्टो उस लड़की को हृदय से प्रेम तो करता ही था बल्कि वह 'प्रेम करता है' इस अहसास ने उसको और भी भावुक और संवेदनशील बना दिया। वह फिर दुःखी रहने लगा, उसका कारण था कि लड़की के परिवार के संरक्षकों को मुट्टो नापसन्द था। मुट्टो को नापसन्द नहीं कहना चाहिए बल्कि, जैसाकि आज भी होता है कि परिवार के संरक्षकों को प्रेम-व्रेम जैसी हरकतें उनको पसन्द नहीं आतीं, तो लड़की के परिवारवालों को भी न आनी थी न आयी और उन्होंने लड़की के ऊपर मुट्टो से मिलने पर प्रतिबन्ध लगा दिया। अब वह दोनों कोई बात तो क्या करते एक-दूसरे को देख भी न पाते जबकि मुट्टो मिलने के कई उपाय सोचता रहता, जिसका उद्देश्य यही होता कि वह किसी तरह लुक-छिपकर मिल ले। यह बहुत अजीब दुःख की बात थी मुट्टो हृदय से बेतहाशा उस लड़की को चाहता, लेकिन लड़की के परिवार वाले मुट्टो के बेइन्तहा खिलाफ रहते। मुट्टो इस सबसे परेशान और बेचैन रहता, बाद के जीवन पर भी यह छाप पड़ी रही। मुट्टो पर्याप्त अनुभवी और दुनियादार होने के बावजूद वह लड़की मुट्टो के अन्तरपल और अन्तर्मन पर बनी रही। इस घटना का प्रभावकारी प्रभाव मुट्टो पर यह पड़ा कि वह सामाजिक बुराइयों का विरोधी हो गया क्योंकि उसकी शिक्षा इस प्रकार के बन्धनों से मुक्त, आधुनिक परिवेश में हो रही थी, और परिवार में भी इस प्रकार के वातावरण में रहना था। परिवार धर्म में आस्था और विश्वास रखता था जिसका पर्याप्त प्रभाव मुट्टो के मन पर भी था, इन सारी परिस्थितियों ने मुट्टो के जीवन में अपने धर्म पर आस्था दूसरों के परम्परावादी विचारों से असहमति, रूढ़िवादी परम्पराओं से संघर्ष और ऐसे व्यक्तित्व की रचना के बीज रोपे थे, जो भविष्य में अंकुरित होकर प्यार, नफरत, मित्रता और संघर्ष करने की प्रवृत्ति की ओर अग्रसर हो सके। किसी भी आदमी में इन सब प्रवृत्तियों का मिलना

व्यक्तित्व का एक हिस्सा बन गया। वह जान गया कि राजनीति में कब चीखना चाहिए और कब चुप रहना।

कोई भी खेल हो, हँसी-मज़ाक हो, भुट्टो सब में सहयोग देता अपने दोस्तों के साथ घूमता। उन दिनों अनेक विषयों पर वह भर उत्साह में वाद-विवाद में हिस्सा लेता। बारी-बारी से दोस्तों को छेड़ता। अनेक प्रश्न पूछता छोटी-छोटी बातों का विवरण आत्मसात करता। उन दिनों वह विषय, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजनीति, संगीत, कला और अर्थ-शास्त्र होते। वह दोस्तों से अन्य देशों और देशवासियों के बारे में भी बात करता। प्रतिदिन होनेवाली घटनाओं और उससे सम्बन्धित अनुभव भी वह बिना हिचक दोस्तों में सुनाता, उस समय के दोस्तों में राम लालवानी, पीलू मोदी, मुस्तान तैयब जी, धर्म जी, अरिफ करीम भाई और ऐंग्लो-फ्रेंच दम्पति के बच्चे एंजिल्स, फैलीमित फिनिस्तर आर्मस्ट्रांग भी होते।

भुट्टो इस आयु तक पहुँचते-पहुँचते कुशाग्रबुद्धि हो गया। अपने विचार प्रकट करना, सुनना और समझना उसकी आदत का एक अंग बन गया था। उसकी स्मरण शक्ति भी अच्छी हो गयी, ज्ञान-प्राप्ति की इच्छा ने भी असीम रूप ले लिया। इतना सब कुछ होने के बाद भी वह सीनियर कैम्ब्रिज परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो गया, जिसका उसके मन पर काफी बोझ रहा। उसका मन उचट गया। परन्तु इससे वह निराश बिल्कुल नहीं हुआ। इन्हीं दिनों भुट्टो के मन को एक धक्का और लगा। भुट्टो अपनी छोटी बहिन को बहुत स्नेह करता था। अचानक छोटी बहिन की मृत्यु हो गयी, भुट्टो को इसका अत्यन्त दुख हुआ और दुनिया नीरस व निस्तेज दीखने लगी। भुट्टो इस सबसे अत्यन्त दुखी तो हुआ परन्तु निराश नहीं। वह पढ़ाई में और भी अधिक एकाग्रता से जुट गया। यहाँ तक कि उसने 6 महीने तक प्रत्येक दोस्त से मिलना-जुलना बन्द कर दिया। उसके मन में यहीं से किसी भी पद एवं वस्तु को प्राप्त करने की असीम लालसा के भाव पैदा हो गये और परिश्रम को भुट्टो लक्ष्य-प्राप्ति का महत्त्वपूर्ण माध्यम मानने लगा। 1946 में उसने सीनियर कैम्ब्रिज उत्तीर्ण कर ली। इससे उसके मन में आशा और महत्त्वाकांक्षा का भाव

पुन संचारित हुआ।

1946 के ही दिनो में मुट्टो का प्रेम भी एक लडकी से हो गया जो आध्यात्मिक और प्लेटोनिक था। फिर भी यह प्रेम मुट्टो के जीवन का परम लक्ष्य बन गया जो उस नाजुक संवेदनशील आयु का प्रभाव था। परन्तु इस प्रेम को वह उम्र-भर भूल नही पाया। मुट्टो उस लडकी को हृदय से प्रेम तो करना ही था बल्कि वह 'प्रेम करता है' इस अहसास ने उसको और भी भावुक और संवेदनशील बना दिया। वह फिर दु:खी रहने लगा, उसका कारण था कि लडकी के परिवार के सरक्षको को मुट्टो नापसन्द था। मुट्टो को नापसन्द नही कहना चाहिए बल्कि, जैसाकि आज भी होता है कि परिवार के सरक्षकों को प्रेम-त्रेम जैसी हरकतें उनको पसन्द नही आती, सो लडकी के परिवारवालो को भी न आनी थी न आयी और उन्होंने लडकी के ऊपर मुट्टो से मिलने पर प्रतिबन्ध लगा दिया। अब वह दोनो कोई बात तो क्या करते एक-दूसरे को देख भी न पाते जबकि मुट्टो मिलने के कई उपाय सोचता रहता, जिसका उद्देश्य यही होता कि वह किसी तरह लुक-छिपकर मिल ले। यह बहुत अजीब दु ख की बात थी मुट्टो हृदय से बेतहाशा उस लड़की को चाहता, लेकिन लडकी के परिवार वाले मुट्टो के बेइन्तहां खिलाफ रहते। मुट्टो इस सबसे परेशान और बेचैन रहता, बाद के जीवन पर भी यह छाप पडी रही। मुट्टो पर्याप्त अनुभवी और दुनियादार होने के बावजूद वह लडकी मुट्टो के अन्तस्थल और अन्तर्मन पर बनी रही। इस घटना का प्रभावकारी प्रभाव मुट्टो पर यह पडा कि वह सामाजिक बुराइयो का विरोधी हो गया क्योंकि उसकी शिक्षा इस प्रकार के बन्धनो से मुक्त, आधुनिक परिवेश मे हो रही थी, और परिवार मे भी इस प्रकार के वातावरण में रहता था। परिवार धर्म मे आस्था और विश्वास रखता था जिसका पर्याप्त प्रभाव मुट्टो के मन पर भी था, इन सारी परिस्थितियो ने मुट्टो के जीवन में अपने धर्म पर आस्था दूसरो के परम्परावादी विचारों से असहमति, रुढ़िवादी परम्पराओ से संघर्ष और ऐसे व्यक्तित्व की रचना के बीज रखे थे, जो भविष्य मे अंकुरित होकर प्यार, नफरत, मित्रता और संघर्ष करने की प्रवृत्ति की ओर अग्रसर हो गये। किसी भी आदमी मे इन सब प्रवृत्तियों का मिलना

इसके बाद वह फिर बम्बई आये और बम्बई मे स्थित सिंध लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष बने। इस राजनैतिक दृश्य का प्रभाव भी भुट्टो पर था, सिन्ध को बम्बई से अलग होने की सार्थकता पर उनने ध्यान भी दिया था। राजनीति में आने से पहले ही वह सिंध का नेता समझने लगा, बाद मे इस ओर काम भी शुरू किया।

1945 मे पाकिस्तान एक सपने और विचार की तरह से उभरा, 1946 में पाकिस्तान का बनना एक उन्माद और जुनून की तरह से मुस्लिम के मन में घर कर गया और 1947 में वह एक कटु सत्य के साथ-साथ सामने आ गया। इन दिनो भुट्टो भारत से बाहर पाकिस्तान से दूर थे और भारत-पाकिस्तान सम्बन्धित हर समाचार को ध्यान से पढते थे। बार-बार इधर-उधर की बातों के बाद बातें भारत और पाकिस्तान की राजनीति पर आ ठहरती थी। पाकिस्तान मिस्टर जिन्नाह की बुद्धि कौशलता और चतुराई का ही परिणाम नही था बल्कि बहुत कुछ दोष कांग्रेस के फूहडपन गँवारू तथा उजड्ड परिणामों को भी मिलता है जो उसने साम्प्रदायिक गारटी देने के तौर पर अपनाया था। सर स्टैफोर्ड क्रिप्स के प्रस्ताव जब सामने आये तो उसमे इस बात का कही उल्लेख नही था कि युद्ध की समाप्ति के बाद भारत अपने आप स्वाधीन हो जायेगा। मौलाना अबुल कलाम आजाद ने लिखा—मैं साफ-साफ देख रहा हूँ कि ब्रिटेन युद्धकाल में सत्ता सौपने को बिल्कुल तैयार नहीं है। युद्ध की परिस्थितियो और अमेरिकी दबाव के कारण ब्रिटेन के रवैये मे अन्तर आया है, परन्तु युद्धकाल मे यह जोखिम उठाना खतरो से खाली नही है, ब्रिटिश सरकार यह खतरा उठाने को तैयार नहीं। चर्चिल सरकार भी यह महसूस कर रही थी कि भारत को स्वेच्छा से युद्ध मे सहयोग करने का अवसर मिलना चाहिए। इसी कारण एक एग्जिक्यूटिव कौंसिल का प्रस्ताव भी आया जिसमे केवल भारतीय हो। कौंसिल को अधिक अधिकार देने के पक्ष पर भी विचार किये गये। परन्तु कौंसिल अधीनस्थ कर्मचारियों के तौर पर काम करती। सो यह प्रस्ताव असफल हो गया। भारत की स्वधीनता सम्बन्धी जो प्रस्ताव आ रहे थे, जो आश्वासन मिल रहे थे उनके बीच एक बड़ी दीवार खड़ी थी। ब्रिटेन का

महायुद्ध में विजय पाना एक सपना था, चर्चिल अब भी ब्रिटिश सरकार के उच्च पद पर थे। अगर क्रिप्स प्रस्ताव पास हो जाता तो क्रिप्स तुरन्त भारत से अपने उदारतावादी स्वभाव के कारण प्रस्ताव मंजूर करवाकर विदा ले लेते। क्रिप्स आयोग के प्रस्ताव के विफल होने के कारण स्थिति इतनी बिगड उठी जिसके परिणाम इतने खराब हुए जिसकी कल्पना ब्रिटेन मे नही की गयी थी।

भारत की राजनीति में कुछ देर निष्क्रियता और बेचैनी के बाद ऐतिहासिक नारा, 'भारत छोड़ो' का सूत्रपात हुआ, और आन्दोलन के रूप में आग पकड़ गया। वहाँ ब्रिटिश सरकार और कांग्रेस दोनों आमने-सामने आ गये। अब महायुद्ध ने मित्र राष्ट्रों की ओर करवट नही ली थी। 'भारत छोडो', आन्दोलन के दौरान ब्रिटिश सरकार का प्रतिनिधित्व लार्ड लिनलिथगो कर रहे थे। परन्तु इसी बीच महायुद्ध ने मित्र राष्ट्रो के पक्ष में करवट बदली, उनको जीत के आसार नजर आने लगे। लार्ड लिनलिथगो के स्थान पर लार्ड वेवल आ गये। कांग्रेस से पुनः समझौते के प्रयास जारी किये गये।

परन्तु तब तक मि० जिन्नाह 'द्वि राष्ट्र सिद्धान्त' का प्रारूप तैयार कर चुके थे और चुपचाप पाकिस्तान का औचित्य ठहराने के प्रयास में काम कर रहे थे। वे भारतीय उप-महाद्वीप में मुस्लिम राष्ट्र की स्थापना पर दृढ थे। तथा मुस्लिम लीग ने यह दावा करना आरम्भ कर दिया था कि सत्ता उसको मिलनी चाहिए। यकायक ब्रिटिश सरकार में यह महसूस किया जाने लगा कि 'स्वाधीनता केवल इस बात पर निर्भर नहीं करती कि ब्रिटेन सीधे-सीधे सत्ता सौप दे। परन्तु पहले यह निर्णय होना चाहिए कि सत्ता किसको सौंपी जाये। कांग्रेस के नेता लोग यह महसूस कर रहे थे कि विदेशियों से बात करना अधिक सरल है बनिस्बत के अपने मुस्लिम भाइयों के, उनसे फैसला करना टेढी खीर जान पड़ रहा था।

ऐसे समय में ब्रिटिश सरकार ने उच्चाधिकार प्राप्त एक कैबिनेट मिशन भारत भेजा। चर्चिल चुनाव हार गये तथा ब्रिटेन के प्रधानमन्त्री पद पर मिस्टर क्लीमेन्ट एटली आ गये। भारत के प्रति उनका रुख सहानुभूति और उदारतापूर्ण था। कैबिनेट मिशन की योजना सफल हु

गयी थी, इसको कांग्रेस और मुस्लिम लीग दोनों ने समर्थन तथा सहयोग दिया था। केवल कांग्रेस के अनुमोदन की मोहर लगनी बाकी थी। कांग्रेस कार्यकारिणी समिति के समाजवादी और उग्रवादियों ने बड़े-बडे भाषणों में जोर देकर कहा—योजना को ठुकरा दिया जाना चाहिए। परन्तु फिर भी कांग्रेस पर सफलता का सेहरा बँधा रहा। कांग्रेस ने अधिकाधिक रूप मे मिशन की योजना को मंजूरी दे दी। इस योजना मे पाकिस्तान तथ्य के रूप में नही बना था लेकिन मौलिक बातें मजूर कर ली गयी थी।

कि अचानक रुख बदल गया और ऐतिहासिक सत्य के रूप मे सामने आ गया। 10 जुलाई, 1946 को पं० जवाहरलाल नेहरू ने एक प्रेस कान्फ्रेंस में एक प्रश्न के दौरान कैबिनेट मिशन की योजना को अस्वीकृत कर दिया तथा उन्होंने कहा कि कांग्रेस संविधान परिषद किसी भी समझौते से नही बँधेगी तथा वह वहाँ मुक्त रूप से जायेगी हर स्थिति का सामना वक्त के तकाजे के मुताबिक स्वतन्त्र रूप से करेगी। समझौते मे शामिल सभी पक्ष इस बात पर बौखला गये, क्योंकि इसका मतलब था कि कांग्रेस ने कैबिनेट मिशन के प्रस्ताव को भी ठुकरा दिया।

मि० जिन्नाह बुरी तरह से बिफर गये, उन्होंने अगले दिन ही नये कांग्रेस अध्यक्ष के वक्तव्य की व्याख्या की और उन्होंने तुरन्त मुस्लिम लीग कौंसिल की बैठक 27 जुलाई, 1946 को बम्बई मे बुलाई। और कहा कि कांग्रेस के नये अध्यक्ष की इस व्याख्या से मुस्लिम अल्पसंख्यकों की गिनती मे आ गये हैं और सभी अल्पसंख्यक दल कांग्रेस की संविधान परिषद की दया के ऊपर टिके रह जायेंगे। हमे अपनी पाकिस्तान की मांग को लेकर सीधी कार्रवाई करनी चाहिए। जबकि जिन्नाह मुस्लिम अल्पसंख्यकों के नाम पर अधिक सुविधाएं प्राप्त करते आ रहे थे। फैसला हो गया था। अब पीछे मुडकर देखने की आवश्यकता नही समझी गयी। अखण्ड भारत तीन हिस्सों मे बँटकर भारत और दो पाकिस्तान के रूप में नक्शे पर उभर आया। इस राजनैतिक क्रियाकलाप मे अखण्ड भारत में रहने वाले हिन्दू-मुस्लिम जो भाई-भाई के समान उठते-बैठते और घूमते थे, उनके मन मे शत्रुता की जड़ें इतने गहरे तक समा गयी कि

आज 30 साल बाद भी हिन्दू-मुस्लिम राष्ट्र के नाम से एक-दूसरे को शत्रुता की दृष्टि से ही देखते है। 1947 के खून-खराबे का प्रभाव आज तक आतंक के रूप में एक-दूसरे पर जमा हुआ है। मानवीय सम्बन्धों की एकता एक-दूसरे का खून करने को उतावली हो गयी और दोनों देश एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाते हुए एक ही उपमहाद्वीप में एक-दूसरे के शत्रु राष्ट्र के तौर पर पड़ोसी बन गये। बगला देश बन जाने के बाद भुट्टो ने शिमला-समझौते के दौरान कहा था कि पाकिस्तान और भारत बँटवारे की आधारशिला अगर शत्रुता के आधार पर न होती तो आज पाकिस्तान और भारत पडोसी देशों के नाते एक-दूसरे की प्रगति में सहयोग दे रहे होते। ऐसे ही कुछ विचार उस समय के कृषि मन्त्री जगजीवनराम ने भी कहे थे।

भारत से दूर, पाकिस्तान से दूर अमेरिका मे शिक्षा प्राप्त करते-करते ही भुट्टो मि० जिन्नाह का प्रशंसक ही नही अनन्य अनुयायी हो गया था। भुट्टो अमेरिका में भी दो राष्ट्र सिद्धान्त के समर्थन में अपने दोस्तों से बहस करता। 1947 के खून-खराबे के समाचारो ने उसके मन पर सामान्य आदमी के मन पर पडने वाले प्रभाव की तरह ही भुट्टो के मन पर अपना प्रभाव डाला। राजनैतिक विज्ञान का छात्र होते हुए भी उसने सामान्य आदमी की तरह से ही और घटनाओ को ग्रहण किया। यही वे कारण थे कि भुट्टो गांधी के प्रभाव में न आ सके।

1948 में भुट्टो ने युनिवर्सिटी आफ सदर्न कैलिफोर्निया में एक निबन्ध पढा 'दि इस्लामिक हैरिटेज,' इस भाषण में उसने इस्लामिक राष्ट्रों मे समाजवाद की आवश्यकता बताते हुए, समाजवाद पर जोर दिया। उन दिनों वह पं० नेहरू के समाजवादी विचारों से भी प्रभावित रहा। वह कहा करता था कि पंडित नेहरू के समाजवादी विचार उसको दिलचस्प और प्रिय लगते हैं। पंडित नेहरू उन दिनों समाजवादी की तरह बोलते, लिखते थे।

यह आश्चर्य की बात नहीं होनी चाहिए कि भुट्टो उन दिनों समाजवादी था। वह दर्जनों पुस्तकें पढ़ता जिससे उसकी विचारधारा को पुष्टि मिलती। जब कि वह उदारतावादी चिन्तक की तरह से सोचता। वर्षों

बाद जब उसको पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी बनाने का अवसर मिला तब यह समाजवादी दृष्टि घोषणापत्र बनाने में काम आयी। पीपुल्स पार्टी के घोषणापत्र मे भावुक, उदार समाजवादी विचारों के साथ-साथ स्वतन्त्र चिन्तन का भी प्रभाव है। भारत के प्रति उसके मन में अविश्वास का भाव था। पीपुल्स पार्टी की स्थापना से सम्बन्धी कागजों और घोषणा पत्रो मे जो विचार और तर्क प्रस्तुत किये है वह विचार सर्वोत्तम उदारवादी परंपराओं को अभिव्यक्त करते है। समाजवाद के प्रति निष्ठा और सकल्प किये गये है। भुट्टो अपने लेखो में और बातचीत मे भी उदारवादी विश्लेषण करने के बाद फौरन समाजवादी निष्कर्षों पर पहुँच जाता है। उसका कारण स्पष्ट है कि भुट्टो 1949 मे युनिवर्सिटी ग्राफ सदर्न कैलिफोर्निया से बर्कले आ गया। उसने अपना नाम राजनैतिक विज्ञान मे लिखवा लिया। यहाँ भुट्टो के प्रोफेसर लिपस्की थे। यहाँ राजदर्शन इतिहास भी पढ़ना पड़ता जो सुकरात और प्लेटो से आरम्भ होकर आधुनिक काल तक पढाया जाता। यह भी बताया जाता कि अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धो के इन सिद्धान्तो पर इस इतिहास का क्या प्रभाव पडा। राजनैतिक विज्ञान तथा अन्तर्राष्ट्रीय कानून का पाठ्यक्रम आगे चलकर भुट्टो के लिए सहायक बने। यही अन्तर्राष्ट्रीय कानून के पाठ्यक्रम मे प्रोफेसर हैन्स कैलसन निकट आये। भुट्टो उनका बहुत आदर और सम्मान करता था। वह यह भी जानता था कि वह अन्तर्राष्ट्रीय कानून के बहुत बडे विशेषज्ञ हैं। प्रोफेसर हैन्स कैलसन ने भुट्टो को लोकतान्त्रिक विचारो और व्यवहार के क्षेत्र मे दृढ़ आधार प्रदान किये।

यही मे भुट्टो की रुचि राजनीति मे हो गयी। भुट्टो ने विश्वविद्यालय मे एक चुनाव लडा यूनियन कौंसिल के 12 उम्मीदवारो में से वह भी एक उम्मीदवार बना। यह कौसिल एसोसिएशन ऑफ स्टूडेन्ट्स का प्रशासन चलाती थी और विश्वविद्यालय का अंग ही होती थी। भुट्टो ने चुनाव जीत लिया। भुट्टो यहाँ पर पहला एशियाई था जिसने चुनाव में सफलता प्राप्त की थी।

यही भुट्टो यह भी सोचने लगा कि वह संयुक्त राष्ट्र संघ में पाकिस्तान का प्रतिनिधित्व करे। यह बात बार-बार उसके मन मे उठती थी,

इस इच्छा को 1958 में पूरा भी कर लिया। 1958 में जेनेवा में होनेवाले समुद्री कानून संबंधित नियमों को लेकर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन मे भेजा गया। यह उसने इतना बढ़िया काम किया कि अनेक सरकारो ने लिखकर प्रशंसा की। अमरीकी विदेश मन्त्री जॉन फॉस्टर डलेस भी प्रभावित हुए, लिखकर पाकिस्तान को भेजा, वास्तव मे यह अमरीकी सरकार का अपने जाल में अटकाने का बहुत छोटा-सा और पहला कदम था।

यहाँ से फिर भुट्टो अपनी पढाई जारी रखने के लिए आक्सफोर्ड इंग्लैंड चला गया। यहाँ न्याय शास्त्र को अपना विषय चुना। क्राइट चर्च कालेज में तीन साल का कोर्स दो साल मे पूरा कर दिखाया, और कुछ ही अंकों से फर्स्ट क्लास रह गयी। डिग्री प्राप्त करने के लिए, रोमन लॉ पास करना जरूरी होता है, जबकि रोमन लॉ का बहुत-सा भाग लैटिन में होता है और आक्सफोर्ड में रोमन लॉ का स्तर भी बहुत ऊँचा होता है। भुट्टो को लैटिन सीखनी पडी। रोमन लॉ मे भी सैकड क्लास प्राप्त किया परन्तु यहाँ उसको बहुत मेहनत करनी पडी, इस कारण उसको भाषा सीखने से ही चिढ़ हो गयी। इन सब घटनाओं से एक परिणाम तो निकलता ही है कि वह जो चाहता था उसको वह प्राप्त कर लेता था, अपनी इच्छा को वास्तविकता में बदल देता था।

"मैं इतिहास द्वारा नष्ट किये जाने या नकार दिये जाने के बजाय पाकिस्तानी सेना के हाथो मरना अधिक पसन्द करूँगा।" भुट्टो ने यह वाक्य तब कहे थे जब बँगला देश बनने से पहले शेख मुजीब भुट्टो को पाकिस्तानी सेना पर विश्वास न करने के विषय में बता रहे थे।

परन्तु यह कैसी अवचेतन मन की भावना थी जो कुछ वर्षो बाद सच होने वाली थी। क्या भुट्टो इसको जानते थे? शायद नहीं। तब यह बात भुट्टो ने मुजीब पर अपने दृढ़ आत्मविश्वास और सेना के प्रति अपने विश्वास का परिचय देने के लिए कही।

नवम्बर 1953 पारिवारिक समस्याओं के कारण भुट्टो को पाकिस्तान लौटना पड़ा तथा अपनी भूमि सम्बन्धी कामों मे रुचि लेने लगा। कुछ दिनो बाद ही कराची में अपनी वकालत शुरू करने के लिए दफ्तर खोल दिया। वे फौजदारी और दीवानी दोनों ही तरह के मुकदमों की पैरवी

करने वाले विख्यात वकील श्री रामचंदानी के साथ प्रैक्टिस करने लगा। रामचंदानी कुछ दिनों बाद ही भुट्टो को अपना प्रतिद्वन्द्वी समझने लगे। तथा भुट्टो को निरुत्साही करके राजनीति में जाने के लिए प्रोत्साहित करते रहे। मन में राजनीति के प्रति लगाव तो था ही। पर वह सोचता था कि राजनीति और वकालत दोनों साथ-साथ नहीं चल सकती। एक बार पिता शाहनवाज भुट्टो ने भुट्टो को सलाह दी थी कि समय से पहले राजनीति में घुसना अपने आपको ऐसे खतरों में डालना है जहाँ से फिर बाहर निकल पाना सम्भव नहीं। क्या वास्तव में समय से पहले ही भुट्टो राजनीति में आ गया था ? जब आया था तब ऐसा नहीं लगता था वह राजनीति में बहुत आसानी और तेजी के साथ आया था, और प्रगति के चरम बिन्दु तक पहुँचा था। अपने मुकदमों के दौरान भुट्टो ने प्रायः सभी हत्या सम्बन्धी मुकदमे बिना किसी अपवाद के जीते, परन्तु अपने जीवन और जीवन का मुकदमा हार गया। बाद में छोड गया कभी न खत्म होने वाली बातचीत। क्या वास्तव में भुट्टो इतना शक्तिशाली हो गया था कि वह विदेशी शक्तियों की आंखों में खटकने लगा था। हजारों-हजारों साल तक घास-फूंस खाकर संघर्ष करने वाले निरीह भुट्टो के पैरों के नीचे *'तख्ता' लगाकर क्यों हटा दिया गया।*

यह 'तख्ता' किन 'हाथों' ने भुट्टो के पैरों के नीचे लगाया था और यह 'तख्ता' किन 'हाथों' ने खींच लिया। वकालत के कुछ समय में ही भुट्टो की गणना बड़े वकीलों में होने लगी। राजनीति में हिस्सा लेना भुट्टो ने आरम्भ कर दिया था। पश्चिमी पाकिस्तान में विभिन्न प्रान्तों को समाप्त करने के सरकारी निर्णय के कारण। प्रबल विरोधी भावनाओं को उभरने का अवसर मिला। भुट्टो चुपचाप नहीं बैठा वह सिंध यूथ फ्रंट का अध्यक्ष चुन लिया गया। एक प्रान्त बनाए जाने की भुट्टो ने तीव्र आलोचना की और एक पैम्फलेट भी लिखा, "पाकिस्तान संघ राज्य है। सिंध का नेतृत्व उन दिनों श्री खोरी कर रहे थे। उन्होंने भुट्टो को कई बार गिरफ्तार करने के विषय में गम्भीरता से सोचा। परन्तु *भुट्टो परिवार का प्रभाव इतना था कि शाहनवाज भुट्टो को सिन्ध का* निर्माता माना जाता था। ऐसी स्थिति के कारण भुट्टो के विरुद्ध कुछ

नहीं हो पाया। भुट्टो पिता के समझाने-बुझाने के कारण ही कुछ दिनों को फिर चुप बैठ गया।

लेकिन पारिवारिक सम्बन्धों के कारण भुट्टो ने समय से पहले ही सरलता से राजनीति मे प्रवेश पा लिया। पाकिस्तान के राष्ट्रपति इस्कदर मिर्जा भुट्टो परिवार के घनिष्ठ मित्रों मे थे। सर्दियों में जब कभी इस्कदर मिर्जा और जनरल अय्यूब लरकाना आते तो सर शाहनवाज उन्हें अपने यहाँ भोजन के लिए निमंत्रित करते। इन अवसरों पर भुट्टो भी उपस्थित रहते। 1955 में भुट्टो की भी बातचीत से इस्कदर मिर्जा इतने प्रभावित हुए कि उन्होने प्रधानमन्त्री मोहम्मद चौधरी को सुझाव दिया, "कि वह सुरक्षा परिषद् में काश्मीर चर्चा पर भाग लेने के लिए भुट्टो को भेजें।" परन्तु मोहम्मद भुट्टो से बिल्कुल प्रभावित नही हुए। उन्होंने इस्कंदर मिर्जा को कह दिया कि भुट्टो अभी बच्चा है। कुछ महीने बाद ही भुट्टो को इस्कंदर मिर्जा ने कराची बुलाया और कहा कि वह प्रधान मन्त्री मोहम्मद चौधरी से नाराज हैं।

कुछ समय बाद हसन शहीद सुहरावर्दी पाकिस्तान के प्रधानमन्त्री बने। इससे पहले ही भुट्टो का वैचारिक मतभेद शेख मुजीबुर्रहमान से हो गया। सुहरावर्दी ने संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा मे प्रतिनिधित्व-सूची से नाम काट दिया। इसका कारण सुहरावर्दी के कहने से भुट्टो का आवामी लीग में शामिल न होना था। इस्कंदर मिर्जा को फिर शर्मिन्दा होना पड़ा। 1956 में जब वह लरकाना आये स्पष्टीकरण देने की कोशिश की जिससे साफ लग रहा था कि वह बहुत लज्जित है। भुट्टो ने तभी इस्कदर मिर्जा से कहा प्रतिनिधि मण्डलों में जाना बहुत महत्त्व की बात नही है वह परेशान न हों। 1957 मे कराची का मेयर बना देने के सुझाव को भी भुट्टो ने अस्वीकार कर दिया। भुट्टो ने कह दिया कि वह ऐसे पद पर काम नहीं करना चाहता जिसका चुनाव होता हो, यह उसके आलोकतान्त्रिक रुख का प्रमाण था। दूसरे वह सिंध के अन्दरूनी इलाकों में काम करता रहा। सितम्बर 1957 में भुट्टो को संयुक्त राष्ट्र संघ महासभा के पाकिस्तानी प्रतिनिधि मण्डल का सदस्य बना लिया गया। संयुक्त राष्ट्र संघ की छटी कमेटी में 'आक्रमण की

परिभाषा' पर भाषण दिया । जो आज भी कुछ क्षेत्रों मे महत्त्वपूर्ण माना जाता है । भुट्टो ने राजनीति मे प्रवेश लेते ही विदेशों में अपना प्रभाव जमाने की कोशिश शुरू की थी । तब भुट्टो की आयु मात्र 29 वर्ष की थी । पिता की मृत्यु तथा पारिवारिक काम के लिए कुछ माह बाद ही उसको फिर वापिस पाकिस्तान लौटना पड़ा । 1958 में फिरोज खाँ नून ने प्रतिमण्डल का नेता बनाकर कर राष्ट्र संघ भेजा, यहाँ भुट्टो की प्रशंसा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की हो गयी । भुट्टो ने अपनी राजनैतिक स्थिति विदेशी देशों मे प्रतिष्ठा प्राप्त करके बनाई थी न कि पाकिस्तान के बहुत बड़े जनमत को लेकर वह पाकिस्तान की राजनीति में आया था ।

इस्कंदर मिर्जा और जनरल अय्यूब ने शासन का तख्ता पलट दिया । तब मित्रता और असैनिक प्रतिभा के विचार से भुट्टो अय्यूब के मन्त्रिमण्डल मे, वाणिज्य मन्त्री के रूप मे आ गये । जबकि इससे पहले भुट्टो ने अन्तर्राष्ट्रीय कानून, समुद्री कानून सम्बन्धी कानूनों को लेकर संयुक्त राष्ट्र सघ मे पाकिस्तानी प्रतिमण्डल का प्रतिनिधित्व कर रहा था ।

भुट्टो के मन्त्रिमण्डल में आते ही अखबारो ने कई तरह की अटकलें लगायी थी । लन्दन आब्जरवर ने तो यहाँ तक लिखा कि तख्ता पलटने का सारा षड्यन्त्र भुट्टो के घर पर भुट्टो के सामने ही, शिकारगाह पर शिकार खेलने के बहाने से बनाया गया था ।

भुट्टो जिन्नाह से प्रभावित होने के कारण व पद प्राप्त होने के कारण पाकिस्तानी जनता के लिए काम करने मे जुट गये, यह उसकी आदत थी, परिश्रम अब तक उसका स्वभाव भी बन चुका था, इस कारण वह जो कार्य सम्हालता उसमे कामयाबी प्राप्त करता व सोचता कि वह अपने पद द्वारा अपने देश को अधिक से अधिक लाभ पहुँचाये । "दि स्टेट आफ पाकिस्तान" में एल० एफ० रशब्रुक ने लिखा

"बाद मे हफीर्जरहमान को वाणिज्य मन्त्रालय का काम सौंपा गया । पहले यह मन्त्रालय श्री जुल्फिकार अली भुट्टो के सुयोग्य हाथों मे था, जो नये-नये राजनीति में उतरे हैं । लेकिन भुट्टो ने अर्थशास्त्रियों के बीच अपनी प्रतिष्ठा बना ली है । बाद में भुट्टो ने ईंधन, बिजली और प्राकृतिक साधन मन्त्री का भार सम्हाला और मोहम्मद अली बोगरा की मृत्यु के

बाद विदेश मन्त्री बने।"

अय्यूब मन्त्रिमण्डल के सदस्य के रूप में भुट्टो विभिन्न पदों पर काम करते रहे। वाणिज्य मन्त्री, अल्पसंख्यकों के मामले, राष्ट्रीय पुनर्निर्माण, नवनिर्मित मन्त्रालय, ईंधन, बिजली, प्राकृतिक साधन, काश्मीर सम्बन्धी नये मन्त्रालय को 1960 में, विदेश मन्त्री के रूप मे वह अय्यूब के सहयोगी रहे। वह अपने विषय में भी सोचते थे, अपने व्यक्तित्व को विश्लेषित भी करते। *10 जुलाई 1962* में राष्ट्रीय असेम्बली में भाषण देते हुए कहा—"मैं भी उसी समाज का अंग हूँ। आज मन्त्री बनकर यहाँ बोल रहा हूँ, इसका भी यही कारण है कि मैं उस विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग का व्यक्ति हूँ। इसलिए इस व्यवस्था के लाभों को मैं स्वीकार करता हूँ, लेकिन इस व्यवस्था से प्राप्त होनेवाले फायदों के बावजूद, इस तथ्य के बावजूद कि हममें से अनेक इस व्यवस्था को बनाये रखने के लिए संघर्ष करेंगे, जूझेंगे। इस व्यवस्था में अनेक मौलिक दोष हैं, *गल्तियाँ हैं।* इस व्यवस्था के अन्तर्गत लोग तुच्छी बातों के लिए दुरभिसंधियाँ करते है। इससे जनता को नुकसान पहुँचता है। अन्य लोगों की निर्धनता के प्रति यह लोग आँखें बन्द कर लेते है। इससे आलसीपन को प्रोत्साहन मिलता है। जब ये सामन्तवादी एक-दूसरे से भिड़ते रहते हैं तो जनता गरीबी की हालत मे ज्यों की त्यों बनी रहती है। कोई विकास कार्य हो नहीं पाता। *कोई कारखाना नहीं लगाया जा सकता।* कहीं सड़कें नहीं बनती, कोई संचार-व्यवस्था नहीं हो पाती, बिल्कुल अँधेरा होता, गरीबी और दुखदायी निर्धनता चारों ओर फैली होती। केवल कुछ बड़े लोग ही खुशहाल बन पाते। ये अभिमानी जमींदार किन समस्याओं को सुलझाने के लिए आगे आते थे। *क्या वे दलित लोगों की* भलाई के लिए कुछ सोच पाते थे।"

यह व्यवस्था और विचार जितने पाकिस्तानी सामन्ती व्यवस्था पर लागू होते हैं, उतने ही भारतीय सामान्तवादी व्यवस्था पर आज भी लागू होते हैं। मन्त्री, राजनेता और नेता सामन्तवादी झगड़ों को लेकर आपसी उठा-पटक में ही पंचवर्षीय योजनाएँ पूरी कर डालते हैं। गरीब और निर्धन जनता अपनी गरीबी और निर्धनता को सीने से लपेटे, वोट

डालने के महान काम मे भाग लेती रहती है !

1965 में भारत-पाक युद्ध के बाद भुट्टो के ग्रय्यूब से मतभेद हो गये। कुछ बातें भुट्टो के विचारो ग्रौर नीतियो के बिल्कुल विपरीत थी ! भुट्टो वैसे भी भारतीय जनमत की परवाह बिल्कुल नही करता था, इसी कारण भारत में भुट्टो की प्रतिष्ठा विरोधी राष्ट्र के नेता से भी कही ज्यादा अधिक बुरे ग्रादमी की भूमिका के तौर पर समझी जाती है। इस भूमिका में परस्पर विरोधी प्रचार ने काफी महत्त्वपूर्ण कार्य किया। पाकिस्तान के प्रचार में भारत सदैव एक शत्रु राष्ट्र के तौर पर ही दिखाया जाता रहा, यह शायद पाक सरकार के लिए, पाकिस्तान के ग्राम ग्रादमी का ध्यान उसकी गलत नीतियों की ग्रोर न जाने देने के लिए सरल उपाय था, पाक सरकार ही नही बल्कि पाक नेता भी भारत की प्रगति ग्रौर उन्नति को देखते हुए सदैव एक भय की भावना से ग्रस्त रहते थे, उनका सदैव यह विचार बना रहा कि भारत उन पर हमला करके पाकिस्तान को मिटाना चाहता है इसी डर ग्रौर भय की भावना को भी वह जनता मे फैलाकर ग्रातंकग्रस्त बनाये रखते थे। विरोधी राष्ट्र के रूप में भुट्टो के मन में यह धारणाएँ कही अधिक दृढ ग्रौर गहरे तक थी, क्योंकि यह प्रभाव बचपन मे ही उसके हृदय में पड़ चुके थे। मतभेद होने के कारण भी भारत को लेकर ही थे। ताशकन्द समझौते के विषय मे। भुट्टो कुछ समय के लिए निष्क्रिय हो गये, इसका मूल कारण यह था कि ग्रय्यूब ने भुट्टो पर विश्वास करना छोड़ दिया। भुट्टो ने कई इस्तीफा देने की पेशकश की ! परन्तु ग्रय्यूब चाहते थे कि वह समय ग्राने पर भुट्टो को निकाल फेंकेंगे। ग्रय्यूब ने भुट्टो से बुलाकर कह भी दिया था, कि बात बढाने के कोशिश की तो कठोर परिणाम भुगतने होंगे। ग्रय्यूब ने जबरदस्ती बीमारी की लम्बी छुट्टी देकर भुट्टो को लन्दन भेज दिया। चार महीने बाद वापिस ग्राने पर भुट्टो मन्त्रि-मण्डल में नही थे। यह था एक सेनापति का एक राजनेता पर पहला ग्राक्रमण।

. ग्रय्यूब ने राष्ट्रीय ग्रसेम्बली में यह कहकर ग्रौर भी चकित कर दिया कि भुट्टो भारतीय नागरिक है। यह दोनों बातें कितनी विरोधी

थी। अय्यूब का यह बयान पाकिस्तानी जनता को भुट्टो के खिलाफ़ उकसाना था ! जबकि भुट्टो को भी भारत का भय दिखाकर पाकिस्तानी जनता को अपने साथ रखने की भुट्टो की अपनी समझ थी। अय्यूब भुट्टो को भारतीय नागरिक बताकर, पाकिस्तानी जनता के सामने देशद्रोही की तरह से पेश करना चाहते थे, जबकि भुट्टो शुद्ध पाकिस्तानी और पाकिस्तान के लिए वफादार थे। पाकिस्तान के प्रति उनके मन में जो ललक थी, उसको उन्होंने अपनी पुस्तक, इफ० आई० एम० एसिस्सीनेटेड में दिया है ! क्योंकि अमेरिका ने पी० एन० ए० को भुट्टो की पार्टी पी० पी० पी० के विरोध में इतना धन दिया था कि पाकिस्तान में डालर का मूल्य कम हो गया। इसी सबको लेकर पी० पी० पी० के सदस्यों ने भुट्टो से शिकायत की तब भुट्टो 'श्वेत पत्र' में अंकित राष्ट्रीय एसेम्बली में 28 अप्रैल 1977 को दिये भाषण का उदाहरण दिया। लिखते हैं—डालर का मूल्य कम हो गया है, मेरी पार्टी के सदस्यों ने यह मुझे बताया परन्तु मैंने इसका जोरदार विरोध नहीं किया। यह मेरे स्वभाव को दिखाता है यदि मैं एक देश का प्रधान मन्त्री होने पर भी जोरदार विरोध नहीं कर सकता था तब मैं काल कोठरी से क्या करने जा रहा हूँ जबकि सारी घटनाएं भूतकाल में बदल गयी हैं। अब दोबारा मैं एहसान करने नहीं जा रहा हूँ, जिन विदेशी शक्तियों ने मिलकर आक्रमण किया है। सारी कहानी जानी-पहचानी है और धीरे-धीरे बाहर आयेगी। मैंने अपना कर्त्तव्य निभाया। मैंने यह 27 अप्रैल, 1977 को राष्ट्र को बताया था। इसके अतिरिक्त मेरे पास कोई जगह नहीं थी, मैंने चेतावनी दी, न्याय को बताया, भाषण दिये। परन्तु मैं पाकिस्तान की लड़ाइयाँ काल कोठरी से नहीं लड़ सकता।"

1964 में ही राष्ट्रीय असेम्बली में भुट्टो ने कहा, "भारत के प्रति और भारत के प्रधानमन्त्री के प्रति न्याय करने की दृष्टि से जब मैं सोचता हूँ तो मुझे लगता है कि भारत ने द्विराष्ट्रवादी सिद्धान्त के अनुकूल अपना दृष्टिकोण बना लिया है। परन्तु ताशकन्द समझौते के बाद 15 मार्च 1966 को कहा—भारत पाकिस्तान को कभी बर्दाश्त नहीं कर सकता।" भारत पाकिस्तान को नष्ट करना चाहता है। पाकिस्तान को

नष्ट करना ही भारत का एक ऊँचा और सुन्दर सपना है।" वही भुट्टो अय्यूब की दृष्टि में भारतीय नागरिक बन गये।

अमरीका में शिक्षा पाने और अमरीकी चिन्तन से प्रभावित होने के बाद भी, भुट्टो पाकिस्तान पर अमेरिकी प्रभाव से खुश नहीं थे। विदेश मन्त्री बनने के बाद उन्होंने यह नीति अपनायी कि पाकिस्तान अमरीका पर कम से कम निर्भर रहे। भुट्टो सोवियत संघ और चीन की ओर अधिक झुके। भारत की सोवियत संघ से घनिष्ठता को दूर ढकेलने का प्रयास तभी किया जा सकता था। इस कार्य में भुट्टो ने कुछ सफलता भी प्राप्त की। अय्यूब प्रशासन में भ्रष्टाचार को भी समाप्त करने की सलाह भी भुट्टो ने दी थी, इससे अय्यूब को लोकप्रियता मिली थी—विलियम एल० एफ० रशब्रुक की पुस्तक में दिया गया है—"जो बात आम आदमी को सबसे अच्छी लगी, वह यह थी कि सरकारी कर्मचारियों के रवैये में बड़ा भारी परिवर्तन हुआ था। भ्रष्टाचार और कार्य सम्बन्धी दक्षता न होने के कारण, बुराई को दूर करने के कारण जानकर दूर करने का अभियान छेड़ा गया। सरकारी कर्मचारियों के सारे रिकार्ड देखे गये। पूछताछ की गई। इसके परिणाम स्वरूप प्रथम श्रेणी के 138 असैनिक अफसरों 221, द्वितीय श्रेणी के अफसरों और 1303 तीसरी श्रेणी के अफसरों के विरुद्ध कार्यवाही की गयी। इससे अफसरों और कर्मचारियों को या तो बर्खास्त कर दिया गया या जबरन सेवा-मुक्त कर दिया अथवा नीचे के पद पर नियुक्त किया गया। इस तरह की कार्यवाहियों में प्रभावित होने वाले कर्मचारियों की संख्या 3000 के लगभग थी। इसके परिणाम अच्छे निकले। इससे ईमानदार और परिश्रमी अफसरों का मनोबल बहुत ऊँचा हो गया। उन्हें इतने अधिकार मिल चुके थे कि वह अपने विभाग को सुदक्ष और सक्षम बनाने में काफी समय दे पाये। उन्होंने सरकारी कर्मचारियों से कह दिया कि सरकारी कर्मचारी के रूप में उनकी यथार्थ जिम्मेदारियाँ क्या हैं। दफ्तर समय पर खुलने लगे। नागरिकों से कलर्क तहजीब से बात करने लगे। कठिनाई में पड़े व्यक्ति की सहायता करने लगे। हर अफसर अपने आफिस में मौजूद रहता, नागरिकों की शिकायतें सुनने वह मिलने के लिए हर समय तैयार

रहता। लाल फीताशाही घट गयी। लोगो ने राहत की साँस ली, "खुदा का लाख-लाख शुक्र है। अब हम अपना काम उन दुख देने वाले नेताओं के हस्तक्षेप के बिना कर सकेंगे।"

"नये मन्त्री (भुट्टो) सचमुच बड़े योग्य थे। ठीक उसी तरह जैसे कि राष्ट्रपति, दोनों अथक परिश्रम करते थे।"

कुछ दिनों बाद ही अय्यूब की लोकप्रियता घटने लगी! अय्यूब का कोई भी दाँव ठीक नहीं बैठा। पाकिस्तान में भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद फिर लोगों मे व्याप्त हो गया; बल्कि लोगों का सामाजिक और नैतिक जीवन भी भ्रष्ट हो गया। उसका प्रभाव कानून और व्यवस्था पर भी पड़ा। मजदूरो के अधिकार व आकांक्षाएँ, आशाएँ, अभिलाषाएँ उपेक्षित है; पाकिस्तानी जनता का तकलीफें बढ़ती जा रही है। किसानों और मजदूरो को विवेकसम्मत दिशा नहीं मिल रही। संकीर्ण दृष्टि कोण ने पूरे-पूरे देश पर डेरा जमाया हुआ है। 10 जून 1969 को स्पष्ट रूप से तानाशाही के विरोध में भुट्टो बोले, "अय्यूब शासन में झूठी शेखी बघारी गयी है कि पाकिस्तान में स्थिरता है। स्थिरता तब स्थापित होती है जब मौलिक विवाद हल हो जाते है और स्थायी संस्थाएँ स्थापित हो जाती है। अगर कोई व्यक्ति धमकी देकर लोगो को भयभीत करके ताकत से सत्तारूढ रहता है तो इससे स्थिरता नही स्थापित होती—एक देश जो दो टुकडों मे बँटा है और उसके दोनों टुकड़ों में हजारों मील का अन्तर हो और बीच में एक ऐसा देश हो जो शत्रुता रखता हो तो ऐसी स्थिति मे यह आवश्यक हो जाता है कि देश के दोनो हिस्से एक-दूसरे से पूर्ण सहयोग करें। एकता के सूत्र मे आबद्ध हों।"

भुट्टो के वापस लौटने पर उनके पास कोई पद नही था। यह भुट्टो के लिए राजनैतिक परीक्षण की घड़ी थी, अय्यूब की लोकप्रियता घट रही थी। भुट्टो उचित समय की प्रतीक्षा मे। भुट्टो पूर्वी और पश्चिमी पाकिस्तान दोनों में ही काफी लोकप्रिय हो गये थे। 1 दिसम्बर 1967 मे, पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी की नींव रखी तथा इस्लामी समाजवाद का नारा बुलन्द करके कुछ ही समय में पाकिस्तान पर छा गये। भुट्टो ने यह भी घोषणा की कि पार्टी कायदे आजम मि० जिन्नाह के आदेशों के

अनुरूप कार्य करेंगी ! जिन्नाह पाकिस्तान मे काफी लोकप्रिय थे और पाकिस्तान के सस्थापक के रूप मे उनको मान्यता मिली हुई थी तथा समाजवाद भुट्टो का अपना सपना था । इन दोनों कारणो से भुट्टो पाकिस्तान की जनता के करीब आसानी से पहुँच गये । पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी का एक और उद्देश्य था काश्मीर को पाकिस्तान का हिस्सा बनाना । पार्टी के इस उद्देश्य ने पार्टी के घोषणापत्र में चार चाँद लगा दिये । परन्तु यह सब भावनाओं के आधार पर किया गया था । ऐसा नही कहा जा सकता कि भुट्टो का भावनात्मक सम्बन्ध जनता मे नही था, उनका भावनात्मक सम्बन्ध प्रारम्भ से ही समाजवाद से था और जनता मे पनप रहे समाजवादी विचारो को लेकर भुट्टो आगे बढ रहे थे, अपने को सत्ता मे लाने के लिए जनता की भावनाओं का इस्तेमाल कर रहे थे ।

"....यह एक उभरती हुई सशक्त लोगों की संस्था है जो युवा वर्ग का नेतृत्व करती है और यह दृढ विश्वास करती है कि पुराने तौर-तरीके तथा परम्परागत पद्धतियाँ उन बड़ी-बडी समस्याओ का मुकाबला नही कर सकती जिनका आज पाकिस्तान को सामना करना पड रहा है ।... अब लोग अतीत में वापिस नही लौट सकते और न ही वे वर्तमान व्यवस्था को और अधिक बर्दाश्त करने को तैयार है । वे एक ऐसी नयी व्यवस्था चाहते है जिसका आधार न्याय हो और जो लाखो श्रमजीवी लोगों के अनिवार्य हितों से सम्बद्ध हो ।"

भुट्टो हमेशा मे ही अच्छे वक्ता रहे, वह अपने भाषणो और लेखों में मार्क्सवादी आकर्षक शब्दों का इस्तेमाल करके जो लोगों के दिल-दिमाग पर आसानी से छाते रहे । भुट्टो इस बात का संकल्प कर चुका था, कुछ ऐसा किया जाये जो अतीत को जड़ मूल से उखाड़ फेंके । भुट्टो ने सप्रयास लोगों को समझाना शुरू किया । केवल उन्ही तत्त्वों को जो देशभक्ति के आधार पर राष्ट्रीय हित के रूप मे दिखाई पड़ेंगे, सशक्त बनाया जायेगा । इसके साथ ही सभी समस्याओ का मौलिक पथ प्रदर्शन कायदे आजम जिन्नाह के आदेश होगे, और उसकी पार्टी राष्ट्र की समस्याओं को परमपिता परमेश्वर में अडिग विश्वास रखते हुए इस्लाम

धर्म पर गर्व करते हुए, विश्वास करते हुए हल करेगी।

भुट्टो ने इस प्रकार अपने दल को सशक्त ही नहीं बनाया बल्कि अय्यूब सरकार पर हमला भी बोल दिया। उन्होंने यह हमला चारों तरफ से किया। सबसे पहले अय्यूब के गढ उत्तर पश्चिम प्रदेश की यात्रा के भाषण दिये फिर वह रावलपिण्डी पहुँचे फिर लाहौर। रावलपिण्डी में इतनी अधिक भीड थी कि उसे तितर-बितर करने के लिए आँसू गैस का प्रयोग हुआ। चार दिन बाद ही लाहौर में भी बडी सभा हुई। जनता ने जिस प्रकार भुट्टो का स्वागत किया उससे घबराकर अय्यूब ने 13 नवम्बर 1968 भुट्टो को गिरफ्तार कर मियाँ वाली जेल भेज दिया।

जेल यात्रा को भुट्टो ने राजनीतिक हथियार में बदल दिया। 4 फरवरी 1969 को उन्होंने लाहौर में पाकिस्तान के उच्च न्यायालय में रिहाई की मांग करते हुए एक हल्फनामा दाखिल किया। उसमें इस बात का जिक्र था कि देश मे दमन तानाशाही और अत्याचार हो रहा है। अय्यूब के यह घोषित किये जाने के बाद कि वह चुनाव नही लड़ेंगे, आन्दोलन अय्यूब के खिलाफ जोर पकडता गया। तब अय्यूब ने भुट्टो और शेख मुजीब को छोड़ दिया। अय्यूब ने सत्ता परिवर्तन के लिए नेताओं का एक सम्मेलन बुलाया। भुट्टो ने निश्चय किया कि वह सम्मेलन मे भाग नही लेगा। 24 मार्च को जब वह कराची से अपने शहर लरकाना जा रहे थे तो उनका जहाज रावलपिण्डी को मोड दिया गया। वहाँ प्रधान सेनापति याह्या खाँ ने मिलने को बुलाया था। याह्या खाँ ने उनसे कहा, "मैं अनुभव करता हूँ कि अय्यूब असफल रहे हैं। इसलिए मैंने सत्ता सम्भालने का निर्णय लिया है। इस विषय मे आपका क्या विचार है ?"

भुट्टो अवाक थे। लोकतन्त्र के लिए लडने वाला योद्धा कैसे आसानी से दूसरे तानाशाह का साथ दे। भुट्टो के लिए यह परीक्षा का समय था तथा राजनैतिक समझ का भी अवसर। भुट्टो सोचते थे कि याह्या खाँ को सत्ता सम्हालने से वह रोक नहीं सकते, लेकिन लोकतन्त्र का सिपाही आसानी से सत्ता परिवर्तन की अनुमति दे दे। आसान था। भुट्टो ने तीन शर्तें रखी : 1. पाकिस्तान स्वतन्त्र विदेश नीति पालन करे 2. पाकिस्तान को पहले की तरह पुनः चार भागों

दिया जाये। 3. एक वर्ष के अन्दर ही चुनाव कराये जायें।

इसके बाद याह्या खाँ ने सत्ता सम्हाल ली। याह्या ने वचन निभाया पाकिस्तान को चार हिस्सों मे बाँट दिया। नवम्बर 1969 याह्या ने घोषणा की कि संविधान बनाने के लिए राष्ट्रीय असेम्बली बुलायी जाये। जनवरी 1970 मे चुनाव अभियान आरम्भ हुआ। शायद ही इस देश में इससे पहले इतने निष्पक्ष और स्वतन्त्र चुनाव कभी पहले हुए है। इन चुनावो मे पूर्व पाकिस्तान मे 169 स्थानों में 167 स्थान शेख मुजीब की आवामी लीग को मिले और भुट्टो की पार्टी को 181 स्थान प्राप्त करके बहुमत मिला। स्वयं भुट्टो 6 स्थानो से जीते। परन्तु इन चुनावो के दौरान याह्या और भुट्टो में अनबन हो गयी। याह्या प्रशासन के बार-बार ऐलान करने के बाद भी सरकार के कुछ मन्त्रियों ने पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी का खुलेआम विरोध किया। भुट्टो इससे अपने नेता के रवैये को जान गये जबकि याह्या अपने को रेफ्री से अधिक कुछ नही बताते थे। भुट्टो ने एक बार आम सभा में चुटकी भी ली। "याह्या खाँ ऐसे रेफी है जो मौका पाते ही किसी भी टीम के विरुद्ध गोल के लिए हिट लगा सकते है।" दरअसल भुट्टो को अय्यूब प्रशासन मे जो दिक्कतें उठानी पड़ी थी वह बरकरार थीं जबकि बाहरी तौर पर ऐसा नही दिखायी देता था। सारी ताकत सरकार ने पीपुल्स पार्टी के खिलाफ लगा दी थी। जनवरी मे याह्या खाँ ने अपने भाई मोहम्मद अली को नेशनल सिक्योरिटी कौंसिल का अध्यक्ष बना दिया और आदेश दिया कि भुट्टो की पार्टी की प्रगति रोकें। उसे तोड़ने के लिए जो कुछ हो सके वह करें। इसके कारण भुट्टो ही नही पार्टी के अन्य महत्वपूर्ण सदस्य अत्याचारों के शिकार बनें। 31 मार्च 1970 को भुट्टो की हत्या की कोशिश की गयी तब भी सरकार ने इस घटना पर पर्दा डालने की कोशिश की गयी। जाँच की माँग को अस्वीकार कर दिया गया। वास्तव में याह्या खाँ भुट्टो और उसके विचारों को नापसन्द करने लगे थे। एक बार उन्होने ऐलान भी किया कि भुट्टो मुजीब से ज्यादा खतरनाक है। इसी कारण से याह्या सरकार के लोग यह भी कहने लगे कि वह भुट्टो की बोटी-बोटी नुचवाकर कुत्तों के सामने फिकवा देंगे।

परन्तु चुनाव मे विजय के बाद याह्या खाँ ने दोनो नेताओं भुट्टो और मुजीब को तार देकर बधाई दी। 'इसके बाद दोराष्ट्रवादी सिद्धान्त' मुजीब ने अपनाया। याह्या खाँ मुजीब को भावी प्रधान मन्त्री तक कह चुके थे। मुजीब का रवैया बदल चुका था। मुजीब और भुट्टो के विरोध, आंशिक और संवैधानिक सिद्धान्तो को लेकर काफी बढ चुके थे। इन विरोधो को और अधिक बढाने में याह्या ने महत्त्वपूर्ण कार्य किया वह नही चाहते थे कि मुजीब और भुट्टो में समझौता हो। पाँच सूत्री कार्यक्रम को लेकर मुजीब ने भुट्टो से कहा था कि पूर्ण समझौते के लिए कुछ समय और देना चाहिए और याह्या ने यह देखकर कही पूर्ण समझौता न हो जाए राष्ट्रीय असेम्बली भंग कर दी। क्योकि समझौता होने से उनका पूर्ण अधिनायकवाद समाप्त हो जाता। जबकि यह बैठक दो या तीन मार्च को होने वाली थी। आगे की भी कोई तारीख तय नही की। भुट्टो और याह्या में इस पर भी कहा-सुनी हुई। असेम्बली भग होने की खबर से पूर्व पाकिस्तान मे विप्लव-सा आ गया।

24 मार्च को भुट्टो याह्या मे मिलने गया। उसको सन्देह हो गया कही कुछ गडबड है, भुट्टो ने जो कुछ कहा याह्या ने उसमे कोई दिलचस्पी नही ली। भुट्टो को लगा कि याह्या ने सैनिक कार्यवाही की पूरी तैयारी कर ली है। इस विषय मे 27 मार्च, 1971 को भुट्टो ने पश्चिम पाकिस्तान वापिस जनरल पीरजादा से कही अगर वे समझते हैं कि सेना शेख मुजीब को कुचल सकती है और फिर वह यही काम पश्चिम पाकिस्तान मे भी कर सकती है तो उनके हाथ निराशा ही लगेगी। पूर्वी बंगाल मे सेना को अनुशासनहीन छोड देने के बाद भुट्टो और उसकी पार्टी पर हर प्रकार का अत्याचार किया गया। याह्या ने भुट्टो से बोलचाल बन्द कर दी जब बोल शुरू हुई तब तक पूर्व पाकिस्तान की स्थिति बेकाबू हो चुकी। छापामार बंगालियो के मन में नफरत की आग और गुस्सा उबल रहा था। इस सब पर भुट्टो ने याह्या से कहा था कि अब मामला बेकाबू हो जायेगा। पर याह्या ने कहा कि ये सैनिक मामले हैं जिनके बारे में तुम्हें कुछ आता-जाता नही है।

अब तक सोवियत संघ ने इस सब मे दिलचस्पी लेनी शुरू कर दी थी।

याह्या खाँ और सोवियत नेताओं में पत्रों से बातचीत भी हुई।

आखिर में जब याह्या को लगा कि वह चारो ओर से घिर गया है, पाकिस्तानी सेना ने मुँह की खानी शुरू कर दी है तब भुट्टो से कहा कि वह कोई हल निकाले। भुट्टो ने कहा कि याह्या की सैनिक सरकार असैनिक सरकार को सत्ता सौंप दे जो कुछ हल निकले मुजीब से बातचीत करें। कुछ दिन बाद फिर यही बातें दोहरायी गयी। याह्या ने कहा, "क्या सत्ता सौंप देना इतना आसान है, और एक माचिस का बक्सा भुट्टो की ओर बढ़ाया। भुट्टो ने वह माचिस का बक्सा हाथ में लिया और उसे याह्या खान को वापिस देते हुए कहा, "हाँ यह इतना ही आसान है।"

इसके बाद फिर कुछ सुलह-सुझाव हुए। याह्या ने मेट्रोपोल होटल के सामने एक जोशीले भाषण में कहा कि भारत अगर युद्ध करना चाहता है, तो युद्ध करके देख ले। इस पर भुट्टो ने भाषण का तुरन्त खण्डन किया। याह्या गुस्से से पूछने लगा तुमने ऐसा क्यों किया। भुट्टो ने उत्तर दिया क्योंकि आप युद्ध के लिए तैयार नहीं है—खासतौर पर ऐसी सेना जो पिछले 14 साल से राजनीति में उलझी हुई है। फिर भी युद्ध हुआ भारत भी मैदान में आया। एक और राष्ट्र दुनिया के नक्शे में बँगला देश के नाम से जुड़ गया। याह्या खाँ अपनी सारी लोकप्रियता खो बैठे। याह्या को सत्ता भुट्टो को सौंपनी पड़ी बहुत कुछ खोकर। यह भुट्टो के पक्ष में बहुत बड़ी बात थी तानाशाह से सत्ता लेकर लोकतान्त्रिक सिद्धान्तों पर सरकार का गठन करना। राष्ट्रपति होने के बाद मुजीब और उनके साथी कमाल हुसैन को रिहा कर दिया। भुट्टो ने याह्या का यह प्रस्ताव नहीं माना कि दोनों को फांसी दी जाये जो याह्या का तानाशाह जैसा ही प्रस्ताव था। प्रस्ताव न मानने के पीछे एक आशा थी। भुट्टो के मन में यह बात घूम रही थी कि मुजीब अपने प्रभाव का उपयोग कर बँगला देश को पाकिस्तान से सम्बद्ध रखने के प्रस्ताव पर राजी हो जायेंगे। यह राजनीतिक जुआ था, जो भुट्टो ने खेला था। सत्ता सम्हालने के तुरन्त बाद भुट्टो ने अपने रेडियो से प्रसारित राष्ट्र के नाम सन्देश में जिस प्रकार कई जनरलों को नौकरी से बर्खास्त किया। वह आत्मविश्वास का ही उदाहरण था। वस्तुतः पाकिस्तान में सैनिक

श्रौर असैनिक सरकार की लड़ाई तभी से शुरू हो गयी थी।

भुट्टो ने भारत के साथ समझौता किया अन्य राष्ट्रों से सम्बन्ध बढ़ाये। उन्होंने अपने को राष्ट्रपति के स्थान पर प्रधानमन्त्री घोषित किया। चीन, ईरान, तुर्की श्रौर श्रमेरिका से शस्त्र लेकर अपनी सेना को सशक्त रखा। बलूचिस्तान व सीमा प्रान्त के विरोधी नेताओं के जेल में बन्द रहते ही 7 मार्च, 1977 को चुनाव करा दिये। राष्ट्रीय असेम्बली में 200 स्थानों में से 155 पीपुल्स पार्टी को प्राप्त हुए। विरोधी दलों को 35 स्थान मिले। इन्ही चुनावों में भुट्टो के विरोधी दलों को अमरीकी धन भारी मात्रा में दिया गया जिससे डालर के भाव पाकिस्तान में गिर गये। उन्होंने कहा कि चुनाव में अनुचित तरीके अपनाये गये हैं। 11 मार्च को श्राम हड़ताल का नारा दिया। भुट्टो ने कराची में टेंक तैनात कर दिये। विरोधी दलों ने दोबारा चुनाव की मांग की। 25 मार्च को राष्ट्रीय विधान सभा की बैठक हुई विरोधियों ने हड़ताल का नारा फिर दिया श्रौर 11 अप्रैल को अवज्ञा आन्दोलन शुरू कर दिया। इस उपद्रव में 3 हज़ार आदमी मारे गये। 10 हजार जेल भेज दिये गये। कराची, लाहौर, हैदराबाद में मार्शल लॉ लागू कर दिया गया। लेकिन पंजाब के लाहौर हाईकोर्ट ने मार्शल लॉ को गैर-कानूनी घोषित कर दिया। तब 30 जून को एक प्रदर्शन किया 7 जून को मार्शल लॉ हटा दिया गया। इस बीच विरोधी दलों से बातचीत प्रारम्भ हो गयी। उन्होंने घोषित किया कि वे प्रान्तीय विधान सभाओं के चुनाव कर देंगे, अगर उनमें विरोधी दलों को दो-तिहाई बहुमत प्राप्त हुआ तो राष्ट्रीय विधान सभाओं का भी चुनाव करवा देंगे। यह प्रस्ताव स्वीकृत नहीं हुआ तो उन्होंने सेना के प्रयोग की धमकी भी दी तथा कट्टरपंथियों मुल्लाओं को खुश रखने के लिए सारे देश में शराब की दुकानें श्रौर जुआघर नाइट क्लबों पर रोक लगा दी। निवृत एयर मार्शल व सक्रिय राजनीतिज्ञ असगर खां को गिरफ्तार किया गया, क्योंकि उन्होंने सेनाध्यक्षों को सन्देश भेजा था कि वे असैनिक श्रौर गैर-कानूनी सरकार का समर्थन न दें। निवृत जनरल गुलहसन, निवृत एयर मार्शल रहीम खाँ ने भी राजदूत पदों से त्यागपत्र देकर सेना से कहा कि वह भुट्टो को हटा

दें। इसका जवाब भुट्टो ने जनरल टिक्का खाँ को रक्षामन्त्री बना कर दिया। साथ ही साऊदी अरब की मध्यस्थता के बीच विरोधी दलों से समझौते के लिए प्रयत्नशील रहे। इतनी खून-खराबी के बाद भुट्टो इस बात पर राजी भी हो गये थे कि अक्तूबर मे दोबारा चुनाव होंगे। विरोधियों को उनकी बात पर कम ही भरोसा था। तभी जनरल मोहम्मद जिया-उल-हक ने भुट्टो को पदच्युत करके शासन की बागडोर अपने हाथ मे थाम ली।

जो शासन भुट्टो को एक पराजित सेनापति से प्राप्त हुआ, वह एक पराजित राजनीतिज्ञ की तरह से, एक सेनापति को सौंप देना पड़ा।

प्रेरणा, प्रेम और परिचय

भारतीय जनमानस मे भुट्टो की तस्वीर, एक विरोधी स्वभाव वाले व्यक्तित्व की बनती है ! वह गुस्सैल, अडियल और जिद्दी आदमी के तौर पर जाना जाता है। परन्तु यह उसका बाह्य स्वरूप है। एक भावुक राजनीतिज्ञ से कुशल राजनीतिज्ञ तक आने के अनुभव ने उसको सिखाया था कि कब गुस्सा करना चाहिए और कब चीखना-चिल्लाना चाहिए तथा कब चुप बैठना चाहिए। भुट्टो ने सयुक्त राष्ट्र सघ मे भारतीय के लिए, 'भारतीय कुत्ते' शब्द का प्रयोग किया। एक पढ़े-लिखे और सभ्य आदमी से इस प्रकार की आशा नही की जानी चाहिए थी। उससे भारतीयों मे गुस्सा भडकना स्वाभाविक था तथा भुट्टो के प्रति नफरत पैदा होना। एक पडौसी देश के प्रतिनिधि होने के नाते इस प्रकार के व्यवहार की उम्मीद कैसे की जा सकती थी जबकि भारत में भुट्टो ने अपने बचपन के कुछ दिन बिताये थे। उसका भारत से सम्बन्ध था। जिन आधारो पर पाकिस्तान और भारत का बँटवारा हुआ था, उन कारणों से शत्रुता और ईर्ष्या का भाव दोनों राष्ट्रो मे था ! भुट्टो इस भावना को दबा नहीं सकते थे। परन्तु भुट्टो के अन्तर्मन में जो ईर्ष्या की भावना थी, वह प्रतिस्पर्धा के रूप में काम करती थी, और भारत उसके अवचेतन मन में प्रेरणा की तरह से छाया हुआ था। भुट्टो ने 'कुत्ता' शब्द अपने लाभ के लिए यहाँ प्रयोग किया क्योंकि अमरीकी सरकार भारतीय सरकार को पाकिस्तान से अधिक आर्थिक सहायता दे

रही थी। इस शब्द के प्रयोग करने के बाद अमरीकी सरकार ने पाकिस्तान सरकार की आर्थिक सहायता बढा दी थी।

अड़ियल और जिद्दी होना उसके स्वभाव का एक तरह से हिस्सा ही था ! वह अपने सिद्धान्तो और विचारो पर दृढ विश्वास रखने वाला व्यक्तित्व था। बाह्य तौर पर भुट्टो कभी यह जाहिर नही कर पाया कि वह अन्दर से भयभीत और डरा हुआ है ! राजनीति मे वह एक सरल तरीके से आया था, इस तरह राजनीति में स्थान मिलने के कारण उसके पास जनशक्ति और आत्म-विश्वास दोनो की कमी थी। वह इस कमी को कृष्णा मेनन और नेहरू के भाषणों को बार-बार पढ कर पूरी करता। बाद मे तो भुट्टो ने उच्चाधिकारियों को नेहरू और कृष्णा मेनन के भाषणों को पढना अनिवार्य करवा दिया था। वह स्वय भी घण्टों और अधिकारियों के माध्यम से चुपचाप एकाग्रता से भाषणों को सुनता रहता। बचपन मे नौ वर्ष की आयु तक उसकी शिक्षा विधिवत आरम्भ न होने के कारण वह पिछड गया था। एक बार फेल होने के कारण, उसमें परिश्रम की भावना पैदा हुई परिश्रम करना उसका स्वभाव बन गया ! गांधी के प्रति उसके मन में कोई रुचि पैदा न हो सकी। नेहरू भुट्टो को पसन्द ही नही थे, भुट्टो के प्रेरणा स्रोत भी थे।

कालेज में पिछड जाने के बाद ही उसके मन मे हीन भावना पनप गयी थी। जिसके कारण वह कही भी अपने आपको द्वितीय श्रेणी में रखवाना पसन्द न करता था। वह चाहे राजनीतिज्ञ के तौर पर नेहरू हो, कुशल वक्ता के तौर पर कृष्णा मेनन हो या नेता के तौर पर शेख मुजीब हों। वह पाकिस्तान को भी भारत के मुकाबले मे दूसरे स्थान पर नही रखना चाहता था सो वक्ता के तौर पर कृष्णा मेनन का आधार बनाया। नेहरू के विचारों और समाजवाद दोनों को भुट्टो ने इस्लामी दृष्टि देकर, पाकिस्तान के वातावरण मे फिट करने की कोशिश की। भुट्टो समझते थे कि पाकिस्तानी जनता मे क्या भावनाएँ उभर रही हैं। जब भुट्टो को महसूस हुआ कि भारत के विरोध में बोलकर जनता प्रसन्न रह सकती है तब वह भारत के विरोध मे बोलने से भी नही चूके।

फिर एक ऐसे विरोधी व्यक्तित्व से भारत की जनता नफरत क्यों न

करे ? जनता गहराई तक पहुंचने की कोशिश नही करती या करना नही चाहती या किन्ही शक्तियों के कारण उधर ध्यान नही देना चाहती। फिर उसके अपने, विचार, गुस्सा, नफरत, प्यार सभी कुछ होता है जिसके कारण वह स्वतन्त्र विधान बनाती है। नेहरू जब विश्वभर मे शान्तिदूत की तरह मे जाने जाने लगे तब भुट्टो को इस दिशा का विचार आया। भुट्टो के पाकिस्तान की सरकार सँभालने से पहले भारत पाकिस्तान एक-दूसरे के प्रति शत्रुतापूर्ण रवैये पर आधारित थे यह विरोध बढता ही जाता था। लेकिन भुट्टो के सत्ता मे आने से यह विरोध निस्सदेह कम हुआ। इस तनाव को कम करने मे भुट्टो ने अथक प्रयास किया। इसपर विश्वास करना बहुत कठिन हो जाता है, कि 'अपशब्द' बोलने वाला और 'एक हजार साल तक' लडने वाले आदमी एकदम, दोस्ती और सहयोग का हाथ बढायें। यह जमीन आसमान का अन्तर अनायास ही कैसे आ गया ! इस सम्बन्ध मे प्रेसीडेन्ट भुट्टो से 'ब्लिट्ज' के सम्पादक ने पूछा था, "आप दो मौलिक परस्पर विरोधी बातें कहते है ! एक ओर आप आग उगलने वाले राजनीतिज्ञ के रूप में मशहूर है दूसरी ओर "शान्ति के इच्छुक राष्ट्रपति के रूप मे भी ख्याति चाहते है। इन दोनो विरोधी बातो को किस प्रकार एक-दूसरे से सम्बद्ध किया जाये ?"

भुट्टो ने इस सवाल का स्पष्ट और दो टूक जवाब दिया "इन दोनो बातों मे कोई विरोधी नही है, क्योंकि मैं प्रत्यक्ष परिस्थितियो का गुलाम हूं। एक समय था, जब वस्तु तथ्यात्मक स्थिति पाकिस्तान के अनुकूल थी, क्योकि 1952 मे हमे अमेरिका से जबरदस्त सैनिक सहायता मिली थी। शायद इसके लिए आप मेरी आलोचना कर सकते है ! अगर मैं अय्यूब की जगह होता तो अवसर का पूरा लाभ उठाता। मैं हमेशा अवसरों मे लाभ उठने के पक्ष में हूं।"

जहां भुट्टो 'वस्तु शक्तियों' की शक्तियां और 'सुअवसर के लाभ' की बात करते हैं, वही हम यह भी सोच सकते है कि अगर भुट्टो याह्या खां के स्थान पर होता तो वस्तुस्थिति के कारण जान कर भारत मे झगड़ा मोल न लेता। 'द्विराष्ट्रवादी सिद्धान्त' का समर्थक पाकिस्तान

को किसी भी हालत में दोबारा न बँटने देता। भुट्टो शुद्ध राष्ट्रवादी और पाकिस्तानी था, इस कारण बँगला देश न बनने देने की दिशा में। वह अथक प्रयास करता। भुट्टो ने बँगला देश बनने के बाद विचार दिये थे। पाकिस्तान के वर्तमान सम्बन्ध संघर्ष के ही परिणाम है। भारत ने पूर्व पाकिस्तान में हस्तक्षेप किया, अपने हथियारो और सेनाओं का उपयोग किया, और मेरा संघर्ष व्यावहारिक था। भारत ने ऐसा किया समस्या उत्पन्न हो गयी। करजिया ने कहा, "भारत ऐसी महाशक्तियों द्वारा बँगला देश के सघर्ष में धकेल दिया गया, जो हमारे नियन्त्रण में नहीं था" परन्तु भुट्टो ने इसमें सहमत न होते हुए कहा, "भारत बहुत बड़ा देश है, उसे जबरदस्ती कहीं नहीं धकेला जा सकता।"

जब अल्जीरिया का स्वतन्त्रता सघर्ष चल रहा था तो भुट्टो ने जो रवैया अपनाया वह उदाहरण था। उस समय यह सवाल उठा कि अल्जीरिया को मान्यता दी जाये या नहीं। अल्जीरिया उस समय फ्रास में लड रहा था। भुट्टो का प्रेम अल्जीरिया वासियों के साथ था। वह दिल से उनको चाहता था और दिमाग उसको रोकता था। फ्रास सुरक्षा *परिषद का सदस्य था यदि भुट्टो अल्जीरियाई विरोधियो को मान्यता* दे देता तो फ्रास पाकिस्तान के विरुद्ध हो जाता, और विरोध करके ही इसका जवाब देता और फ्रास को अपने विरुद्ध कर लेता। भुट्टो ने मुस्लिम एकता की परवाह न करते हुए कोई काम ऐसा नहीं किया कि फ्रास नाराज हो। पाकिस्तान के हित ही भुट्टो के लिए सर्वोच्च स्थान रखते थे। पाकिस्तान के प्रति भुट्टो के मन में अगाध प्रेम था। भुट्टो पाकिस्तान के अहित में कोई भी काम करने के पक्ष में ही नहीं था बल्कि इस सिद्धान्त पर दृढ संकल्पी, जिद्दी और अडियल तक कुछ भी कहा जा सकता है। परन्तु भुट्टो के राष्ट्रपति बन जाने के बाद तीन बड़ी समस्याएँ फिर भी उसके सामने खडी थी। काश्मीर विवाद, पाकिस्तान द्वारा बँगला देश को मान्यता, भारत में रखे हुए पाकिस्तानी युद्धबन्दियों की रिहाई। भुट्टो इन तीनों समस्याओं को शान्ति और प्रेम से सुलझाने के पक्ष में थे, शायद भुट्टो पर इस बात का प्रभाव था कि युद्ध में न कोई विजयी होता है न विजित, वास्तविक और स्थायी विजय

शान्ति की ही होती है।"

भुट्टो का एक और गुण था जो बचपन से ही उसमें था, कि वह या तो किसी का भी अत्यन्त प्रिय पात्र होता या अत्यन्त विरोधी ! वह स्वयं भी जिसके लिए अपने मन में स्थान बना लेता वह समय और संघर्ष के बाद भी ज्यूं का त्यूं ही बना रहता। उसका प्रेम और उसकी सेवा कभी ऐसे मित्र के लिए कम न होता। मित्रता में बदले का कोई सवाल नहीं, मित्रता का अर्थ होता पूर्ण समर्पण। जैसाकि उसने विचार किया कि पाकिस्तान के हित में और भारत पर दबदबा बनाये रखने के लिए सभी पडोसी देशो से मित्रता होना आवश्यक है। भुट्टो ने खुलेआम घोषणा कर दी, "मैं हमेशा से कहता रहा हूँ कि चीन और सोवियत संघ से हमारे सम्बन्ध सामान्य होने चाहिए। मैं नही समझता कि सीटो और सेन्टो के सैनिक समझौते में हमारी सदस्यता इस दृष्टिकोण मे रुकावट पैदा करती है। विश्व शान्ति को बनाये रखने के उद्देश्य से हम साम्यवादी जगत से दोस्ती रख सकते है और इस तरह की दोस्ती की काफी गुंजाइश है।"

भुट्टो ने पाकिस्तान के सम्बन्ध ईरान, अफगानिस्तान, तुर्की, श्रीलंका व अन्य मुस्लिम राष्ट्रों मे स्थापित किये। सारी दुनिया जानती है कि पाकिस्तान और चीन आगे चलकर काफी निकट आए। वास्तव में वह इतने नजदीकी दोस्त बन गये कि जब राष्ट्रपति निक्सन को चेयरमैन माओ-त्से-तुंग से सम्पर्क स्थापित करने की आवश्यकता पडी तो उन्होंने पाकिस्तान को एक घनिष्ट दोस्त विश्वासी राष्ट्र के तौर पर उपयोग किया, जिसने निक्सन के विशेष दूत डा० किसीजर की चीन यात्रा की पूरी व्यवस्था की। यह सब भुट्टो के कारण ही सम्भव हो सका, पाकिस्तान ने अपने दैत्याकार पडौसी से समझौता करने मे ही सफलता नही पायी। बल्कि दूसरे राष्ट्र की मदद भी की। भारत-चीन युद्ध के बाद ही भुट्टो ने पाकिस्तान के साथ चीन के सम्बन्धो को और अधिक गहरा बनाने का प्रयास किया था। उसने इसको लाभदायक भी पाया। भुट्टो स्वयं यह महसूस करते थे कि इससे पाकिस्तान का सन्तुलन भारत के विरुद्ध बना रहेगा जो सन्तुलन अमेरिका और 'सीटो' तथा 'सैन्टो' की सुरक्षा-संधियों

के कारण उत्पन्न हो गये थे। भुट्टो ने लिबिया के कर्नल गद्दाफी से भी प्रेरणा पाई। कर्नल गद्दाफी के सत्ता मे आने और तेल-राष्ट्रों का एकीकरण करने के सुझाव को अरब राष्ट्रो के सामने रखा। उन्होंने सम्पूर्ण मुस्लिम राष्ट्रो को एक होकर तेल को महाशक्तियो के विरोध मे एक हथियार की तरह से इस्तेमाल करें। मुस्लिम समाजवाद और मुस्लिम राष्ट्रो की एकता का सपना कर्नल गद्दाफी का था। कर्नल गद्दाफी की यह भी मान्यता थी कि 'कोरान' मे प्रत्येक समस्या का समाधान है। हमें कुरान के निर्देशो का पालन करना चाहिए और एक होकर महाशक्तियो को मुस्लिम राष्ट्र मे निकाल फेंकना चाहिए। भुट्टो ने अफगानिस्तान के साथ चले आ रहे कटु सम्बन्धो को भी सुधार लिया, नेपाल, बर्मा इण्डोनेशिया फिलीपीन्स तथा थाईलैंड के साथ पाकिस्तान के सम्बन्धो को मजबूत बनाया। परन्तु इससे विपरीत भुट्टो 'भारत को हड़पने वाला' दोस्त कहा। परन्तु भुट्टो का यह रवैया द्विराष्ट्रवादी सिद्धान्त के कारण जनता मे फैली भावनाओं को सन्तोष प्रदान करना था। भुट्टो ने इतिहास और भूगोल दो की दृष्टि से काश्मीर के निवासियों को पाकिस्तानी जनता मे अभिन्न ढग से जुड़ा बताया। चाहे जितनी भी बाधाएँ क्यो न आएँ उन्हे पाकिस्तान में फिर आकर मिल जाना चाहिए जिससे कि द्वि-राष्ट्र वादी सिद्धान्त सफलीभूत हो सके।

पाकिस्तान मे भी भुट्टो सिन्ध प्रान्त से अधिक लगाव रखते थे, और अपने को सिन्ध प्रान्त का एकमात्र नेता समझते रहे। बाद मे पूरे पाकिस्तान का। भुट्टो पर दो-दो तानाशाह का प्रभाव भी पड़ा जिस कारण, भुट्टो अहमवादी हो गया। उसने अय्यूब और याह्या दोनो के सामने घुटने टेके। इस स्वभाव ने भुट्टो को जहाँ घमण्डी भी बनाया, वहाँ विरोधी दलों को हिकारत और छोटी दृष्टि से देखना भी सिखाया। जहाँ भुट्टो ने 'राजनीतिक स्वतन्त्रता' को ढोंग बताया। वही अन्य राजनैतिक दलों को कुचलना भी आरम्भ किया। पीपुल्स पार्टी के हितों को ध्यान में रखते हुए उसने यह सब किया। दूसरे उसकी हीन भावना ने ऐसा करने की प्रेरणा दी। इसी हीन भावना से प्रेरित वह पाकिस्तान की तुलना कभी जर्मनी से करता और कभी जापान से। इसके पीछे जो वास्त–

विकता थी वह भी द्वि-राष्ट्रवादी सिद्धान्त के कारण थी, वह पाकिस्तान को हमेशा शक्तिशाली देश बनाने में जुटा रहा। अपनी घरेलू नीतियों, विदेशी नीतियों और आर्थिक नीतियों के सिद्धान्त पर दृढ रहने के कारण विरोधियों का क्रूरता से सफाया करता रहा। वह पाकिस्तान के दोनों हिस्सों की स्वतन्त्र नीतियाँ होनी चाहिए, घरेलू मामलों में पाकिस्तान की प्रगतिशील आर्थिक नीतियाँ होनी चाहिए। वह पहला नेता था। जिसने यह बताया और देखा कि पूर्वी पाकिस्तान में ज्यादती हो रही है। वह आर्थिक न्याय और उचित व्यवहार का भी हामी रहा। परन्तु पाकिस्तान को एक बनाये रखने की अपनी इच्छा को अन्तिम क्षण तक न छोडा।

भुट्टो ने जब वह पाकिस्तान का विदेशमन्त्री था, कहा था कि अगर वह भारत का विदेशमन्त्री भी होता तब भी भारत-पाक मतभेदों को दूर न कर पाता। भारत और पाकिस्तान दोनों राष्ट्रों की जनता का यह विचार है कि दोनों युद्धों में जो पाकिस्तान से हुए भुट्टो ने ही अय्यूब और याह्या को उकसाया। हो सकता है कि स्थिति को बारीकी से परखने के बाद भुट्टो ने कोई महत्त्वपूर्ण भूमिका अपनायी हो इससे यह भी पता चलता है कि पाक में युद्ध के लिए जनमत था। इस संघर्ष से भुट्टो ने 1965 में अपने आपको अलग भी कर लिया था। बर्मा और पाकिस्तान ने आपसी सहयोग से चीन के साथ अपनी सुदृढ सीमा रेखाएं स्थापित कर ली थी।

भुट्टो ने अपने एक हजार साल तक युद्ध करने के वक्तव्य की तेजी को कम कर दिया। बाद में भुट्टो ने इसको विवेचित भी किया। वह 'ऐतिहासिक, दार्शनिक और आदिभौतिक परिकल्पना थी। इसका अर्थ सिर्फ यह था कि 'पाकिस्तान कभी घुटने नहीं टेकेगा' ताकि पाकिस्तानी जनता का 'मनोबल' ऊँचा रखने के लिए इस प्रकार का वाक्य बोला गया था। कोई राष्ट्र इस प्रकार के वक्तव्यों को इतनी गम्भीरता से ले सकता है, यह मैंने नहीं सोचा था। जिस व्यक्ति ने इस प्रकार का वक्तव्य दिया वही व्यक्ति अगले ही सप्ताह शान्ति के एक हजार वर्षों तक सहयोग की बातें भी कर सकता था।

दूसरी लड़ाई में भी भुट्टो ने अपने जनमत का ख्याल रखा। याह्या

के शासन में जब पूर्व पाकिस्तान में मुजीबुर्रहमान की कार्रवाही को 'देशद्रोह की संज्ञा' दी और चाहा कि इसका कठोरता से दमन करे तो भुट्टो ने प्रयत्न करके जनरल पीरजादा को समझाया कि पूर्व पाकिस्तान को अलग न होने से रोकने के लिए सीमित ढंग से कार्रवाई करने के आधार हो सकते हैं। परन्तु पूर्व पाकिस्तान को तब नहीं बचाया जा सकता जब सैनिक कार्रवाई के साथ-साथ राजनैतिक हल न निकाल लिए जाएँ।

सही अर्थों में वह तानाशाही का विरोधी था। याह्या शासन की बर्बरता का निश्चित रूप से विरोधी। 13 अगस्त, 1973 को भुट्टो ने कहा—'यहाँ मनमाने ढंग से शासन हो रहा है। बिना किसी बुद्धि-विवेक के लोगों पर कोड़े बरसाए जा रहे हैं। जहाँ सेना का शब्द ही पाकिस्तान का संविधान हो वहाँ 'न्याय', 'कानूनी कर्त्तव्य', 'मौलिक अधिकार', 'निश्चित विधि' और 'कानूनी शासन' निरर्थक हो जाते हैं, इन शब्दों को लोगों ने भुला दिया है।

संविधान के विषय में भुट्टो ने लिखा कि चुने हुए प्रतिनिधियों को एक पाकिस्तान की परिकल्पना के आधार पर संविधान बनाने का अधिकार है। संविधान बनाने और उसको चलाने के लिए जनता की पूर्व स्वीकृति मौलिक आवश्यकता है।

किसी भी संविधान को तब तक सफलतापूर्वक लागू नहीं किया जा सकता, जब तक कि वह जनता की भावनाओं और इच्छाओं को अभिव्यक्त न करता हो। और जनता उसे स्वीकार न कर ले। यदि आवश्यकता पड़ती तो मैं राष्ट्रीय हित में उस संविधान पर भी अपना अँगूठा लगाने से इंकार कर देता जो शेख मुजीबुर्रहमान ने बनाया होता हालांकि वह संविधान भी उन लोगों का बनाया होता जो निर्वाचित परिषद् के सदस्य होते। जब जनहित में मैं यह निर्णय कर सकता हूँ तो मुझसे यह आशा नहीं की जानी चाहिए कि मैं याह्या खाँ जैसे तानाशाह द्वारा बनाये संविधान को आँख मूंदकर चुपचाप स्वीकार कर लूंगा।"

ऐसे बहुत से तथ्य हैं जिनसे यह सिद्ध किया जा सकता है कि वह भुट्टो ही था, जिसने पूर्व पाकिस्तान की विषमताओं के प्रति सचेत होते

हुए सैनिक तानाशाहो से कहा था, कि पूर्व पाकिस्तान के साथ न्याय करें। इसमें देश की रक्षा हो सकती है। भुट्टो ने नहीं बल्कि याह्या ने पूर्व पाकिस्तान मे कार्रवाई शुरू कर दी, और स्वय चुपचाप पूर्व पाकिस्तान से भाग आया।

भुट्टो ने स्वयं अपनी आँखों से देखा था। पाकिस्तानी सेना का बल कितना है। 25 मार्च, 1971 को जब तोपों और बन्दूकों ने आग लगानी शुरू की सारा पूर्व पाकिस्तान आग और धुएं मे धू-धू कर जल उठा। तब *भुट्टो स्वयं वहीं था। उसने स्वयं अपनी आँखों से अपनी जनता को एक सनकी तानाशाह द्वारा कुचलते देखा था। भुट्टो का मन सैनिक दमनात्मक* कार्रवाई देखकर दुःख से बोझिल हुआ था।

सैनिक कार्यवाहियो को दिखाकर याह्या खाँ ने भुट्टो को यह जताने की कोशिश की कि वह पाकिस्तान के तानाशाहो से डरकर रहे। परन्तु इस सबसे भुट्टो का मन वितृष्णा और विक्षोभ से भर गया था। भुट्टो ने स्वयं कहा, "मेरे सामने तो बस एक ही कसौटी थी, जिस पर मैं सबको परखता था। वह यह थी कि कौन हमारे देश की गरीब जनता का मित्र है, और मेहनत करने वाला है। जो आदमी गरीब का दोस्त है मेहनतकश जनता का दोस्त है, वही मेरा भी दोस्त है मेरा भाई। गरीबों और मेहनतकशों का दुश्मन मेरा दुश्मन है। यही मेरी कसौटी है, मापदंड हैं, बाकी बातें नगण्य हैं।"

तो क्या भुट्टो पाकिस्तानी सेना से डर गया था या आतंकित था?

सेना, संकल्प और संदेह

भुट्टो एक महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति था। परन्तु इतना महत्त्वाकांक्षी नही कि अपनी महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए वह पाकिस्तान के राष्ट्रीय हित दांव पर लगा दे। पूर्व पाकिस्तान मे जो भी रक्तपात हुआ उसका दोष भी भुट्टो को नही जाता। अधिकाश लोगों की तरह भुट्टो भी जुल्म व वर्बरतापूर्ण अत्याचारो से घृणा करता था। भुट्टो के पास ऐसा कोई साधन नही था कि याह्या खान और उसके कमाण्डर जनरल क्या करने जा रहे हैं। फिर भी भुट्टो अपनी सेना पर आशातीत विश्वास करता था। परन्तु राजनीति मे सेना का उपयोग वह बर्दाश्त नही करता था। इस सिद्धान्त से सबसे पहले अय्यूब से टक्कर लेनी पड़ी! असल मे जब अगरतल्ला षड्यन्त्र मे मुजीबुर्रहमान का भी हाथ है। इसका पता चला तब अय्यूब चाहते थे कि मुजीब को गिरफ्तार करके खुलेआम मुकदमा चलाया जाये। भुट्टो यह सुनकर आश्चर्यचकित हो गया, क्योंकि वह यह भी जानता था, मुकदमे में चाहे जो हो, परन्तु जनता मे मुजीब की लोकप्रियता बढेगी, और वही हुआ भी मुजीबुर्रहमान रातोरात पूर्व पाकिस्तान के नेता हो गये। चुनाव मे बहुमत मे आ गये। और याह्या खां के काफी नजदीक भी पहुँच गये। मुजीब याह्या के दांव को समझ न सके थे। याह्या ने मुजीब और भुट्टो दोनों के विरोध से लाभ उठाया।

ऐसे ही एक मौके, पर भुट्टो ने सेना पर अपने विश्वास का परिचय दिया था। 20 मार्च 1971 को भुट्टो ढाका गये थे। और उन्होंने याह्या खां

की उपस्थिति में शेख मुजीब से बातचीत की। मुजीब ने याह्या खाँ से कहा, "मैं भुट्टो से बात नहीं करना चाहता।" याह्या खाँ मुजीब की योजना को समझा दें। इस पर भुट्टो उठकर बाहर चल दिये। लेकिन मुजीब ने भुट्टो का हाथ पकड़ लिया, "भाई मुझे बचाओ" कहकर समझौते के प्रस्ताव रखने शुरू कर दिये।

भुट्टो ने मुजीब से कहा हम लोग यहाँ बातचीत नहीं करेंगे चलो बाग में चलते हैं। बाग में पहुँचकर मुजीब ने कहा कि वह पश्चिम पाकिस्तान के प्रधान मन्त्री बन जाएँ और मुझे पूर्वी पाकिस्तान का प्रधानमन्त्री बनने दें। मुजीब ने आगे भी कहा कि सेना का विश्वास मत करना। वह हम दोनों को नष्ट कर देगी।

भुट्टो जो पाकिस्तान की एकता बनाए रखना चाहते थे अपने ढंग से उत्तर दिया, 'मैं इतिहास द्वारा नष्ट किये जाने के बजाय सेना के हाथों मरना ज्यादा पसन्द करूँगा।"

इसका अर्थ भुट्टो का सेना के प्रति सम्मान करना था, वह नहीं चाहता था कि सेना पूर्व पाकिस्तान और पश्चिम पाकिस्तान की राजनैतिक समस्याओं को बलपूर्वक सुलझाएँ। इसलिए भुट्टो अय्यूब के विरोधी बने, उसका कारण भुट्टो के अपने विचार और सिद्धान्त थे, याह्या भी भुट्टो को साथ लेकर सत्ता में आए परन्तु भुट्टो के विचारों से उनकी सहमति न हो पाई। भुट्टो जानते थे कि अय्यूब प्रशासन में और याह्या के सैनिक प्रशासन में जनता का दमन किया गया है। राष्ट्र की अर्थव्यवस्था को खोखला कर दिया है! भुट्टो अन्दर ही अन्दर यह सब महसूस करता था कि भारत की तरह पाकिस्तान में न तो बड़े कारखाने लगाये गये हैं और न ही अर्थव्यवस्था को सुनियोजित किया गया है। धनी और निर्धन के बीच की खाई को कम किया जाए। भुट्टो यह भी जानता था कि सेना के खर्चे में असन्तुलन है जबकि वह बहुत बड़ा है फिर भी ऐसा नहीं है कि समय के साथ बढ़ता ही चला जाए। उसके विपरीत वह घट सकता है। इसके लिए आवश्यक था कि उच्च शिक्षा संस्थाएँ शुरू से ही स्थापित की जातीं। पश्चिमी पाकिस्तान में भी शिक्षा के ऊपर अधिक ध्यान नहीं दिया गया। पूर्व पाकिस्तान में तो न के बराबर रही। सरकारी

करने लगे कि अब चैन नही ! जैसाकि अमीर घराने अक्सर करते हैं, अमीर घरानो ने जहाँ थोड़ा बहुत साथ भुट्टो का दिया, वही वे भुट्टो के विरोधियो को कई गुणा अधिक सहायता देने लगे।

भुट्टो ने सारे देश के सरकारी कर्मचारियो के वेतनमानों मे तार्किक सुधार करवाये। उसने निम्नवर्ग के सरकारी कर्मचारी के वेतन में 40 प्रतिशत और उच्चवर्ग के अधिकारी के वेतन मे 10 प्रतिशत वृद्धि कराई।

शिक्षा के क्षेत्र मे कारगर ढग से तेजी लायी गयी। भुट्टो ने कानून पास किया जिसमे यह गारण्टी दी गयी कि पहली अक्टूबर 1972 से आठवी कक्षा तक मुफ्त शिक्षा मिलेगी। और पहली अक्टूबर 1974 से 10वी कक्षा तक यही सुविधा मिलेगी। भुट्टो ने सारे स्कूलों और कालेजों का राष्ट्रीयकरण कर दिया। भुट्टो ने एक बार स्वयं ही कहा था "राष्ट्र के पास स्कूलो और कालेजो की इमारतें तो थी, परन्तु छात्र नही थे। प्रयोगशालाएँ थी पर सामान नही था, क्लास रूम तो थे परन्तु अध्यापक नही थे।" भुट्टो स्वयं एक बहुत बडी जमीदारी से सम्बन्ध रखते थे। एक समय रहा है जब भुट्टो के परिवार के पास डेढ लाख एकड़ भूमि थी। परन्तु अपनी नीतियों के अनुसार क्रान्तिकारी भूमिसुधार करवाये। हर व्यक्ति के लिए भूमि सीमा निर्धारित की। हर ऐसी कमी को कानून द्वारा पूरा किया गया जिससे लोग अनावश्यक लाभ उठाते। 1 मार्च 1972 को भुट्टो ने घोषणा की, "व्यक्तिगत भूमिसीमा में बहुत कमी की जायेगी। सरकार कुछ व्यक्तियो को बहुत अधिक जमीन रखने के पक्ष मे नही है और इसकी अनुमति बिल्कुल नही दी जायेगी। खासतौर पर उस समय जब, लाखों लोग देश के लिए सम्पत्ति पैदा करते हैं, और वही लोग असहाय और अत्यन्त दुखीद स्थिति मे जीवन बिता रहे हैं।"

भुट्टो ने आगे कहा, "सरकार का यह उद्देश्य है कि प्रत्येक स्तर पर जनशक्ति का उपयोग पूरी तरह से किया जाये और निर्माण कार्यक्रम सरकार और जनता से चलाये जाएँ।" उसने आश्वासन दिया, "कुछ ही वर्षों के बाद पाकिस्तान के प्रत्येक परिवार के पास अपना मकान होगा। कोई भी खोंमचे वाला सड़क पर घूमता हुआ नजर नहीं आयेगा,

उसके पास छोटी दुकान होगी। निरक्षरता समाप्त कर दी जायेगी, तथा छूआछूत मे होने वाले रोगो पर पूर्ण नियन्त्रण पा लिया जायेगा।"

भुट्टो ने जनता, पुलिस और सरकारी अफसरों को समन्वय और सहयोग की भावना से काम करने की प्रेरणा दी।

परन्तु इस पर भी भुट्टो से समाज के कई वर्ग नाराज थे, उनमे धनी, उद्योगपति, भ्रष्ट अफसर, और विदेशी ताकतें शामिल थी। विरोधी दल शामिल थे। भुट्टो ने घेराव और आन्दोलनो की निन्दा करते हुए स्पष्ट कहा, यह आत्मनाशक प्रक्रिया है। अधिकांश लोग इन प्रदर्शनो से ऊब उठे हैं, क्योंकि यह हुल्लडबाजी के अतिरिक्त और कुछ नहीं, अधिकतर लोग चाहते हैं कि विरोध के विवेक सम्मत सभ्य तरीको को अपनायें। सड़कों पर हुल्लड़बाजी करने वालों को सरकारी ताकत का सामना करना होगा।

"किसी भी मजदूर को तब तक नौकरी से नही हटाया जा सकता जब तक कि बर्खास्तगी पत्र मे कारण स्पष्ट न बताये गये हों।"

भुट्टो ने पद सम्हालते ही अपनी पार्टी के घोषणा पत्र मे किये गये वायदों 'रोटी, कपडा और मकान' की सुविधाओं के लिए कानून ही नहीं बनाए बल्कि उसका लाभ तुरन्त जनता तक पहुँचे इसका प्रबन्ध भी जल्दी-से-जल्दी किया। यह सब भुट्टो ने अति उत्साही नेता की तरह किया। वह जल्दी ही, पाकिस्तान को 'इस्लामी लोकतांत्रिक समाजवाद' के पथ पर ले जाना चाहता था। इस कार्य में उसने उल्माओं, मौलवियो तथा अन्य धार्मिक नेताओं से सहयोग किया। भुट्टो का राजनीति मे प्रारम्भ से अमरीका समर्थन करता रहा था। अमरीका अय्यूब के शासन-काल में निर्देश भी देता था। परन्तु बंगला देश के बनने के बाद और भुट्टो के सत्ता में आकर, समाजवादी रुख अपनाने के बाद अमरीका भुट्टो से बहुत प्रसन्न न था और सन्देह की दृष्टि से देखने लगा था। भुट्टो ने अमरीकी इशारे पर बंगला देश को नये राष्ट्र की तरह से उभरने मे रोड़े अटकाये थे, परन्तु उन्होंने लोकतान्त्रिक सिद्धान्तों की रक्षा करते हुए मुजीब की रक्षा भी की थी। मुजीब के शब्दों मे, "मैं उसका अहसानमन्द हूँ कि उसने मेरी जीवन-रक्षा की, लेकिन उसको झूठी बातें फैलाने का

कोई हक नही।" मुजीब ने भुट्टो को पूर्व पाकिस्तान मे तैनात सेना का हवाला देते हुए कहा था, "जब आप वहा जायेंगे और स्वय स्थिति को देखेंगे और जब आप यह देखेंगे कि आपके चारो तरफ सैनिक राइफलें लिए खडे है, तब आप महसूस करेंगे कि आप अपनी कब्र से लौट आए है तब आप यह सब नहीं कहेंगे।" तानाशाह के शासन मे किसी भी नेता की कीमत सिर्फ दो कौडी की होती है। परन्तु भुट्टो मुजीब को नेता मानते रहे, इसलिए याह्या के भयकर सुझाव कि मुजीब को फांसी दे दी जाये को नही माना। भुट्टो मानते थे कि विचारो को जजीर मे नही बाधा जा सकता भले ही मुजीब को या किसी भी नेता को जेल मे डाल दिया जाये या फाँसी पर चढा दिया जाये।

"इसलिए जरूरी है कि इन विचारो का अध्ययन किया जाये उनके बारे में वाद-विवाद किया जाए।"

यहा इतना विवरण देने का मात्र इतना ही प्रयोजन है भुट्टो का स्वभाव था कि वह उसको नेता मानता था, जिसके पीछे जनशक्ति होती थी, भुट्टो स्वय उसका मन से सम्मान करता था, याह्या के चाहते हुए भी भुट्टो ने मुजीब की रक्षा की जबकि मुजीब भुट्टो के विचारो से सहमत नही थे। फिर 'तथाकथित कसूरी काण्ड' के अहमद रजा कसूरी भुट्टो के इतने बडे विरोधी और बहुत बडे नेता भी नही थे। जबकि पाकिस्तान मे भुट्टो के बडे विरोधी वली खा, और निवृत एयर मार्शल असगर खा मौजूद हैं। असगर खा ने भुट्टो का अत्यन्त तीव्र विरोध भी किया है भुट्टो के विरोध मे उन्होने सेना मे विरोधपत्र बाटे, जिसके कारण कई अधिकारियो ने त्याग-पत्र दे दिया। इनमे निवृत एयर मार्शल रहीम खा और निवृत जनरल गुलहसन खाँ जो राजदूत के पदों पर थे वह भी शामिल थे। और यही भुट्टो से भूल हुई थी जो जानलेवा साबित हुई, त्याग-पत्रो की जवाबी कार्यवाहियो में जनरल टिक्का खाँ को रक्षामन्त्री तथा लेफ्टिनेन्ट-जनरल के पद से 'चीफ आफ आर्मी स्टाफ' (मुख्य सेनापति) पद पर जिया-उल-हक को लाया गया और बीच के कई पदो को तथा कई वरिष्ठ अधिकारियो को छोडा गया। यह भुट्टो का भ्रष्ट तरीका था। इसके कई दुष्परिणाम सामने आ गये। जिसकी सजा

उन्होंने अपनी जान देकर पायी।

बलूचिस्तान, सीमा प्रान्त और विचारो को लेकर भुट्टो का विरोध काफी तेजी से होने लगा। जिसका प्रभाव कई क्षेत्रो के बाद सेना पर भी पड़ा, वरिष्ठ सेनाधिकारी भी जिया को लेकर नाराज थे, निवृत एयर मार्शल असगर खा का सक्रिय राजनीति और सेना दोनों पर प्रभाव था, परन्तु कुछ अधिकारी भुट्टो का समर्थन इसलिए कर रहे थे कि भारत-पाक युद्ध में नब्बे हजार युद्धबन्दियों को भुट्टो ने सरलता और प्रतिष्ठा से छुड़ाया था। वह इस कार्य के लिए भुट्टो की प्रशसा करते न थकते थे कि, "काफिर की जमीन से नब्बे हजार मुस्लिम बहादुरो को स्वदेश लाने का श्रेय श्री भुट्टो को ही जाता है। परन्तु कुछ सैनिकों का रुख दूसरा था, जो भारत-पाक युद्ध की घटनाएँ, राजनैनिक गतिविधियाँ और विदेशी हस्तक्षेप की पूरी जानकारी नही रखते थे, वे जनरल नियाजी के समर्पण से अपने आपको अपमानित समझते थे, और इसका दोष भुट्टो के सिर मढकर अपना सिर शर्म से झुका लेते थे। वे सैनिक और सैनिक अधिकारी पूर्ण दोष भुट्टो पर लगाते हुए इस अपमान का बदला भुट्टो से लेना चाहते थे।"

वली खाँ ने भी भुट्टो पर आरोप लगाया था कि पाकिस्तान के ताना-शाह याह्या खाँ को भुट्टो ने अमरीकी बेडे की गलत खबर देकर दिग्भ्रमित किया था और कहा था कि सेना समर्पण ना करे।

विरोधी नेताओ के प्रचार व विपुल अमरीकी आर्थिक सहायता व भुट्टो की निन्दा के बाद भी भुट्टो की पार्टी बहुमत मे पाकिस्तान में स्थापित हुई। विरोधियो ने भयंकर गोलमाल, सत्ता का दुरुपयोग और बेईमानी के आरोप भुट्टो पर लगाने आरम्भ कर दिये। पाकिस्तान मे असन्तोष व नाजुक स्थिति पैदा हो गयी। खून-खराबे की स्थिति को हटाने के लिए साऊदी अरब की मध्यस्थता कराने को राजी होकर दोबारा अक्तूबर में चुनाव कराने की घोषणा की। परन्तु विरोधी पार्टियो ने भुट्टो के विरोधी स्वभाव के कारण विश्वास नहीं किया, जो स्वाभाविक ही था। तभी 5 जुलाई, 1977 को जनरल मोहम्मद जिया-उल-हक ने भुट्टो को पदच्युत करके शासनसूत्र अपने हाथो मे ले लिया तथा पूरे देश मे

मार्शल-ला लागू कर दिया। 28 जुलाई, 1977 तक भुट्टो को मरी की जेल में नजरबन्द कर दिया गया। नजरबन्दी के दिनों में भुट्टो, हिटलर और नेपालियन की जीवनियां पढ़ते रहे कि वह अपने जनरलों को कैसे काबू में रख सके मैं क्यों न रख सका।"

जिया ने नब्बे दिन में निष्पक्ष चुनाव कराने की घोषणा की जो आज तक न हो सके। 20 जुलाई को छूटने पर भुट्टो ने कहा कि "वक्त बीतने पर आप देखेंगे कि स्थितियां चाहे कितनी भी मेरे विरुद्ध बनायी जाएं जनता मेरे साथ है।"

वास्तव में अगर देखा जाए तो भुट्टो पाकिस्तानी जनता में अत्यधिक लोकप्रिय थे, इतनी लोकप्रियता कायदे आजम जिन्नाह और श्री लियाकत अली को मिली थी वे जनता के चुने हुए प्रतिनिधि नहीं थे।

परन्तु आज जब भुट्टो नहीं हैं। शान से फांसी पर चढ़ जाने के बाद वे लियाकत अली और कायदे आजम की लोकप्रियता से कई गुना आगे बढ़ गये, वास्तव में यह एक समाजवादी दृष्टिकोण की कानूनी हत्या है जो अधिनायकवाद के माध्यम से हुई।

जिया, जुल्म और जिद

भुट्टो की तरह जनरल जिया-उल-हक का बचपन में भारत से सम्बन्ध रहा, वह जालन्धर के एक परिवार में पैदा हुए। अपनी प्रारम्भिक शिक्षा के स्टिफन कालेज में प्रवेश पाया। प्रारम्भ से जिया की रुचि धर्म और सैनिक शिक्षा में रही। 1941 में जिया यूनिवर्सिटी कैडेट, ट्रैनिंग जो आज के एन० सी० सी० की तरह से होती थी के योग्य और अनुशासन प्रिय छात्रों में अग्रणीय रहे। जैसाकि तत्कालीन सार्जेन्ट बसु ने लिखा, "कालेब, पाल और जिया सैनिक प्रशिक्षण मे तीनो का स्तर काफी ऊँचा रहता था। वे तीनो हुशियार और तेज थे। उनको बूटों और पेटियो पर पालिश करने का शौक एक बीमारी की हद तक बढ चुका था।" अन्य साथियों का विचार है कि जिया कट्टर मुस्लिम था। वह कालेज मे और बाहर अचक्न और पाजामा पहनता था जबकि अन्य छात्र पश्चिमी कपडो को महत्व देते थे। कालेज रजिस्टर के अनुसार जिया पासकोर्स में था। उसने अपना पाठ्यक्रम पूरा भी नही किया कि महू मे सैनिक अधिकारी प्रशिक्षण स्कूल में 1944 मे ही प्रवेश मिल गया।

जैसे ही उसने पाकिस्तानी सेना की सीढियां चढनी आरम्भ की। उसको अच्छी ख्याति मिलनी शुरू हो गयी। वह कठोर परिश्रमी और नियमानुसार कार्य करने वाला सैनिक माना जाता था। वह कठोर अनुशासनप्रिय था। पकिस्तानी सेना के प्रति उसका दृष्टिकोण उच्च स्तर का था।

1975 की अप्रैल में उसने पदोन्नति द्वारा काप्स कमांडर के पद से लेफ्टिनेन्ट जनरल का पद प्राप्त किया। एक साल से भी कम समय में ही 1 मार्च, 1976 को भुट्टो द्वारा 6 वरिष्ठ अधिकारियों को पीछे छोड़ते हुए मुख्य सेनाध्यक्ष पद पर आ गया।

और साल कुछ महीने के अन्दर ही अन्दर 5 जुलाई 1977 को शासन की बागडोर सम्हाल कर भुट्टो को शासन से दूर फेंक दिया। भुट्टो को गिरफ्तार कर लिया गया। भुट्टो की गिरफ्तारी के समय, जिया ने घोषणा की थी, कि भुट्टो का बाल भी बांका नहीं होगा।

परन्तु जैसा कि हमेशा होता है। कथनी और करनी का अन्तर यहाँ भी साफ-साफ नजर आया।

जिया द्वारा पाकिस्तान की सत्ता सँभालने में अन्य राजनैतिक दलों ने जिया का समर्थन दिया। इन दलों, मौलाना मुफ्ती ममूद की पार्टी नेशनल एलाएन्स, खान अब्दुलवली खान की नेशनल डेमोक्रेटिक पार्टी, और जिया के कट्टर मुस्लिम स्वाभाव के कारण जमाते इस्लामी का जबरदस्त समर्थन प्राप्त हुआ। जिया पाकिस्तान को उच्च मुस्लिम राष्ट्र की स्थापना में कार्यरत होने के साथ-साथ श्वेतपत्रों और अन्य कथित अभियोगों में व्यस्त थे। इन तमाम खोजबीनों के अन्तर्गत लगभग दो साल तक भुट्टो को कारावास में प्रताडित करके 4 अप्रैल, 1979 को जीवन लीला ही समाप्त कर दी गई। जिया आज, भुट्टो और भुट्टो की पार्टी का नामोनिशान तक मिटाने के प्रयास में जी-जान से लगे हुए हैं। जबकि आज जिया एक ऐसी स्थिति में खड़े है जिसके एक तरफ कुआँ है दूसरी तरफ खाई।

भुट्टो ने काल-कोठरी में लिखा था, "मैं एक राष्ट्र को बनाने और राष्ट्र की जनता की सेवा करने के लिए पैदा हुआ था, न कि प्रतिद्वन्द्वी, एहसान फरामोश, क्रूर आदमी के द्वारा काल-कोठरी में बन्द होने के लिए।"

और यही कारण था कि भुट्टो ने सम्बन्धों और अपने विस्तृत दृष्टि-कोण के कारण, अपने शासन काल में मित्र राष्ट्रों से भयंकर सहायता प्राप्त की। यह आर्थिक सहायता 1977 में 13,902 मिलियन डालर तक

पहुँच चुकी थी। पाकिस्तान ने 9,400 मिलियन डालर 1977-78 सुरक्षा पर व्यय करके सेना को आधुनिक शस्त्रो मे सुसज्जित रखा तथा राष्ट्र की जनता को माओवादी पार्टी के घोषणा-पत्र से तुरन्त लाभ पहुँचाने के प्रयास किये।

11 मई, 1974 में भारत ने भूमिगत परमाणु विस्फोट करके जहाँ विश्व को आश्चर्य मे डाला, वहाँ पाकिस्तान पर इसका प्रभाव आतंक के रूप मे पड़ा। भूमिगत परमाणु विस्फोट को लेकर भुट्टो हीन भावना से ग्रस्त हो गये। भारत ही सबसे अधिक भुट्टो के अन्तर्मन मे प्रतिस्पर्धा का केन्द्र और प्रेरणा स्रोत था। एशिया के जोन० एफ० कनैडी कहे जाने वाले भुट्टो ने चीख-चीखकर, जनता को भय मोहित कर विश्व जनमत अपने अनुकूल बनाना प्रारम्भ कर दिया। अन्तत भुट्टो ने घोषणा कर दी कि वह परमाणु बम बनाएगा चाहे पाकिस्तान को घास ही क्यों न खानी पड़े। इस घोषणा से भुट्टो की जिद ही जाहिर हुई।

अमेरिका के समर्थक भुट्टो ने पहले ही अपनी नीतियो, समाजवादी दृष्टिकोण से अमेरिका को नाराज कर दिया था, इस सकल्प और जिद ने अमेरिका को पाकिस्तान पर अधिक ध्यान देने को मजबूर किया। अमेरिका अपनी नीतियों के कारण भारत या पाकिस्तान को परमाणु सयंत्रों की जाँच या निगरानी के बिना यूरेनियम नही दे सकता था। और कोई भी राष्ट्र निगरानी को राष्ट्रहित में अच्छा नही समझता है। क्योंकि जाँच और निगरानी रखने का मतलब होता है राष्ट्र के आन्तरिक मामलों में अधिक हस्तक्षेप तथा महाशक्तियों का अधिक प्रभाव। अन्य सभी योजनाओं मे अमेरिका पाकिस्तान पर अपना प्रभाव बनाये रखने के लिए मदद करता आया है। और अमेरिका अपने स्वार्थों और शक्ति सन्तुलन को बनाये रखने के कारण इस योजना को अच्छा नहीं समझता था। परिणामस्वरूप अमेरिका ने परमाणु बम योजना मे सहयोग देने मे साफ इन्कार कर दिया। भुट्टो इस पर हताश होकर चुप नही बैठा और उसने फ्रास मे समझौता कर लिया। फ्रास ने पाकिस्तान को यूरेनियम देना स्वीकार किया। भुट्टो की यह प्रेरणा ही भावना मे उभरी थी। भुट्टो सोचता था कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मुस्लिम राष्ट्र तेल सप्लाई करते हैं। लिबिया

के कर्नल गद्दाफी की योजनानुसार तेल को लेकर मुस्लिम राष्ट्र शक्ति के रूप में उभरे और उन्होंने तेल को महाशक्तियों के विरोध मे एक हथियार की तरह मे इस्तेमाल किया। इस सब राजनैतिक मनमुटाव के कारण ही बादशाह फैजल को जान से हाथ धोना पडा था। भुट्टो जानता था कि तेल जैसा ्थियार पास होने के बावजूद मुस्लिम राष्ट्र महाशक्तियों के वर्ग मे नही आ सकते जब तक कि वह परमाणु योजनाओं पर काम न करें। एक सच्चे मुस्लिम के नाते उनका सपना था कि किसी मुस्लिम राष्ट्र के पास परमाणु बम भी होने चाहिए। इस योजना मे कई मुस्लिम राष्ट्रों ने भुट्टो का सहयोग दिया।

जहाँ मुस्लिम राष्ट्रों ने भुट्टो को सहयोग देना शुरू किया वही भुट्टो को अमेरिकी सस्था सी० आई० ए० ने अपने रास्तों से हटाने की योजना पर काम करना शुरू किया। पाकिस्तान के चुनावों मे भुट्टो विरोधी दलों पर ठीक चिली की योजनानुसार असीमित डालर भुट्टो और उसकी पार्टी को हराने के लिए व्यय किये परन्तु जब भुट्टो और भुट्टो की पार्टी पी० पी० पी० बहुमत मे आ गई तो विरोधस्वरूप पाकिस्तान मे दगे इस सीमा तक हुए कि विद्रोह की शक्ल मे दीखने लगे। भुट्टो ने इन दगों का कठोरता मे दमन किया, क्योंकि दोनो तानाशाह के साथ रहकर तथा न झुकने की प्रवृत्ति के शिकार भुट्टो अधिक कठोर हो गये। इसके पीछे भी भुट्टो की हीनभावना ही काम कर रही थी। अपने विश्वासपात्र जनरल जिया और मित्र के रूप मे रक्षामन्त्री जनरल नियाज़ी उनको सहयोग दे रहे थे। परन्तु यकायक भुट्टो को सैनिक विद्रोह द्वारा हटा दिया गया और जनरल जिया भुट्टो की गर्दन पर सवार हो गये। जैसा कि स्वयं भुट्टो ने जेल मे लिखा था। सी० आई० ए० उनकी जान लेने पर आमादा थी, अमरीकी शासक भुट्टो को ना सिर्फ इस कारण फाँसी देने के पक्ष में हैं कि वह दुनिया के इस हिस्से पर सी० आई० ए० की काली करतूतो पर से पर्दा उठायेंगे। बल्कि इसलिए भी कि एक समय मे भुट्टो भी सी०आई०ए० की योजनाओं मे पूरी तरह से सहयोगी थे। इस तथ्य को यहाँ स्वीकार करने में कोई हिचक नही होनी चाहिए-कि भुट्टो का उन्होंने आरम्भ मे इसलिए समर्थन किया था कि भविष्य मे वे अपने हाथों की कठपुतली

बनाये रखेंगे, जैसा कि अमरीकियों ने एशिया और अफ्रीका के कई नेताओं के साथ किया था।

भुट्टो कारावास मे रहकर भी चुप नहीं बैठे। वे लगातार लिखते रहे। उन्होने अपनी पुस्तक जो कारावास में ही लिखी बल्कि कहना चाहिए कि, "सर्वोच्च न्यायालय मे दाखिल करने के लिए जो अपील लिखी, उसमे भुट्टो ने लिखा है। अमेरिका नही चाहता कि पाकिस्तान अणुबम बनाए लेकिन जब भुट्टो इस निर्णय पर दृढ रहे और फ्रांस से समझौता कर लिया, तो पहले अमेरिका ने फ्रांस पर इस योजना मे अलग रहने के लिए दबाव डाला। अमेरिका को जब इसमे सफलता नही मिली, तो भुट्टो को ही अपदस्थ करने की योजना बनायी।"

कुछ प्रसिद्ध राजनीतिज्ञों का कहना है कि पोकरन मे इन्दिरा गाधी द्वारा किये गये विस्फोट के दिन ही इन्दिरा को भी अपदस्थ करने की योजना बना ली। कुछ सूत्रों के अनुसार 1971 के चुनावो में जितनी रुचि सोवियत संघ ने दिखायी थी, उससे कई गुना रुचि अमेरिका ने 1977 के चुनावों मे कांग्रेस को अपदस्थ करने में दिखायी। भुट्टो ने अपनी घोषणाओं और बयानों को छपवाने के लिए अपनी बेटी जो आक्सफोर्ड से राजनीति शास्त्र पढकर लौटी थी, उसको माध्यम बना लिया। फलस्वरूप बेटी बेनजीर और पत्नी नसरत को भी नजरबन्दी की यातना को भुगतना पड़ा।

जिया ने, श्वेत पत्रों, जांच आयोगों और अन्य इस तरह की बाट पाकिस्तान में लाकर, भुट्टो की लोकप्रियता को घटाना चाहा। जिया एकजुट होकर मुस्लिम राष्ट्रों से सम्बन्ध बनाने में लग गये। अमरीकी इशारों पर जिया ने एक घटना खोज निकाली 'कसूरी काड,' जिसको कई समाचारपत्रों ने झूठा और बेबुनियाद ठहराया।

इस 'तथाकथित कांड' की शुरुआत 10 नवम्बर, 1974 को हुई थी और 11 नवम्बर 1974 को पुलिस स्टेशन में दर्ज प्रथम सूचना के अनुसार आगे की कार्यवाही शुरू की गयी।

11 नवम्बर, 1974 को मृतक के पुत्र, पकिस्तान नेशनल असेम्बली के भूतपूर्व अध्यक्ष, तथा किसी समय भुट्टो के प्रबल समर्थक 'अहमद

होना था जिसकी शुरुआत नेशनल एलाइन्स ने चुनावों में घपला और गड़-बड़ी का नारा देकर की, परन्तु एक-आध महीने में यह विरोध कम होने लगा तब उन्होंने इस विरोध को बनाये रखने के लिए निजाम-ए-मुस्तफा के विचार को विरोध की बातो मे डाल दिया। उन्होंने भुट्टो को नास्तिक काफिर और शराबी कहा। किसी हद तक इन बातों ने प्रभाव भी डाला किन्तु विदेशी हस्तक्षेप सबसे प्रभावशाली कारण इस आन्दोलन को सफल बनाने के लिए साबित हुआ वह था सी० आई० ए० जब भुट्टो सत्ता में थे तब श्री अजीज अहमद (भुट्टो के विदेश सचिव) ने पेरिस में अमेरिका के सचिव श्री साइरस वांस से आन्दोलनकारियों में सी० आई० ए० की गतिविधियों की शिकायत की थी और साइरस वांस इसका विरोध नही कर पाये थे। अगर याद करो, कि हैनरी किसीजर ने बहुत पहले चेतावनी दे दी थी कि भुट्टो फ्रांस से सहयोग प्राप्त जो परमाणु योजना पाकिस्तान मे लगा रहे हैं, अगर उसकी जांच और देखने की इजाजत नही देते तो भुट्टो को यह दुनिया मे एक उदाहरण के तौर पर प्रस्तुत करेंगे। मैं पूरी तरह से समझता हूँ कि अगर भुट्टो परमाणु योजना पर समझौतावादी दृष्टिकोण अपना लेता तो आज भी सत्ता मे अपने स्थान पर बना रहता।"

"हमारी विदेश नीतियां सदैव कमजोर रही हैं, दुर्भाग्यवश जब से पाकिस्तान एक राष्ट्र रूप मे उभरा और तभी से भारत एक चुनौती, एक बड़े डर के तौर पर पाकिस्तान पर छाया रहा। हम हमेशा एक महाशक्ति के चगुल में मदद की इच्छा से रहे। लियाकत अली खां ! अमरीका के करीब ले गए। दुर्भाग्यवश लियाकत अली की हत्या के बाद, बडे व्यापारियो ने और अधिकारियो ने राष्ट्र को अपने हाथों मे रखने के लिए हाथ मिला लिए। चुनाव नही हुए। राष्ट्र मे राजनैतिक स्थायित्व नही था। 1956 में हमने अपना संविधान बनाया। अब अगर पाकिस्तान नेशनल एलायंस के आन्दोलन को देखें तो इस आन्दोलन पर करोडो रुपये खर्च किए जा रहे हैं, पाकिस्तान नेशनल एलायंस के सभी सदस्य जो जेलों मे बन्द हैं, अपना परिवार रखते हैं, जिसकी देखभाल के लिए यह रुपया दिया जाता है और आज पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी के

हजारों सदस्य जेलों में पड़े हुए हैं, हमारे पास उनकी सही लिस्ट भी नहीं है और न ही उनके पारिवारिक पते हैं कि हम उनसे सम्पर्क बना सकें, जबकि पाकिस्तान नेशनल एलायंस ने परिवारों को प्रत्येक चीज मदद के लिए दी। शुरू से ही जमाते इस्लामी मुख्य रूप से सी० आई० ए० के चंगुल में रही। निवृत एयर मार्शल असगर खाँ पाकिस्तान नेशनल एलायंस के सहयोगी रहे परन्तु बाद में अलग हो गये। उन्होंने सी० आई० ए० के सम्बन्ध में संदिग्धता प्रस्तुत की थी। पाकिस्तान नेशनल एलायंस के अध्यक्ष मुफ्ती महमूद स्वयं सी० आई० ए० के मोहरे नहीं है, इससे मैं सहमत हूँ। वह आदमी सिद्धान्तवादी और दृढ़ है और नसरुल्लाह खाँ पर भी सन्देह नहीं होना चाहिए परन्तु जबसे वे एलायंस में है तभी से वे भुट्टो के जबरदस्त विरोधी है क्योंकि भुट्टो इतने प्रभावशाली थे कि वे भुट्टो को अपदस्थ करने के लिए किसी से भी हाथ मिला सकते थे।

याह्या बख्तियार ने लाहौर उच्च न्यायालय में भुट्टो के मुकदमे के विषय में बताया, "यह मेरा मुकदमा है, उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश ने शत्रुतापूर्ण; पूर्वग्राही और पक्षपातपूर्ण व्यवहार का परिचय दिया है। 5 जुलाई, 1977 को भुट्टो के अपदस्थ होने के बाद 13 जुलाई, 1977 को ही मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किया गया था और कुछ दिनों बाद ही जब जनरल जिया ने चुनावों की घोषणा की तब मुख्य न्यायाधीश पद से मुख्य चुनाव आयुक्त बनाया गया था। एक प्रेस कांफ्रेंस में भुट्टो और भुट्टो की पार्टी को भी बदनाम किया था। वह उच्च न्यायालय का वरिष्ठ न्यायाधीश था, परन्तु भुट्टो ने उसको न्यायाधीश के पद पर नियुक्त नहीं किया था और न ही उच्चतम न्यायालय में ही नियुक्ति की थी। यह मेरी राय थी, कि वह सिविल जज होने योग्य नहीं था, तथा भुट्टो को यह सुझाव मैंने ही दिया था। कोई भी जो उच्च न्यायालय के निर्णय को पढ़ेगा वह भुट्टो के पक्ष में सहमत होगा। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के भूतपूर्व एटर्नी जनरल रेमजे क्लार्क जो कनैडी और जोहनसन के शासनकाल में रहे, उन्होंने पक्षपातपूर्ण व्यवहार के विषय में लिखा है। मानव अधिकार आयोग के वरिष्ठ वकील ने इसी

प्रकार की व्याख्या एक समाचार पत्र "ल मोंद"

हम लोग उच्चतम न्यायालय मे लगभग 6 महीने तक बहस करते रहे। मैं आज भी अपने राष्ट्र की जनता मे कही-न-कही कुछ एकात्मकता पाता हूँ। एक-दो जज आज भी ईमानदार हैं और वे भुट्टो को दोषी नही बता सकते। हमने उच्चतम न्यायालय मे 9 जजो के सामने सुनवायी शुरू की, उनमे एक निवृत था परन्तु वह एक ईमानदार आदमी था। उसने सरेआम खुली अदालत मे अपनी राय जाहिर करते हुए कहा कि यह मुकदमा नही है।

इसके बाद मुझे महसूस हुआ कि न्यायालय के आधे लोग मेरे साथ है।

याह्या बख्तियार ने दिसम्बर, 1978 मे कहा था कि यदि भुट्टो को फासी दी गई तो राष्ट्र कई हिस्सो मे विभक्त हो जाएगा। वे यहाँ जबरदस्त पंजाब विरोधी भावनाओं का जिक्र कर रहे थे। उन्होंने पाकिस्तान के तीन प्रान्तों सिन्ध, बलूचिस्तान, उ० प० सीमान्त प्रदेश मे फैली जबरदस्त पंजाब विरोधी भावनाओं का उदाहरण दिया और यह वास्तविकता रही कि सिन्ध प्रान्त के भुट्टो पाकिस्तान के प्रधानमन्त्री रहे। यहाँ वह सिन्धी व्यक्तित्व था जो पंजाब प्रदेश से भी 80% वोट लेने में सफल रहा।

जैसा कि एक अमरीकी पत्रकार ने कहा था कि यदि भुट्टो को फासी दी गई तो राष्ट्र बिखर जायेगा, और अगर छोड दिया गया तो राष्ट्र उन्नति के शिखर पर जाएगा।

1979 का वर्ष पाकिस्तान के लिए उपद्रव का वर्ष साबित होगा। राष्ट्र की जनता बलूचिस्तान के बारे में चिन्तित है।

पाकिस्तानी विरोधी दल सदैव अपने आपको गलियो और सडको पर ही क्यों अभिव्यक्त करता है के जवाब मे याह्या बख्तियार ने कहा, "इसका कारण एकमात्र यह नही है कि पाकिस्तान मे आयोजित विरोध नही है बल्कि यहाँ पर संगठित राजनैतिक विरोधी पार्टी भी नही है। जबकि मुस्लिम लीग भी पाकिस्तान बनने के दो और तीन साल बाद ही विभक्त हो गयी। राजनैतिक पार्टियाँ कभी भी संगठित नही थीं,

मुस्लिम लीग ने राजनैतिक आन्दोलन चलाया। फलस्वरूप पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी ने भी इस ख्याल से वास्तविक आन्दोलन चलाया जो भुट्टो को राज्य सत्ता तक ले गया। जबकि पाकिस्तानी राजनीतिज्ञ परेशानियों को न देखकर, सुविधा और आराम परस्त हो गये। यह आज भी हो रहा है, इसका एक कारण यह भी है कि हमने चुनाव लगातार नहीं कराये। और एक आम आदमी कभी भी सही तरीके से अपने को राजनैतिक मामलों मे अभिव्यक्त नही कर पाया।

नवम्बर 1978 में याह्या बख्तियार जिन आधारो पर भुट्टो की रिहाई के विषय में विश्वास प्रकट करते थे, उन्होंने मुकदमे को ही सजा के तौर पर खारिज कर दिया था। पहला, सीमा सुरक्षा दल ने कहा था कि 'कसूरी हत्याकाण्ड' में 25 छोटी मशीनगनें भुट्टो के आदेश पर इस्तेमाल की गयी थी, जबकि विशेषज्ञों की राय थी कि बदली हुई खाली छोटी मशीनगनें न्यायालय मे दिखायी गयी। दूसरा इस मुकदमे का प्रमुख गवाह लाहौर में नही था, जिस समय हत्या की गयी। तीसरा पक्ष बख्तियार का था कि जिस जीप को सीमा सुरक्षा दल के आदेश पर इस हत्याकाण्ड में प्रयोग किया गया था, वह सीमा सुरक्षा दल के अधिकार में नही थी। अन्तिम पक्ष बख्तियार का था सीमा सुरक्षा दल ने जिस गोला-बारूद को न्यायालय में दिखाया था कि यह प्रयोग किया गया था, वह गोला-बारूद भी सीमा-सुरक्षा दल के अधिकार में नहीं थी, इस तरह से यह झूठा मुकदमा, स्वयं ही समाप्त हो जाता है।

इन सब कारणों से मुख्य निर्णय यही लिया जा सकता है कि भुट्टो का जिन्दा रहना भी सी० आई० ए० को मुश्किल में डाल सकता था, इसलिए सी० आई० ए० ने भुट्टो की हत्या के लिए झूठे मुकदमे को जिया के माध्यम से गढ़वाकर, हत्या को न्यायिक रूप देने की भरसक कोशिश की। चूंकि लोकतन्त्र का चहेता जनरल जिया की तानाशाही पर भी भारी पड़ रहा था और पाकिस्तान में तनावपूर्ण स्थिति बनी हुई थी, जो जिया को भारी पड़ रही थी, जिया ने न्याय और धर्म का सहारा लेकर जनता के तनाव को कम करना चाहा जैसा कि खुमैनी ईरान में कर रहे थे, जिया, निजामे-मुस्तफा लागू करके मुस्लिम राष्ट्रो

मे अपने आपको लोकप्रिय बनाकर, अपनी तानाशाही प्रवृत्तियों पर पर्दा डालना चाहते थे, तथा भुट्टो की लोकप्रियता को कम करके जैसाकि जमाते इस्लामी ने भुट्टो को काफिर और शराबी कहा था उसी आधार पर भुट्टो को धर्म विरोधी तथा अपराधी साबित करके, जिया अपने आगामी कार्यक्रम को न्यायसंगत बनाने की कोशिश मे लगे थे। ये योजनाएँ जनरल जिया को सी० आई० ए० के एजेण्ट जो पाकिस्तान में मौजूद हैं, वह बनाकर देते थे।

जैसाकि जिया प्रसन्न होकर कहते है कि मैंने राष्ट्र के नागरिकों को बहुत अधिक कुछ नही दिया, परन्तु मैंने राष्ट्र के नागरिकों को न्यायपूर्ण शासन दिया। कई अमरीकी पत्रकारो ने इसको व्यंग्य की तरह मे लिया और भुट्टो के मुकदमे को प्रगतिशील राष्ट्रों मे न्यायपालिका का उपहास उडाते हुए, स्वतन्त्र न्यायपालिका पर कलंक बताया।

उच्चतम न्यायालय के कक्ष मे, लकडी की सुन्दर मेज पर दो टेलीफोन रक्खे हैं, यह कक्ष पाकिस्तान के मुख्य न्यायाधीश अनवर-उल-हक का है। एक टेलीफोन का रंग सर्फेद है जो कार्यालय के क्लर्कों से सम्बन्धित रहते हुए सामान्य रूप से काम करता है। सभी टेलीफोनों की स्वभावत: पहले परख की जाती है, अनवर-उल-हक के स्टाफ के लोगों के द्वारा। दूसरा टेलीफोन हरे रंग का है और मुख्य न्यायाधीश, प्रथम मुख्य न्यायाधीश हैं जिनके पास हरे रंग का फोन है। यह बहुत सीधी-सी बात है कि हरे रंग का फोन 'हॉट-लाइन' के माध्यम मे पाकिस्तान के सैनिक शासक जिया-उल-हक से सम्बन्धित रहता है।

मुख्य न्यायाधीश अनवर-उल-हक को यह टेलीफोन 1977 मे दिया गया था; जिया द्वारा मुख्य न्यायाधीश के पद पर नियुक्त किये जाने के एकदम बाद! इस टेलीफोन की उपस्थिति अन्य सहयोगी न्यायाधीशों के सोचने का कारण बनी हुई थी। जनरल जिया और उसके अधिकारी लगातार यह घोषित करते रहे कि उन्हें भुट्टो के मुकदमे के बारे मे उच्च न्यायालय के निर्णय का कुछ पता नहीं है बल्कि यह भी कि यह निर्णय कब तैयार हुआ है तथा न्यायाधीशों की राय कब विभाजित

हुई ?

आज यह सब धोखा दीखता है। एक अवसर पर दो न्यायाधीश
अनवर-उल-हक के कक्ष में दूसरे मामलों पर विचार कर रहे थे कि हरा
टेलीफोन घनघना उठा, जो जनरल जिया के कार्यालय से था, यह जानने
के लिए कि भुट्टो के मुकदमे मे क्या कार्यवाही हो रही है। टेलीफोन की
बातचीत वहाँ के दर्शको के लिए भी गम्भीर रूप से उत्साहजनक थी।
भुट्टो रावलपिण्डी जेल की कालकोठरी मे रहते हुए भी 'हरे फोन'
पर हुई सभी गतिविधियाँ जानता था और तथाकथित 'कसूरी हत्याकाण्ड'
के विषय में कहता था कि उसने कभी भी इस तरह का मूर्खतापूर्ण कार्य
नहीं किया है, जैसाकि यह कार्य है। भुट्टो ने यह सब मसूद महमूद को तब
कही जब वह वादा माफ गवाह होते हुए भी भुट्टो के पास एक सन्देश-
वाहक की तरह से गये।

मसूद महमूद फासी जैसे क्रूर निर्णय के साथ सन्देशवाहक बनकर
भुट्टो के पास क्यो गये ? मसूद महमूद तथाकथित कसूरी हत्याकाण्ड के
विषय में मियाँ मोहम्मद अब्बास का सन्देश लेकर गए थे। जिस पर
भुट्टो ने कहा था कि अब्बास को यह सन्देश सीधे 'हरे फोन' के द्वारा
दिया गया था, जो मसूद महमूद लेकर आए थे। यह बहुत ही सीधी
बात है। पाकिस्तान में सिर्फ 100 'हरे फोन' हैं। यह फोन बहुत ही
आन्तरिक-शासन सम्बन्धित सचिवों, मन्त्रियों और अब मुख्य न्यायाधीशों
को सम्पर्क में रखते हुए, सुरक्षा की दृष्टि से भी बेहतर काम करते हैं।

दिसम्बर के महीने में अन्य सरकारी कर्मचारी अनवर-उल-हक के
टेलीफोनों को सुनने मे मदद देते थे। जिन दिनो 3 और 4 अनुपात मे
भुट्टो के मुकदमे का निर्णय लिया गया। प्रमुख निर्णय अनवर-उल-हक
ने स्वयं अपने हाथ से लिखा था।

तब अनवर-उल-हक को फोन पर गालियाँ, चेतावनी और धमकियाँ
दी जाती थी, स्थिति इतनी विकट हो गयी कि अनवर-उल-हक के घर
पर एक नया स्विच बोर्ड, फोन सुनने और रिकार्ड करने के लिए लगाया
गया ताकि यह घर पर आराम से सो पाये। फोनों की सरकारी कर्म-
चारियों द्वारा तहकीकात की जाती।

सशस्त्र पुलिस द्वारा मुख्य न्यायाधीश का घर सुरक्षित रखा जाता, और एक सशस्त्र अंगरक्षक मुख्य न्यायाधीश पर व घर पर सदैव निगरानी रखता। वह घर से रावलपिण्डी उच्चतम न्यायालय के उस कक्ष तक साथ ही रहता, जो कक्ष अनवर-उल-हक का है।

अनवर-उल-हक की आयु भी ध्यान देने योग्य है। अनवर-उल-हक बूढे है, भुट्टो की अपील से कुछ दिन पहले उनके हाथ भी कांपने लगे थे।

मार्च के महीने मे पत्रकार माईकेल डी० जोसेफ ने लिखा "अब महत्त्वपूर्ण बात यह है कि सात सहयोगी न्यायाधीशो को अन्ततः पारस्परिक एकरूपता मे बनाये रखना आवश्यक है। "न्यायाधीशों मे विभाजन गम्भीर और सख्त है और एक दो अवसर पर उन्होने खुले न्यायालय मे अभिव्यक्त किया है। मतभेद रखते हुए न्यायाधीश सफदर शाह इस महीने के शुरू मे सरकारी वकील के ऊपर न्यायालय मे बरस पड़े, "तुम नहीं जानते कि इस न्यायपीठ पर बैठे हम लोगों पर कितना दबाव है।" बाद मे सफदर शाह ने अपने आपको सम्हालते हुए इस वाक्य के अर्थ को गोलमोल बना दिया।

भुट्टो के मुकदमे मे मतभेद रखने वाले तीनों न्यायाधीशो ने इरादा किया कि इस पूर्व निर्णय को नष्ट कर देंगे, और बताएँगे कि कानूनी तरीके से क्या है ? वह अपने सहयोगी न्यायाधीशो को भी इस मर्मभेदी निर्णय के लिए धिक्कारेंगे। न्यायाधीशों के सामने यही मात्र एक स्थिति है जो भूतपूर्व प्रधानमन्त्री भुट्टो के मुकदमे के आदेश पर हस्ताक्षर करते हुए, सफदर शाह, दोराब पटेल और मोहम्मद हलीम की भावनाओं को एकसाथ जोड रही थी। इस निर्णय के बाद सिन्ध उच्च न्यायालय मे तीन याचिकाएँ दायर की गई। इनमे भुट्टो को फासी से छुटकारा दिलाने की बात उठाई गई थी परन्तु ये याचिकाएँ बन्दी प्रत्यक्षीकरण के नियमों के अनुसार खारिज कर दी गई। इनमे एक याचिका भुट्टो की पुत्री बेनजीर भुट्टो द्वारा दायर की गयी। इसमे भुट्टो को फासी से छुटकारा दिलाने की बात उठायी गयी थी। तीसरी याचिका भुट्टो के सचिव और पाकिस्तान के भूतपूर्व मन्त्री अब्दुल हफीज पीरजादा ने दायर की थी। यह भी रद्द कर दी गई। इस याचिका मे राष्ट्रपति जिया-उल-हक के

सत्तारूढ़ होने और पाकिस्तान के उच्चतम न्यायालय मे मुख्य न्यायाधीश अनवर-उल-हक की नियुक्ति को भी चुनौती दी गयी थी।

इसके बाद भुट्टो का जीवन मात्र एक तानाशाही अहम की सन्तुष्टि पर टिका रह गया। राष्ट्रपति जिया से दया की अपील स्वयं भुट्टो द्वारा की जाएँ। इसी भावना ने पुनर्विचार के लिए बाध्य किया।

क्या यह पूर्ण बहुमत के निर्णय मे बदल दिया गया है। चार और तीन के अनुपात मे क्या एक आदमी को फांसी दी जानी चाहिए?

4 अप्रैल 1979 की रात ढाई बजे भुट्टो को फांसी दी गयी, क्योकि सी० आई० ए० चाहता था, और अमरीकी शासन के हाथो मे खेलने वाले जिया चाहते थे कि लोकतन्त्र पर दृढ़ रहने वाले भुट्टो, अब उसके लिए खतरा बन चुके हैं।

अगर जिया राजनीतिज्ञ होते तो जानते कि किसी साधारण आदमी को इस प्रकार फांसी चढ़ाकर खतरा टाला नही जाता, बल्कि खतरा खरीदा जाता है, जो जिया ने खरीदा है।

जनरल जिया का अहम उन सभी राष्ट्रो के सम्मान से बड़ा प्रतीत हुआ जिन राष्ट्रो ने जनरल जिया से 'दया की अपील' की थी! परन्तु जनरल जिया का 'अहम्' भुट्टो के सम्मान से हार गया। जिया चाहते थे कि भुट्टो स्वय दया की अपील करें, एक तानाशाह की हीन भावना में से उनके अहम को सन्तुष्ट करें, परन्तु भुट्टो स्वय माफी मांगने की बात तो सोच ही नही सकते थे, उसका कारण था कि अगर उन्होने माफी मांगी तो निर्दोष होते हुए भी दोषी मान लिये जायेंगे और इसको राजनैतिक दृष्टि मे भुट्टो और भुट्टो की पार्टी को नीचा दिखाने के लिए उपयोग मे भी लाया जायेगा। इसलिए अपने सिद्धान्तो और विचार पर अडिग भुट्टो ने अपने पारिवारिक सम्बन्धियो को माफी न मांगने की सख्त हिदायत दे दी! परन्तु जिया की बेचैनी इससे और बढ़ गयी, उन्होंने भुट्टो को माफी मांगने के लिए दबाव दिया और पिटाई तक करायी गयी। भुट्टो के निकटतम सम्बन्धियों ने बताया था कि रावलपिण्डी जेल के गार्डों ने भुट्टो की मार्च में दो बार बुरी तरह से पिटाई की। भुट्टो को खून की उल्टियाँ होने लगी, भुट्टो की बहन मुनव्वर बेगम ने भी इसको कुरान की कसम खाते हुए

सच बताया। बेगम मुनव्वर का कहना था कि बहुत से लोगों ने मिलकर दूसरी बार पिटाई की है। बेगम मुनव्वर 28 मार्च को जेल में भुट्टो से मिलने गयी थी। बेगम मुनव्वर ने यह भी कहा कि यह सब माफी माँगने के लिए, मजबूर करने की कोशिश है जबकि भुट्टो माफी न माँगने के निर्णय पर अटल हैं। भुट्टो के चिकित्सक एवं विशेषज्ञ डॉ० जफर नियाजी ने भी बताया कि भुट्टो की हालत अच्छी नही है। अपने दांतों के रोग से वह पहले ही परेशान थे, जिसके कारण वह कुछ भी खा-पी नही सकते थे। *अब पिटाई से उनकी छाती मे चोट आयी है,* जिसके कारण उनके मुँह से खून आ रहा है।

जिया द्वारा यह घोषणा किये जाने के बाद कि भुट्टो को प्राणदान के लिए, भुट्टो के निकट सम्बन्धी अथवा भुट्टो स्वय अपील करें, इस पर भुट्टो की बहन ने प्राणदान देने की अपील भी जनरल जिया से की थी। इसके बाद भुट्टो के निकटतम सहयोगी और भूतपूर्व वित्तमन्त्री श्री अब्दुल हफीज पीरजादा तथा भूतपूर्व विदेश मन्त्री अजीजअहमद ने भी इसी आशय से प्राणदान की अपील जनरल जिया से की थी। इसके अतिरिक्त लाहौर के एक फिल्म कलाकार मुहम्मद अली ने भी प्राणदान की याचिका दायर की। प्राणदान की याचिका दायर करने से कुछ समय पहले ही पीर-जादा भुट्टो से कालकोठरी मे मिले थे। याचिका दायर करने के बाद पीरजादा ने कहा, "मैंने अपने जीवन मे पहली बार भुट्टो के साथ धोखा किया है तथा उनकी राय के खिलाफ कदम उठाया है। उन्हे देखकर मुझमें इतनी शक्ति नही थी, कि मै भुट्टो को अपने निर्णय से अवगत करा सकूं। भूतपूर्व प्रधानमन्त्री भुट्टो ने सभी सम्बन्धियो से प्राणदान की अपील *के लिए मना किया था क्योंकि भुट्टो के अनुसार इसका अर्थ यह निकाला* जाता कि 1974 मे राजनैतिक विरोधी की हत्या करने मे मेरा हाथ है।" बहन व मित्रों की प्राणदान की अपील दायर किये जाने के बाद भी भुट्टो अपने निर्णय पर दृढ रहे। भुट्टो के चचेरे भाई मुमताज अली भुट्टो ने रावलपिण्डी जेल की कालकोठरी मे भुट्टो से मुलाकात करने के बाद कहा, कि भुट्टो किसी भी प्रकार के रहम, दया और याचना के विरुद्ध है। मेरी आधे घण्टे की बातचीत मे प्राणदान की अपील को लेकर वे गुस्से मे थे।

उन्होंने बताया, कि भुट्टो ने अपनी नियति फाँसी ही मान ली है, और भुट्टो ने इसके लिए स्वयं को मानसिक रूप से तैयार भी कर लिया है, लेकिन इसके बावजूद वह एक शक्ति स्तम्भ की तरह दीख पड़ते थे। वे मुझसे बराबर हँस-हँसकर बातचीत करते रहे।

परन्तु वास्तव में भुट्टो अपनी मौत का इन्तजार कर रहे थे। लाहौर न्यायालय द्वारा भेजा गया, 'काला वारंट' जेल के अधीक्षक को प्राप्त हो गया। 'काला वारंट' मिलने पर भुट्टो के अपने कपड़े उतरवा दिये गये और उनको जेल के कपड़े कमीज-पाजामा पहना दिया गया। भुट्टो के पास से मार्च के प्रथम सप्ताह में वह चारपाई भी छीन ली गई जिस पर भुट्टो आराम करते थे। कुर्सी और मेज भी तथा सारी चीजें हटा ली गईं। हजामत बनाने का सामान व लिखने पढ़ने की सुविधा भी छीन ली गई। बिजली काट दी गई। बेटी बेनजीर और पत्नी नसरत मिलने गईं, तब भुट्टो को सीखचों में से ही बात करने की इजाजत दी गयी। भुट्टो और परिवार के सदस्य पहले ही स्पष्ट शब्दों में यह कह चुके थे कि जनरल जिया प्राणदान की अपील स्वीकार नहीं करेंगे।

इस बीच पाकिस्तान में स्थित समस्त अरब राष्ट्रों के राजदूतों ने भुट्टो को प्राणदान देने की अपील जनरल जिया से की। संयुक्त रूप से की गई अपील में, साऊदी अरब, मिश्र, ईराक, सूडान, सोमालिया, मोरक्को, कुवैत, लीबिया, सीरिया अल्जीरिया, संयुक्त अरब, अमीरात व ओमन-कातार शामिल थे।

संयुक्त राष्ट्र अमेरिका ने भी अपील की थी, श्रीलंका, नेपाल, इन्डोनेशिया तथा बर्मा भी प्राणदान दिलाने के पक्ष में जिया को लिख चुके थे। इसके अतिरिक्त यूरोपीय साझा बाजार के नौ राष्ट्र भी राष्ट्रपति जिया-उल-हक से भुट्टो को क्षमा करने की अपील कर चुके थे।

साऊदी अरब के शाह खालिद ने 'जा बख्शी' इल्तिजा करते हुए, आर्थिक सहायता बन्द करने की चेतावनी भी दी थी जिया ने इस अपील को रद्द या वापस करने के लिए अपना विशेष दूत मौलाना मौद्दी को शाह के पास भेजा था, परन्तु मौलाना मौद्दी साऊदी अरब के शाह खालिद को

समझा न सके, निराश होकर वापिस लौटे।

पाकिस्तान के भूतपूर्व राष्ट्रपति तथा मुख्य न्यायाधीश श्री फजल अली चौधरी ने भी भुट्टो के प्राणदण्ड को रद्द करने की अपील की। परन्तु पाकिस्तान के समाचारपत्र जो तानाशाही के साये और काली रातों मे छप रहे थे फजल अली चौधरी की अपील को प्रकाशित न कर पाये।

ज्यों-ज्यो अपीलो की सख्या दिन व दिन बढ़ती जा रही थी त्यों-त्यो जिया का मानसिक स्थिति अनिवार्य और बौखलाहट में बदल रही थी, जिया अपनी ज़िद को मनवाने के लिए भुट्टो पर जुल्म, अत्याचार बढ़ाते जाते थे। यह यातनाएँ और अत्याचार भुट्टो मे आत्मविश्वास और दृढ सकल्प पैदा करते। भुट्टो कहते, "मैंने उन्हें स्वतन्त्र रूप से जीना सिखाया, अब मैं उन्हें मरना सिखाऊँगा अपने राष्ट्र की जनता का नेता, तीसरी दुनिया का नेता, इस्लामिक सम्मेलन का शीर्षस्थ नेता, कैसे विदा होता है, मै बताऊँगा।"

वास्तव मे इन स्थितियो मे भुट्टो का मन और शरीर अलग-अलग हो गये, मन जनता के विश्वास से जुड़ा था, दिमाग अपने सिद्धान्तों और विचारो पर दृढ़ था, और शरीर की भुट्टो को परवाह नही थी व जिया के अत्याचारो की परवाह नही थी, परवाह थी तो सिर्फ इतनी कि यह शरीर जिया के अत्याचारो के सामने झुके नहीं। जिया और भुट्टो का वास्तविक मानसिक द्वन्द्व यही था। जिया को शायद पहली बार इस बात का अहसास हो रहा था, कि शस्त्रो और तमगो मे सुसज्जित सेनापति बिना हथियारो के निहत्थे आदमी से भी हार सकता है, विचार स्वतन्त्र होते है भले आदमी को जेल में ही क्यो न रखा जाये, विचार जेल में बन्द नही हो सकते। इन तमाम स्थितियों की छाप जिया के अचेतन मन पर पड चुकी थी। अचेतन मन जिया को कमजोर बनाता रहा, परन्तु बाह्य तौर पर जिया सेनापति होने के कारण झुकना नहीं चाहते थे। यह स्थिति जिया की बौखलाहट को बढा रही थी, जैसा कि जिया का आरम्भ से स्वभाव था कि पहले कर डालो, बाद मे सोचो। भुट्टो के विचारों को जिया इस्लामिक नियमो के माध्यम से जीतकर,

पाकिस्तानी जनता को इस्लाम धर्म के आदेश बताना चाहते थे। जिया अपने अन्तर्मन के अनुसार कार्य न करके बाह्य और भौतिक रूप से सोचते तथा भुट्टो को यातनाओं के जगल में धकेल देते। जिया चाहते कि भुट्टो को इस कदर तोड़ दो कि झुककर मजबूर होकर जीवन की भीख माँगे।

हथियारबन्द पहरेदार एक छेद से भुट्टो की हर गतिविधि पर आँखें जमाये रखता। उनकी कोठरी में अँधेरा है शौच व पेशाब के लिए भी उनको बाहर नहीं निकलने दिया जाता, कमरे में सामान के नाम पर दो बाल्टियाँ हैं। एक पेशाब व शौच के लिए दूसरी हाथ धोने के लिए। दोनों पर मक्खियाँ भिनभिनाती रहती हैं। सीखचों से भी नीला आकाश दिखाई नहीं देता, कालकोठरी में कोई खिड़की नहीं!

पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी के दुर्बल परन्तु अक्खड़, गुस्सैल व शीर्षस्थ नेता से मिलने के बाद भुट्टो के घनिष्ठ मित्र ने बताया कि वे कंकरीट के फर्श पर चटाई पर लेटे रहते हैं। उनका मनोबल तोड़ने के लिए कुछ गुण्डों ने भी उनकी बेरहमी से पिटाई की। उनकी चिकित्सा का कोई प्रबन्ध नहीं। वह जेल का घटिया खाना खाने पर मजबूर है। मटमैले रंग की शलवार और कमीज पर जेल की सलाखों में आनेवाली चिड़ियों की बीट लगी रहती है, कपड़े न धोये जाते हैं और न बदले जाते हैं। भुट्टो ने अब्दुल हफीज पीरजादा से शिकायत की कि काँच की टूटी हुई ऐश ट्रे का टुकड़ा मेरी आँख में धँस गया था जिसको निकालने में भी वार्डनों ने मदद नहीं की। पीरजादा के अनुसार भुट्टो के दाँतों और मसूड़ों की दवाई भी छीन ली गयी जिसके कारण उनके मुँह पर सूजन आ गई तथा चेहरा स्याह पड़ गया। पीरजादा ने बताया भुट्टो से मिलकर मुझे लगा कि मैं हड्डियों पर चढ़ी एक खाल को देख रहा हूँ। सैनिक शासक उनको जान से मार डालने पर आमादा हो चुके हैं। मैं अपनी जिन्दगी में इतना फूट-फूटकर कभी नहीं रोया जितना भुट्टो को देखकर, मैं कोई बात नहीं कर पाया। वास्तव में कानूनी लड़ाई अब खत्म हो चुकी है, अब लड़ाई दूसरे मोर्चे पर है।

यह दूसरा मोर्चा कौन-सा था? वास्तव में सी० आई० ए० जनरल जिया को, इस बात पर रजामन्द कर चुका था कि अगर भुट्टो को फाँसी

चढाया गया तो वर्तमान शासन को कोई खतरा पैदा नही होगा। यही नही पाकिस्तानी सेना के कुछ अधिकारी भी जिया को भय दिखाकर दबाव डाल रहे थे कि भुट्टो को फाँसी पर चढाया जाय। अगर जिया ने भुट्टो की जान नही ली, तो भुट्टो जिया की जान ले लेंगे। वास्तव मे जिया फिर भी फांसी के तख्ते तक ले जाने मे जल्दी नही करना चाहते थे। एक विश्वस्त समाचार के अनुसार जनरल जिया ने 2 अप्रैल, 1979 को सऊदी अरब के पाकिस्तान स्थित राजदूत को बताया था कि भुट्टो को अभी फांसी देने का कोई इरादा नही है, परन्तु मैंने अभी क्षमा दान देने का भी निर्णय नही लिया है फिर भी भुट्टो की फांसी अभी कुछ सप्ताह के लिए रोकी जायेगी।

इसके बाद अगले 24 घण्टो मे घटनाएँ इतनी तेजी से घटनी शुरू हुई कि कुछ भी अनुमान लगाना कठिन जान पड़ा। पहली घटना इस्लामाबाद मे स्थित अमरीकी राजदूत का वाशिंगटन से प्राप्त संदेश का जनरल जिया को दिया जाना था। अमरीकी राजदूत ने साफ-साफ शब्दों मे कहा, "भुट्टो को फांसी देने के सम्बन्ध मे राष्ट्रपति जिम्मी कार्टर का चाहे जो भी सार्वजनिक वक्तव्य दिखाया या रुख हो, अमरीका हर प्रकार से जिया का समर्थन करता रहेगा। वास्तव में यही भुट्टो को फांसी पर लटकाने का जिया को साफ अमरीकी आदेश था।"

इसके तुरन्त बाद भुट्टो की पत्नी और बेटी बेनजीर से भुट्टो की अन्तिम मुलाकात कराई गयी। 3 अप्रैल, 1979 को खानदानी जल्लाद तारामसीह रावलपिण्डी पहुंच गया। इसी दिन जब जिया ने अमरीकी दूरदर्शन को एक भेंट मे बताया, "मैं अभी तक अपनी पुरानी बात (जिद) पर कायम हूँ। मैं भुट्टो को क्षमादान नही दूगा। क्योकि भुट्टो को पाकिस्तान के प्रमुख न्यायालयों ने दोषी ठहराया है, इसलिए मैं नही समझता कि भुट्टो को माफ करने का कोई औचित्य हो सकता है। अब किसी को कानून के मामले मे दखलंदाजी करने का कोई हक नही है और भुट्टो को क्षमा नही किया जाएगा। इस्लामिक कानून का उदाहरण देते हुए जिया ने कहा कि इस्लाम धर्म मे और न्याय की दृष्टि मे गरीब-अमीर सब बराबर हैं।"

जबकि न्यायाधीशों के निर्णय मे जनरल जिया से प्राणदान की अपील भी की गयी थी।

3 अप्रैल, 1979 की शाम से ही आगे की कार्यवाही की तैयारियाँ शुरू हो गयी थी। पूरे शहर में सशस्त्र सेना की टुकडियो ने गश्त लगाना शुरू कर दिया। वातावरण मे एक खामोशी और तनाव के संकेत पैदा हो गये थे, जबकि सरकारी अधिकारी फांसी की तारीख निश्चित करने से इन्कार कर रहे थे। इस सशय और तनाव के बीच देश-विदेश के नेताओं की क्षमादानों की अपीलो को ठुकराते हुए जिया ने निर्णय ले लिया था।

19वी शताब्दी मे बनी रावलपिण्डी जेल को 27 सैनिक ट्रको से घेर लिया गया। जो दो पत्रकार वहाँ पर उपस्थित थे उनको भी गिरफ्तार कर लिया गया। सरकारी तौर पर तब तक कुछ भी नही बताया जा रहा था। पाकिस्तानी सरकार से सहायता प्राप्त पत्र 'नवाए वक्त' और 'जग' ने फांसी दिये जाने के सम्बन्ध मे विशेष संस्करण निकाले, तब भी काफी सन्देह जनता मे फैला रहा, कोई विश्वास करने को तैयार नही था।

रावलपिण्डी जेल के अधिकारियो व जेल अधीक्षक तथा उनके सहयोगियों ने बताया सुबह चार और पांच के बीच वह भुट्टो की कोठरी में गये, उन्हें नहलाया गया, काफी दिनो से बढ़ी दाढ़ी बनवाई गयी तथा पढ़ने के लिए धार्मिक पुस्तक कुरान पढने की इजाजत दी गयी।

जेल अधीक्षक चौधरी यार मुहम्मद तथा उनके सहायक आधा घण्टे तक भुट्टो की कोठरी में रहे। उसके बाद उन्होंने मौत की सजा का काला वारण्ट पढा। भुट्टो के हाथ पीछे बांध दिये गए तथा उनको फांसी के तख्ते तक ले जाया गया। चार सशस्त्र सैनिक, दाएँ-बाएँ और आगे-पीछे चल रहे थे। फांसी के समय, एक मजिस्ट्रेट तथा मार्शल-ला अधिकारी मौजूद थे।

परन्तु भुट्टो जेल अधीक्षक चौधरी यार मोहम्मद के बताये चार और पांच बजे के समय से पहले ही रात को ढाई बजे फांसी चढ़ा दिये गये थे। पाकिस्तान रेडियो द्वारा 9 घण्टे बाद प्रसारित समाचारों में

रात को ढाई वजे का समय प्रसारित किया गया। समाचारों के अनुसार भुट्टो को आधे घण्टे तक फन्दे मे लटकाये रखा बाद मे यह फन्दा तारामसीह द्वारा काट दिया गया। तारामसीह को, 51 वर्षीय पाकिस्तान के भूत-पूर्व राष्ट्रपति तथा प्रधानमन्त्री को फाँसी पर चढ़ाने के बदले मे मात्र 25 रुपये दिये गये, परन्तु बाद की खबरो मे 10 रुपया मात्र ही घोषित किया गया।

"या खुदा, मुझे माफ करना मैं बेकसूर हूँ।"

भुट्टो के आखिरी शब्द थे। फाँसी से उतार लेने के बाद भुट्टो का पार्थिव शरीर एक विमान द्वारा सिन्ध में भुट्टो के शहर लरकाना भेज दिया गया। तथा लरकाना से 13 किलोमीटर दूर नवदेरो मे दफन कर दिया गया। बेटी बेनजीर और पत्नी नसरत वहाँ नही थी, दोनों अपने निवास स्थान पर सशस्त्र पहरे मे नजरबन्द थी।

भुट्टो की पहली पत्नी अमीर बेगम ने शव देखकर रोते हुए कहा, "तुम पूरी तरह बेकसूर हो।" बाद के बयानो में, उन्होने यह भी बताया कि भुट्टो का मृत चेहरा भी एक फूल की तरह ताजा और मासूम लग रहा था।

जिया ने विश्व जनमत और मित्रता को ताक में रखते हुए, अन्ततः भुट्टो को फाँसी चढा दिया। पेरिस में भुट्टो की फाँसी पर प्रतिक्रिया जाहिर करते समय फ्रासीसी वकील रावर्त वेंदी ने कहा कि यह कानूनी हत्या है। यह एक न्यायिक अपराध है। भुट्टो पर मुकदमा झूठा, फर्जी व नकली था और भुट्टो को दी गयी सजा कानून के विरुद्ध है। श्री वेंदी ने अगस्त मे ब्रिटिश वकील श्री जान मैथिऊ के साथ मिलकर भुट्टो परिवार की ओर से पैरवी की थी।

जनरल जिया ने और जेल अधिकारियों ने आरम्भ से अन्त तक पक्षपातपूर्ण रवैया भी अपनाए रखा। प्रथम समाचारों मे बताया गया कि भुट्टो के साथ अन्य अपराधी मियाँ मुहम्मद अब्बास, गुलाम मुस्तफा, अरशद इकवाल और राणा इस्तिख्यार को भी फांसी दे दी गयी। परन्तु बाद मे पाकिस्तान के सरकारी प्रवक्ता ने बताया कि इन चारो के मामले विचाराधीन हैं। इनको अभी फाँसी पर नहीं लटकाया गया है

क्योंकि इनके ऊपर अभी कई मामलों में मुकदमे चल रहे हैं। तो क्या भुट्टो पर अन्य मामले नहीं थे। और उन्हें प्रथम बलि का बकरा क्यों बनाया गया? क्यों का जवाब है अमरीका के पास या कारण जनरल जिया के पास।

जेल अधीक्षक ने अपने बयानों में कहा, "हम चार और पाँच बजे के बीच भुट्टो की कोठरी में गये और भुट्टो को नहलाया तथा कुरान पढ़ने को दी।" परन्तु पाकिस्तान रेडियो ने नौ घण्टे बाद घोषणा की कि भुट्टो को रात ढाई बजे फाँसी पर चढ़ा दिया गया। नौ घण्टे का समय क्यों लिया गया घोषणा करने के लिए। क्या सोचने-विचारने, सरकारी विभागों से तारतम्य बैठाकर सहयोग करने में नौ घण्टे कम होते हैं। सोच-विचारकर नौ घण्टे घोषणा करने के बाद भी जेल अधिकारियों व पाकिस्तान रेडियो के बयान आपस में क्यों नहीं मिलते। ऐसा लगता है कि जेल अधिकारी अपनी जगह ठीक थे, वह सबकुछ करने के बाद कानूनी दाँव-पेंचों को ध्यान में रखते हुए बयान दे रहे थे। क्योंकि भुट्टो को चोरी छिपे फाँसी देने की बात ध्यान में रखी गई ताकि उपद्रव और दंगे न भड़क उठें। जबकि सी० आई० ए० पहले ही जिया को आश्वस्त करा चुका था कि भुट्टो की फाँसी से पाकिस्तान में कुछ भी होने वाला नहीं है, परन्तु भुट्टो की घोषणा का डर जिया के मन पर बराबर बना हुआ था। इसलिए अधिकारियों पर दबाव था कि इस कार्य को चुपचाप जल्दी-से-जल्दी निपटा दिया जाए। अधिकारियों ने जेल कानून को तोड़ते हुए तुरन्त कदम उठाए। जेल कानून के अनुसार भुट्टो को सुबह सात बजे फाँसी दी जानी चाहिए थी। संयुक्त पंजाब के लिए 1932 में बने कानून में फाँसी के लिए तीन समय निर्देशित हैं। नवम्बर से फरवरी तक के लिए सुबह 8 बजे, मार्च से अप्रैल तक सुबह 7 बजे और मई से अक्टूबर तक सुबह 6 बजे। भुट्टो को फाँसी रावलपिण्डी जेल में दी गयी। रावलपिण्डी पंजाब प्रान्त में आता है, और कानून के अनुसार भुट्टो की फाँसी का समय सुबह 7 बजे होना चाहिए था न कि रात का ढाई बजे।

वास्तव में पाकिस्तान इस खबर को छुपाना चाहता था। जिया पाकिस्तान की जनता को धोखे में रखना चाहते थे। भुट्टो की फाँसी को

लोग अफवाह के तौर लें और हकीकत के रूप में उजागर न हो। इसमें दंगे और उपद्रव कम होंगे, लोग "फांसी दी गई और नही दी गई" को बहस और चर्चा का विषय बनाए रखेंगे। इस सच्चाई को दबाने के लिए जम्माते इस्लामी के नेता और भुट्टो के कट्टर प्रतिद्वन्द्वी मियां तुफैल मुहम्मद ने हाथ बँटाया। मियां तुफैल मुहम्मद भुट्टो को फांसी देने के पक्ष मे थे और जब भुट्टो को फांसी दी जा रही थी तुफैल मुहम्मद इस्लामाबाद मे यह प्रचार कर रहे थे कि अभी जिया ने भुट्टो के विषय मे कोई निर्णय नही लिया है। परन्तु शीघ्र ही मुनासिब निर्णय लिया जायेगा। जबकि मिया तुफैल मोहम्मद को 'मुनासिब फैसले' की जानकारी थी और यह फैसला तुफैल मोहम्मद के विचारो के अनुकूल था। भरसक छुपाने के प्रयासों के बाद भी विदेशी समाचार संस्थाओ के संवाददाताओ द्वारा पूरे ग्लोब पर यह खबर फैल चुकी थी। भुट्टो के पार्थिव शरीर को दफनाए गए भी आधा घण्टा बीत चुका था, पाकिस्तानी जनता विरोध में सड़कों पर आ गई थी, जिया के पुतले बनाकर जलाए जा रहे थे तब पाकिस्तान के रेडियो ने भुट्टो को फांसी दिए जाने की पुष्टि की। भुट्टो की फांसी के बाद मिया तुफैल मोहम्मद भी आन्दोलनों व उपद्रवो की तेजी देखते हुए, जिया से अलग हो गये और ऐसा ही खान वली खान पाकिस्तान नेशनल एलाइन्स के नेता ने भी किया। उन्होंने अपने प्रबल प्रतिद्वन्द्वी भुट्टो को जिया के द्वारा रास्ते से हटवा दिया।

इतना ही नही फांसी देने के बाद भी भुट्टो के सम्पूर्ण चरित्र पर स्याही पोतना जारी रहा है। पाकिस्तान ने दो दिन बाद ही प्रचार करना शुरू कर दिया कि भुट्टो ने जेलरों के साथ जाने से इन्कार कर दिया तथा उन्होने अपनी वसीयत- लिखकर जला दी। पाकिस्तानी प्रचारतन्त्र ने यह भी कहा कि भुट्टो के अन्तिम शब्द, यह नही थे जो छप चुके हैं। वास्तव में भुट्टो को भारी सैनिक सुरक्षा के अन्तर्गत फांसी दी गयी थी। इस कारण भुट्टो के साथ जो व्यवहार हुआ उसका अनुमान ही सब समाचारपत्रों ने लगाया। सही मायनो मे भुट्टो ने अपनी वसीयत मे अपने राष्ट्र और अपनी पार्टी के नाम संदेश छोड़ा था, जो सैनिक शासन ने सुरक्षित रख लिया है, और प्रचार किया जा रहा है कि भुट्टो ने

वसीयत लिखकर स्वयं ही जला दी। वसीयत जलाने की सुविधा किन अधिकारियों ने भुट्टो को दी थी जबकि अन्तिम समय में बेटी बेनजीर द्वारा पिता के मनपसन्द सिगार भी जेल अधिकारियों ने भुट्टो के पास नहीं पहुँचने दिये, और कोठरी से दैनिक प्रयोग का सारा सामान, जिसमें हजामत बनाने का सामान भी था, कि कहीं ब्लेड से शरीर की कोई भी नाजुक नस काटकर आत्महत्या न कर ले, फिर सिगरेट या सिगार या वसीयत जलाने के लिए माचिस या लाइटर भुट्टो के पास कहाँ से आया क्योंकि आत्महत्या तो जलकर भी की जा सकती है। प्रथम समाचारों में बताया गया था कि बेटी बेनजीर के सिगार भुट्टो को नहीं दिए, साधारण तया मृत्युदंड प्राप्त अपराधी को बाह्य सम्बन्धियों के द्वारा दी गयी कोई भी खाने-पीने की वस्तु नहीं दी जाती। बाद के समाचार में कहा गया कि उन्होंने वसीयत लिखकर फाँसी दिये जाने से साढे चार घण्टे पहले जलते सिगार से कागजों में सूराख कर-करके जला दी। एक-एक सूराख करने की जहमत भुट्टो ने क्यों उठायी जबकि वह आसानी से फाडकर एक-एक शब्द के टुकड़े करके फेंक सकते थे। इस वसीयत को सैनिक अधिकारियों ने उन-उन शब्दों को सिगार से जलाया है। यह जानते हुए कि भुट्टो सिगार पीते थे और यह बताया जा सके कि भुट्टो ने स्वयं इनको जलाया है। वसीयत के उन-उन शब्दों पर तानाशाही का जलता सिगार रखा गया था, जो शब्द तानाशाही का विरोध करते थे तथा तानाशाही की पोल खोलते थे।

चार और पांच बजे के बीच भुट्टो की कोठरी में पहुंचने वाले चौधरी यार मोहम्मद के दूसरे बयानों में बताया कि 1.55 पर चौधरी उनकी कोठरी के दरवाजे पर पहुँचे तथा कोठरी से बाहर आने का हुक्म दिया। इस पर भुट्टो ने बाहर आने से इन्कार कर दिया, वार्डन ने भुट्टो की बाँह पकड़कर बाहर लाने की कोशिश की, जिसका भुट्टो ने तीव्र विरोध किया। हड्डियों का ढाँचा बने भुट्टो क्या इस तरह की जोर-जबरदस्ती की ताकत अपने शरीर में रखते थे। इसके बाद दो और अधिकारियों ने चौधरी यार मोहम्मद की मदद की, तथा स्ट्रेचर पर डाल कर भुट्टो को फ तक ले जाया गया। फाँसी का पूर्व घोषित समय ढाई बजे है

या॰र मोहम्मद भुट्टो की कोठरी पर पहुँचे तथा हाथापाई में भी पाँच मिनट लगे होंगे; यानि 2 बज चुके और आधे घन्टे मे ही स्ट्रेचर पर डालकर, वह फाँसी के तख्ते तक पहुँचा कर, फाँसी पर चढा दिये गये। जेल जेल ही होती है। न अस्पताल वहाँ स्ट्रेचर कहाँ से आया और भुट्टो का कोठरी से बाहर न आने की अस्वीकृति के बाद स्ट्रेचर का प्रबन्ध करने के लिए आधा घण्टा समय कम है। तो क्या स्ट्रेचर का प्रबन्ध पहले ही कर लिया गया था कि भुट्टो इन्कार कर देंगे, इसलिए स्ट्रेचर की आवश्यकता पड सकती है। और अगर स्ट्रेचर का प्रबन्ध पहले ही हो चुका था, तो क्या अधिकारी यह जानते थे कि भुट्टो अब जिन्दा नही हैं और स्ट्रेचर पर मृत भुट्टो को फांसी के तख्ते तक ले जाकर फाँसी देने का नाटक किया था। अपनी शान को बनाये रखने के लिए। अगर फांसी के फन्दे पहले तैयार किये गये होते तो पाँच होते और 'तथाकथित कसूरी हत्याकाड' के सभी अभियुक्तों को एक साथ फाँसी चढ़ाया गया होता और इसके लिए जेल कानून भी न तोड़ा गया होता, सभी को प्रातः सात बजे फांसी पर लटकाया जाता।

तो क्या भुट्टो पहले ही मर चुके थे। अगर हाँ तो क्यों? इसका कारण था भुट्टो की पिटाई। वसीयतनामा वसीयतनामा नही था और जिया के सैनिकों ने माफीनामा लिखने के लिये भुट्टो पर दवाव डाला था और न लिखने पर पिटाई की धमकी दी गयी। भुट्टो ने लिखा, जो वह चाहते थे अपनी पार्टी और अपने राष्ट्र की जनता के नाम सन्देश जिसको पढकर सैनिक तानाशाह बौखला गये। इस वसीयतनामे या माफीनामे को जलाकर अपने लिए उपयोगी बनाकर सुरक्षित रख लिया तथा भुट्टो की पिटाई का दौर चला, उस पिटाई मे या तो उनकी जान ही चली गयी या वे बेहोश थे; जिसकी सूचना जेल अधीक्षक चौधरी यार मोहम्मद को दी गयी। उन्होंने बेहोश या मृत भुट्टो को स्ट्रेचर पर डालकर फांसी के तख्ते तक पहुँचा दिया और फाँसी का ड्रामा पूरा किया गया, मजिस्ट्रेट डाक्टर तारा मसीह व जेल के अधिकारियों ने मिलकर। अमीर भुट्टो ने रोते हुए जो कहा था, "कि उनका चेहरा एक ताजे और मासूम फूल की तरह लग रहा था।" यह अमीर भुट्टो का दृष्टि भ्रम नही था, बल्कि फांसी लगने के बाद

जो चेहरा विकृत होता है, उस विकृति का कोई चिह्न उनके चेहरे पर नहीं था।

"याह् खुदा मेरी मदद कर, मैं बेकसूर हूँ" इन शब्दों को भी पाकिस्तान प्रचार तन्त्र ने बदला है। फाँसी पर चढ़ते हुए जो मानसिक रूप से फाँसी के लिए तैयार थे। मदद की बात क्यों करते। पिटाई, जुल्मों और अत्याचारों से विक्षिप्त भुट्टो खुदा से मदद माँग रहे थे। परन्तु पाकिस्तान के सैनिक शासकों ने इस वाक्य को, "इस प्रकार प्रचारित किया, याह् खुदा। मुझे माफ करना, मैं बेकसूर हूँ।" क्योंकि अन्तिम समय में खुदा को याद करने का अर्थ खुदा अजीज और खुदा परस्त माना जाता है। उधर ब्रिटेन में अमीर भुट्टो के बयान के अनुसार कि भुट्टो शहीद हुए हैं" और पाकिस्तान की जनता पर महत्पूर्ण प्रभाव डाला। सैनिक शासक नहीं चाहते थे, इस तरह की छवि मरने के बाद भी भुट्टो की जनता में बनी रहे। क्योंकि वह पहले ही, भुट्टो पर शराबी और काफिर होने का दोष लगा चुके थे। और जनता यह सोचकर अधिक उग्रता से भड़क सकती थी कि एक खुदा के बन्दे को फाँसी दे दी गयी, इसलिए इस वाक्य को फिर बदल कर "याह् खुदा मुझे माफ करना" कर दिया जिसका अर्थ होता है कि भुट्टो कसूरवार थे, और परवरदिगार से माफी की प्रार्थना कर रहे थे। वास्तव में जिया इस तरह की माफी की अपील खुदा से न करके अपने आप से कराकर, अपनी हीन भावना में से उपजे अहम को सन्तुष्ट करना चाहते थे। जिसको सैनिकों और शासन अधिकारियों ने कई बार हेर-फेर करके जिया और जनता के सामने पेश कर दिया। जिया भले ही अपने अहम को सन्तुष्ट कर पाये हों, परन्तु जनता को दाल में काला नजर आया—तारा मसीह जो सैनिक सुरक्षा में रह रहे हैं, सैनिक अधिकारियों ने उससे भी बयान दिलवाया। तारा मसीह ने एकदम अलग बात कही यह बताते हुए कि भुट्टो को स्ट्रेचर पर लाया गया। तारा मसीह ने कहा कि भुट्टो के अन्तिम शब्द थे, "जल्दी खत्म करो"। यह जानते हुए कि तारा मसीह पर भी सैनिक शासन का दबाव होगा। इस दबाव के कारण तारा मसीह भी भुट्टो के विषय में झूठ बोल सकते हैं। और यह मान लिया जाए कि "खत्म करो" अन्तिम शब्द थे। तब भी भुट्टो की मानसिक रूप से तैयार

मन स्थिति का पता चलता है, नाकि बुजदिल, कायर और डरपोक व्यक्ति; क्योंकि भुट्टो काफी दिनों से फाँसी का इन्तजार कर रहे थे, तब वह चाहते थे कि जो जल्द हो। तब फिर स्ट्रेचर पर क्यों लाया गया जबकि भुट्टो कायर व बुजदिल नही थे और फांसी से नहीं डर रहे थे। फांसी से पहले भुट्टो की डाक्टरी जाँच की गयी थी। इसका कहीं भी जिक्र नही किया, न जेल अधिकारियों ने और ना ही सैनिक शासन के प्रवक्ताओं ने शायद इसकी जरूरत नही समझी।

इन्ही सब मामलों और स्थितियों को देखते हुए, एक मजदूर नेता आफताब रब्बानी ने लोहार उच्च न्यायालय मे एक याचिका दायर करने माँग की कि भुट्टो के शरीर की जाच कराई जानी चाहिए, क्योंकि भुट्टो की मौत फांसी से न होकर दबाब के जुल्म और यातना से हुई है। इस तरह से यह एक हत्या का मामला बनता है। मजदूर नेता ने लाहौर उच्च न्यायालय के न्ययाधीश शफी-उर-रहमान से प्रार्थना की कि उच्च अधिकारियों व पंजाब पुलिस के इन्स्पेक्टर जनरल, जेल अधीक्षक, भुट्टो को मृत घोषित करने वाले चिकित्सक, ड्यूटी पर तैनात मजिस्ट्रेट के साथ तारा मसीह को भी अपराधी ठहराया जाए तथा एक जाँच आयोग बैठाया जाय। यह माँग तानाशाही के उन्ही अधिकारियों से की गयी है जिन्होंने भुट्टो को फांसी चढाने का निर्णय लिया था, जाँच मे भी वे वही करेंगे, जो उनके अनुकूल होगा क्योंकि जाँच अधिकारी भी तो जिया और तानशाही के समर्थक होगे, परन्तु ऐसी स्थिति में मजदूर नेता की माँग को साहसपूर्ण कदम उठाना ही कहा जाएगा। जिया के इस कुकर्म का विरोध मार्शल ला लागू होने पर भी कुछ कम नही हुआ, जबकि पी० पी० पी० के शीर्ष नेता जेलों मे बन्द हैं। जिया ने पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी मे विभाजन कराने की चालें चलनी शुरू कर दी है। 3 अप्रैल 1979 को भुट्टो के सिन्ध स्थित मकानो पर छापें डलवाए थे। जो अमेरिका के निर्देश से डाल गये थे। अमेरिका का उद्देश्य वह कागजात हासिल करना था, जिन कागजो मे सी० आई० ए० की गतिविधियों को भुट्टो तब कार्यान्वित कर रहे थे। जब भुट्टो अमेरिका समर्थक थे। क्योंकि उन कागजों से अमेरिका की वे साजिशें उजागर हो सकती थी जिनको

अमेरिका नही चाहता था कि उजागर हों। इस कारण वह कागजात
हासिल करने थे। कही ये कागजात बेनजीर भुट्टो या पत्नी नसरत भुट्टो
के हाथ न लग जाए। इन कागजातो को हासिल करके, सैनिक अधि-
कारियों ने बताया था कि महत्त्वपूर्ण सुरक्षा सम्बन्धी कागजात हाथ लगे
हैं जिनके कारण पाकिस्तान की सुरक्षा को खतरा बना हुआ था। यह
खतरा पाकिस्तान को न होकर अमेरिका को था।

उन्ही कागजातो को लेकर जिया ने एक नया मोड़ लिया है।
पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी के वरिष्ठ नेता मे सन्देह का बीज डालकर पी०
पी० पी० के टुकडे-टुकड़े कर दिये जाएँ !

सरकारी और सरकार समर्थक समाचारपत्र आजकल एक अभियान
पर कार्य कर रहे है, यह अभियान 'कागजात दिखाओ' अभियान है।
जिया समर्थक चुपके-चुपके जाली कागजात तैयार कर रहे है। समाचार-
पत्र यह भी छाप रहे हैं, कि 3 अप्रैल 1979 को बेनजीर भुट्टो और नसरत
भुट्टो से अन्तिम मुलाकात मे भुट्टो ने कहा था, "पी० पी० पी० के शीर्ष
नेता मुझे जिन्दा नही देखना चाहते वह मुझे मृत अवस्था में चाहते
हैं।" चचेरे भाई मुमताज अली भुट्टो और हफीज पीरजादा जैसे घनिष्ठ
सगे-सम्बन्धियों को इसमे घसीटा जा रहा है। मुमताज को भुट्टो का पारि-
वारिक शत्रु बताकर, नसरत व बेनजीर भुट्टो के मन मे शंका के बीज डाले
जा रहे हैं। ताकि पी० पी० पी० की एकता नष्ट हो और पार्टी टुकड़ो-
टुकड़ों मे विभक्त हो जाए। समाचार-जगत मे इस तरह सरकारी समा-
चारों को छापने और समाचारो को सैन्सर करने का काम 'जंग' के
कार्यालय में होता है 'जंग' सम्पादक रोज पार्टियाँ करते हैं और देशी-
विदेशी पत्रकारों को बुलाकर बातचीत करते हैं तथा योजना बनाते हैं।
परन्तु ऊपर की खबर 'दी मानिंग न्यूज आफ कराची' ने छापी थी।
'दी मानिंग न्यूज आफ कराची' ने यह भी लिखा कि भुट्टो ने नसरत और
बेनजीर से यह भी कहा, "उन्होने अपने सारे पूर्व बयान वापिस ले लिए
हैं उनमे कोई दम नही है।"

वास्तव मे भुट्टो की फांसी का दु:ख सभी राष्ट्रों को हुआ। चीन ने
सऊदी अरब की तरह आर्थिक सहायता तक बन्द करने की चेतावनी दी

थी !

अमेरिका ने तीसरे राष्ट्र के शीर्षस्थ नेता, मुस्लिम राष्ट्रों की एकता को सूत्र में बांधने वाले भुट्टो, अपने सहयोगी और प्रतिद्वन्द्वी भुट्टो को फांसी चढ़ाने का बढ़ावा जिया को देने तथा सैनिक शासन का समर्थन करते रहने का वादा करने वाले अमेरिका ने भुट्टो की मृत्यु के दो दिन बाद ही आर्थिक सहायता बन्द कर दी। यह कहते हुए कि पाकिस्तान अणुबम का निर्माण करना चाहता है, और वह शान्ति के उपयोग के लिए नही है। इससे जिया बीच मे ही लटक गये हैं।

आज भारत और पाकिस्तान के सम्बन्ध अणुबम योजना को लेकर फिर खराब हो रहे हैं। एक दूसरे को डराया जा रहा है और कहा जा रहा है कि पाकिस्तान शान्ति के लिए अणु उर्जा का प्रयोग नही कर रहा, इससे उल्टा पाकिस्तान भारत के प्रति यही आरोप लगाता है। अमेरिका है कि किसी को भी यूरेनियम देने को तैयार नही। मुस्लिम देशों ने अगर तेल को हथियार की तरह मे इस्तेमाल किया तो आज मुस्लिम राष्ट्रों के लिए अमेरिका ने यूरेनियम को हथियार बना लिया। अगर देता है तो मालूम ही नही होगा किन शर्तों मे राष्ट्र को झुकाया गया है। वह राष्ट्र पाकिस्तान हो या भारत इससे कोई अन्तर नही आता। यूरेनियम मिलने की आशा तथा भारत की अमेरिका समर्थक नीतियो के कारण भारत ने पाकिस्तान से भुट्टो को प्राणदान देने की अपील तक नहीं की है। इसका एक और कारण है भारत की जनता के सामने पडोसी राष्ट्रो का हौवा खड़ा रखना, नेताओं का परम कर्त्तव्य हो गया है। अन्धराष्ट्रवाद के नाम पर जनता की भावना का उपयोग मात्र वोट प्राप्त करने के लिए होता है। जहाँ हम प्राणदान देने की अपील को यह कहकर टाल सकते हैं कि "यह पाकिस्तान का आन्तरिक मामला है।" तथा "हम परमाणु ऊर्जा का प्रयोग शान्ति कार्यों के लिए कर रहे है!" परन्तु यही बात जब पाकिस्तान कहता है तब न तो हमारे राजनेता इस पर विश्वास करते हैं, तथा न ही जनता। हम परमाणु ऊर्जा योजना को भी उस राष्ट्र का आन्तरिक मामला नही मानते! एक दूसरे राष्ट्र को प्रतिस्पर्धा तथा शत्रुता की दृष्टि से देखने का विचार छोड़कर आपसी सहयोग एकता, और मानव-कल्याण

की प्रगति की भावना से कार्य करना चाहिए। मानव कल्याण जीवन-मूल्य जीवन-दान देना राष्ट्रों की परिधि के अन्तर्गत नहीं आते। हमें किसी का जीवन लेने का कोई अधिकार नहीं है, न्यायपालिका को भी नहीं। जैसा कि भूतपूर्व राष्ट्रपति वी० वी० गिरि ने भुट्टो की मृत्यु के बाद कहा था कि किसी भी राष्ट्र की न्यायपालिका में मृत्यु-दण्ड नहीं होना चाहिए। वह एमिनेस्टी इण्टरनेशनल के समर्थक दीख पड़ते हैं ! ऐमिनेस्टी इन्टर-नेशनल के प्रयासों से, विभिन्न राष्ट्रों में मृत्यु-दण्ड पर रोक लगायी गयी थी। भारत और पाक में भी प्रयास किये गये थे। तीसरी दुनिया के राष्ट्र उसके प्रयासों और सुझावों से सहमत नहीं हुए तथा मृत्यु-दण्ड को जारी रखा। प्रगतिशील राष्ट्र अपना अस्तित्व ही नहीं, यह प्रयास भी महा-शक्तियों के दबाव के कारण ही विफल रहे।

ईरान ने भी भुट्टो के मृत्युदण्ड का विरोध किया था तथा मृत्यु के बाद गम्भीर शोक प्रकट किया। यह न देखते हुए कि ईरान अपने नेताओं के साथ क्या कर रहा है। अगर यह वास्तविकता है कि अमेरिकी भुट्टो को फाँसी तक ले गये, तो इसका उत्तर सोवियत संघ ने दूसरे ही दिन अमेरिकी समर्थक भूतपूर्व प्रधान मंत्री हुवैदा, जनरल जहेदी व अन्य चार अधिकारियों को गोली से उड़वा दिया। भुट्टो पर मुकदमे का नाटक भी हुआ परन्तु ईरान में सुनवाई भी नहीं हुई। इस मामले में सोवियत संघ अधिक ही कठोर हुआ, जबकि अमेरिका के इशारों पर चलने वाले ईरान के शहंशाह रजा पहलवी ने समाजवादी विचार रखने वाली पूरी एक पीढ़ी को ही सड़कों और गलियों में गोलियों से भुनवा डाला था। दोनों महाशक्तियाँ तीसरी दुनिया में अपने निहित स्वार्थ पूरे करती हुई, एक-दूसरे से बदला लेती ही रहती हैं !

द० अफ्रीका की गोरी सरकार ने युवा क्रान्तिकारी तथा राष्ट्रवादी 23 वर्षीय सोलोमन माहलंगु को 6 अप्रैल, 1979 को फाँसी दे दी। जबकि इस फाँसी के विरोध में भी विश्व के सभी शान्तिप्रिय और मुक्त-कामी राष्ट्रों ने आवाज ही नहीं उठाई, विरोध भी किया था। संयुक्त राष्ट्रसंघ के महासचिव कुर्त वाल्डहाइम ने द० अफ्रीका के राष्ट्रपति जान वर्स्टर के पास तीन बार क्षमादान की अपील की थी। श्री वाल्डहाइम

ने जिया से भी कई वार प्राणदान की अपील की थी।

ऐसा नहीं भारत में इस तरह का बर्ताव राजनैतिक विरोधियों से नहीं होता, आपात्कालीन स्थिति में किसान आन्दोलन व नक्सल आन्दोलन से जुडे, किस्ता गौड और भूमैया को फांसी पर चढ़ाया दिया गया था। भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री फ़खरुद्दीन अली अहमद ने जीवनदान की सभी अपीलों को ठुकरा दिया था। जबकि अपीलों को ध्यान में रखते हुए शमीम रहमानी को कुछ दिन पहले जीवनदान देकर क्षमा कर दिया था, शमीम रहमानी पर हत्या का आरोप था।

०-०